भोर

कक्षा 8 खातिर भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक

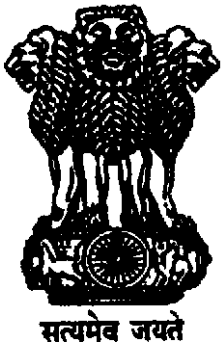

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार द्वारा विकसित

बिहार स्टेट टेक्सटबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक

मानव संसाधान विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से
सम्पूर्ण बिहार के लिए निर्मित

(©) बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण- 2011-12

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन,
बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित

दिशा–बोध–सह–पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

* श्री राजेश भूषण
  राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
* हसन वारिस
  निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. पटना
* श्री राम शरणागत सिंह
  संयुक्त निदेशक–सह–विशेष कार्यक्रम पदाधिकारी, वी.टी.बी.सी., पटना
* श्री रामसागर सिंह
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
* श्री अमित कुमार
  सहायक, निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, बिहार
* डॉ. सैयद अब्दुल मोइन
  विभागाध्यक्ष, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
* डॉ. श्वेता सांडिल्य
  शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
* डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
  प्राचार्य, टी.आई.एच.एस.,पटना

समन्वयक

* डॉ. अर्चना,
  व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

आभार

यूनिसेफ, बिहार

भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक लेखक समूह

1. डॉ. महामाया प्रसाद विनोद
   से.नि., प्राचार्य, +2 अमनौर 30 मा.वि. अमनौर, सारण।

2. डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना
   राज इन्टर कॉलेज, बेतिया, प. चम्पारण।

3. डॉ. गुरुचरण सिंह
   (हिन्दी विभाग), एस.पी. जैन कॉलेज, सासाराम।

4. डॉ. उदय प्रताप सिंह 'तपन भाई'
   + 2 मॉडल हाई स्कूल, आरा, भोजपुर

5. डॉ. रवीन्द्र कुमार शाहाबादी
   भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

6. श्री संजय कुमार,
   स.शि., प्रा.वि., लहेजी घुमनगर, बसंतपुर, सीवान

समीक्षक –

डॉ. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय
अध्यक्ष
भोजपुरी विभाग
वीर कुँवर सिह विश्वविद्यालय
आरा

विषय-सूची

क्र०	शीर्षक		लेखक	पृष्ठ सं०
	भोर की बात		पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	1
1.	देशगीत	(कविता)	रमेश चन्द्र झा	4
2.	सांस्कृतिक पर्व दशहरा	(निबंध)	पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	8
3.	ग्राम सेविका	(कहानी–बाएन)	हरिमोहन झा	15
4.	पद	(संत काव्य)	धरनी दास	24
5.	मित के पाती	(यात्रा–वृत्तांत)	पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	28
6.	थारू जनजाति के लोक जीवन	(निबंध)	सिपाही सिंह 'श्रीमंत'	35
7.	नाचे बुन्नी सावन में	(कविता)	रिपुञ्जय निशान्त	44
8.	वन्देमातरम्	(निबंध)	पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय	49
9.	लोक कलाकार भिखारी ठाकुर	(निबंध)	पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	57
10.	नया समाज	(कविता)	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	63
11.	गछउँधी	(एकांकी)	पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	68
12.	गुरु–दक्षिणा	(कहानी)	पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह	78
13.	किसान के बेटा	(कविता)	बिजेन्द्र अनिल	85
14.	अली मियाँ	(कहानी)	डॉ. प्रभुनाथ सिंह	89
15.	शहीदे आजम भगत सिंह	(जीवनी)	पाठ्य–पुस्तक विकास समिति	97

व्याकरण भाग

1.	वाक्य	104
2.	पर्यायवाची	105
3.	विलोम	106
4.	श्रुतिसम भिन्नार्थक	107
5.	अनेकार्थक	108
6.	अनेक शब्दों के बदले एक शब्द	109

पढ़ऽ–गुनऽ

1.	लोकोक्तियाँ		112
2.	भोजपुरी के लिपि : कैथी		115
3.	रेल के डिब्बा	हरिकिशोर पाण्डेय	117
4.	अवढ़रदानी बाबू साहब	शिवपूजन सहाय	121
5.	लोकगीत गाई मन हरखाई	चम्पादेवी	124
	समेकित शब्द भंडार		129

'भोर' के बात

मातृभाषा कवनो विषय के ज्ञान प्राप्ति के सबसे नीमन आ सुगम साधन बा। कवनो चीज के जानकारी कवनो दोसर भाषा का माध्यम से ग्रहण कइल तरहत्थी पर दूब जमवला जइसन होला। पहिले ओकरा मने-मने आपन मातृभाषा सोंचल जाला तब समझल जाला। मातृभाषा का माध्यम से कवनो चीज सीधे समझ में आ जा ला। शिक्षा के गुणात्मक विकास में मातृभाषा के महत्त्वपूर्ण योगदान होला। बीस करोड़ लोगन के भाषा भोजपुरी के समृद्ध शब्द-भंडार आ भरल-पूरल साहित्य संसार बा। भोजपुरी भाषा-भाषी विद्यार्थियन ला मातृभाषा का रूप में भोजपुरी के पठन-पाठन समय के पुकार रहे। एही सन्दर्भ में भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक के निर्माण कार्य में हाथ लगावल गइल। भोजपुरी पढ़े वाला विद्यार्थियन के पाठ्य-पुस्तक के माध्यम से ज्ञान देवे के शुरुआत वर्ग 6 में 'दीया-बाती' से भइल। वर्ग 7 में 'अँजोर' उनन्हन के मातृभाषा के ज्ञान आउर विकसित कइलस। अब 'भोर' एक डेग आगे बढ़ के ज्ञानार्जन का संगे-संगे भाषिक क्षमता बढ़ावे में आपन सहयोग करी। वर्ग 7 के 'अँजोर' आ वर्ग 9 के 'पान-फूल-1' के ध्यान में राख के वर्ग 8 के विद्यार्थियन के बौद्धिक आ भाषिक क्षमता के संगे उपयोगिता के ध्यान में राख के एह पुस्तक में पाठन के चयन कइल गइल बा। कुल्हि पाठ के चयन एह दृष्टिकोण से भइल बा कि ई विद्यार्थियन के भाषिक क्षमता बढ़ावे, मानसिक विकास का ओर अग्रसर करे, देश-दुनिया आ समाज से संबंध जोड़ के अधिका-से-अधिका जानकारी प्रदान करे। एह में इहो उद्देश्य के ख्याल राखल गइल बा कि चिन्तन गतिशील होखे, बुद्धि के विकास होखे आ पढ़े-लिखे के प्रवृत्ति जागे। पाठन के चयन में परिवेश आ रुचि के विशेष ध्यान राखल गइल बा।

'भोर' में कुल पन्द्रह गो पाठ बा जवना में दस-गो गद्य पाठ आ पाँच गो पद्य पाठ संकलित बा। गद्य पाठ में कहानी, निबन्ध, पत्र शैली में यात्रा-वर्णन, एकांकी आदि विधन के सहेजल बा जबकि पद्य पाठ में संत काव्य, ऋतु वर्णन, देशभक्ति, राष्ट्रीयता, भारतीय

जनजीवन से संबंधित पाठन के समावेश बा। भाषा के यथासंभव सरल आ बोधगम्य बनावे के हर संभव प्रयास कइल गइल बा। हरेक पाठ का अंत में शब्द भंडार का माध्यम से कठिन शब्दन के अर्थ विद्यार्थियन के सुविधा ला दिहल बा। भाषा-कौशल पढ़े-समझे में गति लावे आ चिन्तन के अवसर के ध्यान में राख के वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरात्मक, दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नन का संगे पाठ से बाहर के ज्ञान अर्जित करे ला आ रचनात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न करेला परियोजना कार्य दिहल गइल बा। पर्याय, विलोम, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दन का अलावे वाक्य भेद, संबंधी प्रश्नन का माध्यम से व्याकरणीय ज्ञानार्जन के प्रयास बा।

पुस्तक के एक अंश में 'पढ़ऽ-गुनऽ' का माध्यम से विद्यार्थियन के मन लगावे ला कुछ अउरी सरल आ रोचक सामग्री दिहल बा जवना में कहानी, लघुकथा, लोकोक्ति आदि सम्मिलित बा। पद्य पाठन में रमेश झा के 'देशगीत' जहवाँ भारत के भौगोलिक, प्राकृतिक आ सांस्कृतिक सौन्दर्य के दर्शन करावता उहँवे संत काव्य में धरनी दास गुरु आ ईश्वर के प्रति समान रूप से श्रद्धा के शिक्षा दे ताड़ें। रिपुञ्जय निशांत के 'नाचे बुन्नी सावन में' में गाँव के चिरई-चुरुंगन, खेत-खरिहान, विहँसत धरती आ बरसत मेघ के इन्द्र धनुषी छटा देखल जा ता। बिजेन्द्र अनिल के 'किसान के बेटा' में जेठ के दुपहरिया में पसीजत पसेना आ माघ के पाला में कंप-कंपात शरीर के चित्रण भारतीय किसान के जीवन-शैली के मार्मिक चित्र प्रस्तुत कइल गइल बा। गद्य पाठन में 'सांस्कृतिक पर्व दशहरा' अनाचार पर सदाचार के विजय के कहानी कहत सुख शांति के संदेश दे रहल बा। नारी जागरण पर आधारित मैथिली कथाकार हरिमोहन झा के 'ग्राम सेविका' गाँवन में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता के विरुद्ध एगो बुलंद आवाज बन के सामाजिक बन्धन भंग क के नारी के अवला से सबला बनावे के प्रयास बा। 'केसरिया के बौद्ध स्तूप' जहाँ पत्र शैली के ज्ञान करावता उहँवें बिहार के भोजपुरी क्षेत्र के एगो प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल से परिचय करा रहल बा। सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के 'थारू जनजाति के लोक जीवन' में बिहार के एगो पिछड़ल जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक रीति-रिवाज आ परंपरा के रोचक वर्णन बा। 'वन्देमातरम्'

निबंध भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के एगो पृष्ठ खोलत राष्ट्रीय भाव, राष्ट्रीय एकता, पौरुष आ शक्ति के जगा रहल बा। 'लोक कलाकार भिखारी ठाकुर' जीवनी विधा में भोजपुरी के शेक्सपीयर कहावे वाला नाटककार के जीवन के झलक देला जे अपना नाटकन का माध्यम से समाज में फइलल तमाम कुरीतियन पर हथौड़ा चलइले रहले। 'गुरुदक्षिणा' में पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह बेरोजगारी के कारण चारित्रिक अवमूल्यन आ गुरु के प्रभाव से सुधार के वर्णन कइले बाड़ें। पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति 'गछऊँधी' एकांकी का माध्यम से एके संगे एकांकी विधा से भी परिचय करावे ला आ छुआछूत, बाल-बियाह, जनसंख्या नियंत्रण, अशिक्षा कुल्हि कुरीतियन के जड़ से उखाड़े के संकल्प ले रहल बा।

विद्यार्थियन के मानसिक, भाषिक आ बौद्धिक क्षमता के विकास, चारित्रिक आ मानवीय सुसंस्कार का संगे राष्ट्रीयता का भाव से लैस कइल शिक्षा के मूल उद्देश्य होला। एतने ना सामाजिकता, देश के अखंडता के प्रति श्रद्धा, पंथ-निरपेक्षता, सद्भाव के दिशा में अग्रसर कइल भी आवश्यक बा। एह से 'भोर' के पाठन के चयन में ई कुल्हि बिन्दु पर सम्यक् दृष्टि राखल गइल बा। 'भोर' के सुन्दर आ आकर्षक बनावे के हर संभव प्रयास कइल गइल बा, जे से छात्र आ शिक्षक दूनो के आकर्षित करे। कवनो कमी-वेशी होखे त शिक्षक, अभिभावक आ छात्र सभन से अपेक्षा बा कि आपन बहुमूल्य सुझाव दीहीं। हमनी कुल्हि उपयोगी सुझाव के सहर्ष स्वीकारब।

भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक के विकास में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका के सह संपादक डॉ. जीतेन्द्र वर्मा के सहयोग ला हमनी उनकर आभारी बानी।

लेखक समूह

पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

अध्याय– एक

- रमेश चन्द्र झा -

रमेश चन्द्र झा के जन्म 8 मई, 1928 ई. के बिहार के पूर्वी चम्पारण जिला के फुलबरिया (सुगौली) में भइल रहे। 1942 के अगस्त क्रांति में उहाँ का बढ़-चढ़ के भाग ले ले रहीं। भोजपुरी, मैथिली आ हिन्दी तीनों भाषा के पत्र-पत्रिकन में उनकर रचना प्रकाशित बा। उपन्यास, जीवनी, बाल-साहित्य, कविता आदि विविध विधन में उनकर लगभग पचास पुस्तक प्रकाशित बा। भोजपुरी में उनकर ऐतिहासिक उपन्यास 'सूरमा सगुन विचारे ना' अँजोर पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित भइल रहे।

विषय प्रवेश :

'देश गीत' में भारत के भौगोलिक, प्राकृतिक आ सांस्कृतिक सौन्दर्य के सुन्दर चित्रण बा। भारत के लोग के अपना देश पर गर्व बा एकर झलक एह कविता में मिलेला।

देश गीत

हिन्दुस्तान जनम धरती हम बासी हिन्दुस्तान के ।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के ।।

हमरा माथे मुकुट हिमालय, थाती घर संसार के ।
हरदम हहरत हिया जुड़ावे सागर पाँव पखार के ।।
देश-देश के लोग निरेखे, आपन पाँव पखार के ।।

आज देश के हर पुकार पर बाजी हमरा जान के ।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के ।।

जहाँ नेह के नदी बहत बा, गली-गली हर गाँव में ।
प्रीत-रीत के बंशी बाजे, कहीं कदम का छाँव में ।।
आँगन में गौरैया नाचे, बिछुवा बान्हे पाँव में ।।

जहाँ किरिनियाँ उठ के पहिले खोले आँख बिहान के ।
आसमान पर लहरत बा, झंडा हमरा बलिदान के ।।

खेतन में सीता उपजेली, जहाँ जनक का देश में ।
लोग जहाँ सोना जइसन, गौतम गाँधी का भेष में ।।
आपन कीमत बा हमनी के, चरखा देश-बिदेश में ।।

आपन सब कुछ खोके हम, बारब दियरा निरमान के ।।
हिन्दुस्तान जनम धरती हम बासी हिन्दुस्तान के ।।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के ।।

शब्द भंडार-

थाती- धरोहर

हहरत- नदी के पानी के आवाज

जुरावल- भावल, अच्छा लागल

पखार के- धो के

निरेखे- देखे

बाजी- दाव

नेह- प्रेम

प्रीत- प्रेम

चरखा- सूत काते के एगो यंत्र

बारब- जरायव

दियरा- दिया

बलिदान- कुर्बान।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. कवि रमेश चन्द्र झा के जन्म कवना ईस्वी में भइल रहे ?

(क) 1928 (ख) 1942

(ग) 1934 (घ) 1948

2. देशगीत कविता में हिन्दुस्तान के मुकुट केकरा के कहल बा ?

(क) पहाड़ (ख) संसार

(ग) हिमालय (घ) दिल्ली

3. आसमान पर कवना चीज के झंडा लहरत बा ?

(क) कपड़ा (ख) कागज

(ग) बिहान (घ) बलिदान

4. कविता कवना चीज के दियरी बारे के चाहत बा ?

(क) बलिदान (ख) निरमान

(ग) किरिण (घ) अरमान

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. बलिदान के झंडा कहवाँ फहरत बा ?
6. नेह के नदी कहवाँ बहत बा ?
7. कदम के छाँव में कवना चीज के वंशी बाजत बा ?
8. हमनी के जन्म धरती कहवाँ बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

9. हिन्दुस्तान के प्रशंसा में कवि का-का कह रहल बाड़ें ?
10. हिन्दुस्तान पर हमनी के काहे गर्व बा ?

भाषा ज्ञान-

11. नदी के पर्यायवायी शब्द होला <u>सरिता</u>, <u>तरंगिनी</u>

नीचे दिहल शब्दन के दू-दू गो पर्यायवाची शब्द लिखीं।

धरती, आसमान, घर, सोना, सागर

परियोजना कार्य-

1. देश के वर्णन वाली कवनो दोसर कविता लिखीं।
2. सीता जी के जनम कइसे भइल रहे एकर कथा लिखीं।

अध्याय– दू

'सांस्कृतिक पर्व दशहरा' के निर्माण पाठ्य–पुस्तक विकास समिति द्वारा कइल गइल ह।

विषय प्रवेश :

एह पाठ में दशहरा के धार्मिक, ऐतिहासिक कथा का संगे अनाचार पर सदाचार के विजय, सुख–शांति के संदेश बा।

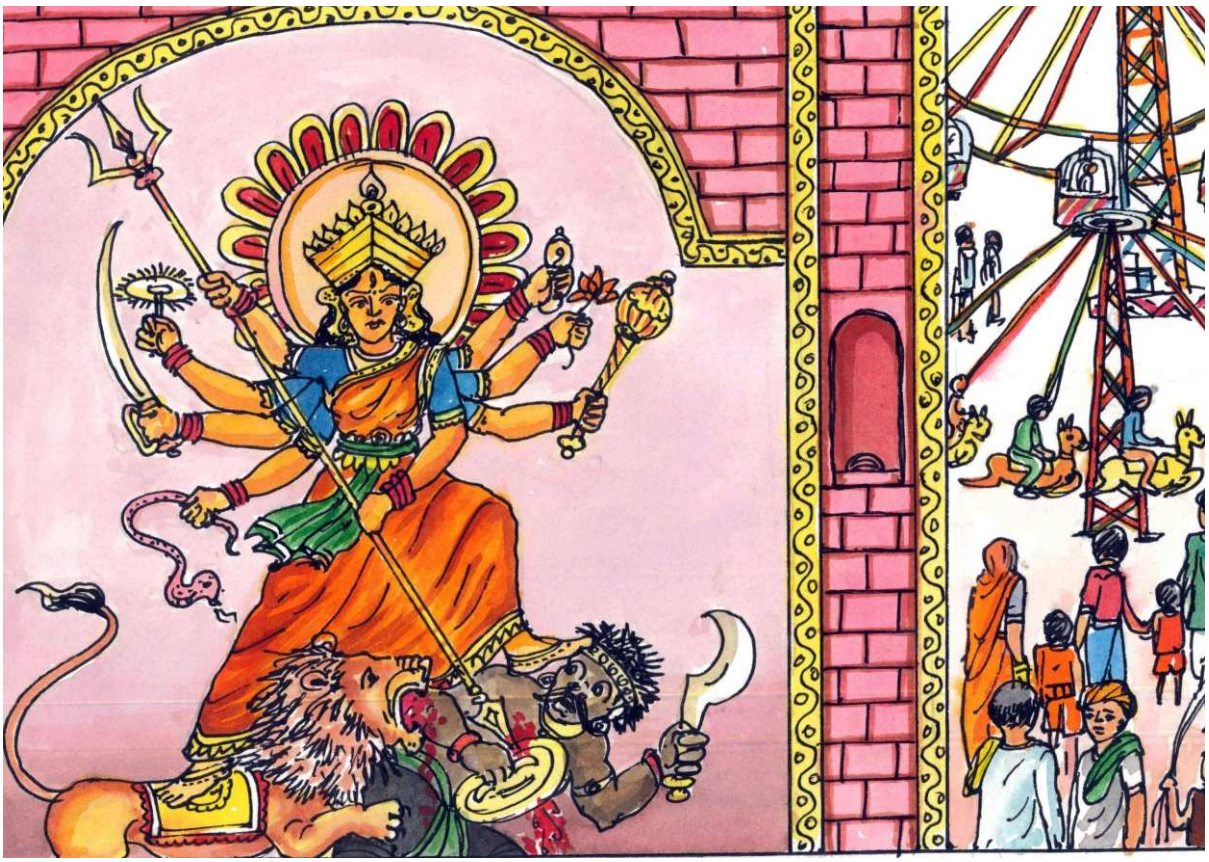

सांस्कृतिक पर्व दहशरा

दशहरा के नाम सुनते मन में आनन्द के सागर उमड़े लागे ला। एक ओर शक्ति के देवी दुर्गा के पूजा के मंत्र गूंजत रहेला त दूसर ओर रामलीला, नाटक, संगीत के सांस्कृतिक

वातावरण देखे के मिले ला। एह पर्व के धार्मिक महत्व त बड़ले बा बाकिर सांस्कृतिक महत्वो कम नइखे। नगर से लेके गाँव आ टोला-टपरी में सांस्कृतिक जागरण आ जाला। जगह-जगह मेला आ उत्सव के धूम रहेला। अपना देश में वेश-भूषा, बोली, भाषा, भोजन भा पर्व-त्याहार होखो कुल्हि किसिम-किसिम के रूप-रंग में पावल जाला। एह पर्व के विजयादशमी भी कहल जाला। ई प्रतीक ह असत्य पर सत्य के, अधर्म पर धर्म के बुराई पर अच्छाई के विजय के।

धार्मिक कथा के आधार पर एह पर्व के दूगो वर्णन मिलेला। एक कथा के अनुसार दुर्गा माता शक्ति के अवतार के रूप में महिसासुर राक्षस के बध एही दिन कइले रहलीं। दूसर कथा के अनुसार राक्षस राज रावण पर राम एही दिन विजय प्राप्त कइले रहलें। एही से एह

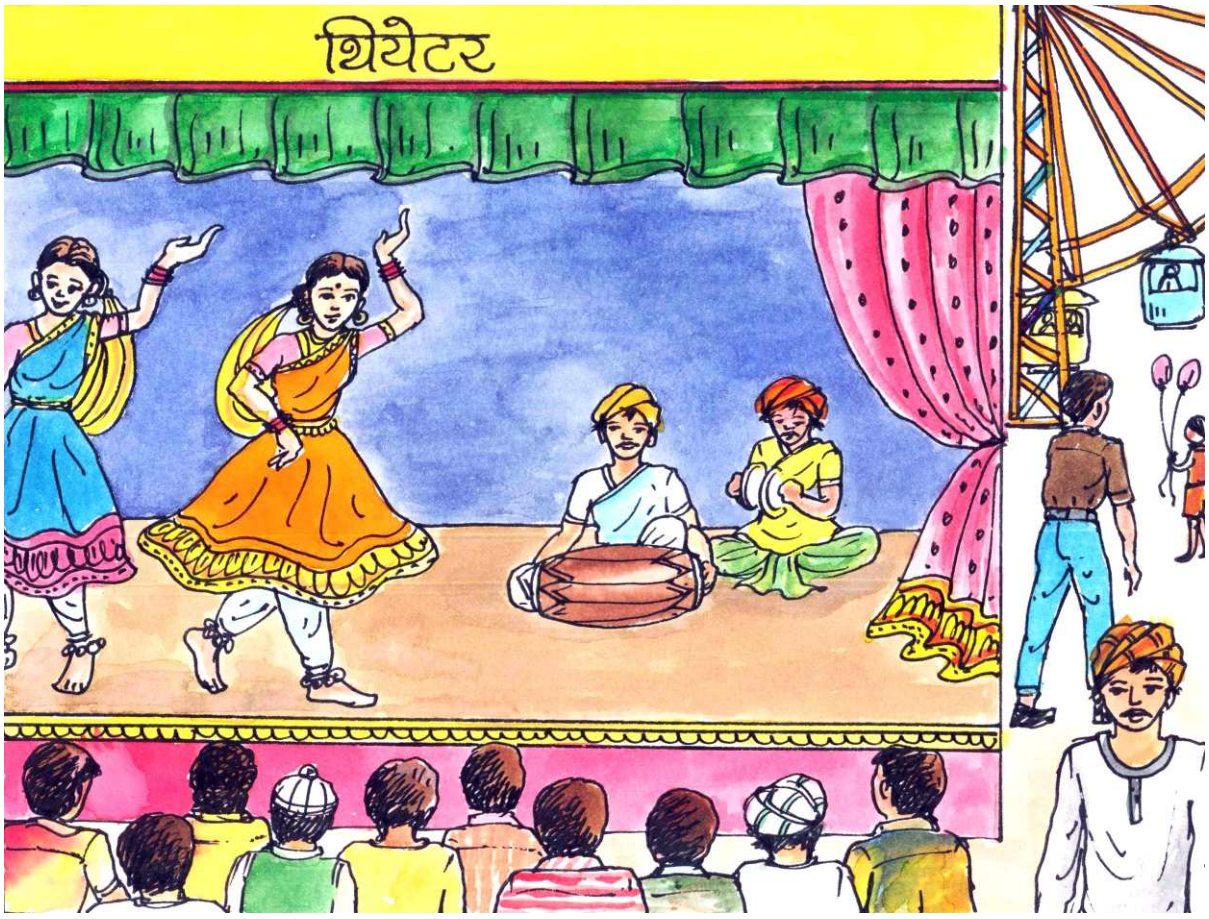

पर्व के विजयादशमी कहल जाला। विजयादशमी के पहिले नौ दिन तक दुर्गा के नौ रूपन के पूजा होला। इ पर्व समूचे देश में कवनो ना कवनो रूप में मनावल जाला बाकिर बंगाल, बिहार, दिल्ली, हिमालच आ उत्तर प्रदेश में खूब धूमधाम से एकर आयोजन होला। कुल्लु (हिमाचल) के दशहरा नामी ह। एह पर्व में समाज के विभिन्न वर्ग आ सम्प्रदाय के लोग सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से आपस में मिले-जुले ला आ आनन्द उठावे ला। चारो ओर सामाजिक कुरीतियन के विरोध, सामाजिक चेतना के जागृत करे ला कार्यक्रम होला। एही से ई सुन्दर, सुहावन, मनभावन पर्व के सांस्कृतिक पर्व दशहरा कहल जाला। एगो लोकमत के अनुसार रामचन्द्र रावण के दस शीश के हरले रहस एह से एकरा दशहरा कहल जाला।

हिन्दी के पावन कुआर (आसिन) महिना के अँजोरिया में ई त्योहार मनावल जाला। नौ दिन तक दुर्गा पाठ होला तब हवन के बाद दशमी के दशहरा होला। हवन से पूरा वातावरण स्वच्छ हो जाला। कहल जाला कि दशमी के दसो दुआर खुलल रहेला।

दशहरा का आवते लड़िकन के खुशी के ठेकाना ना रहे। सभे के नया-नया, रंग-बिरंगा कपड़ा पेन्हे के, मेला घूमे के, रामलीला आदि तमाशा देखे के अवसर मिलेला। जगह-जगह दुर्गाजी के मूर्ति बनेला, पंडाल सजेला। सतमी के दिन आँख खुलते जहवाँ-जहवाँ मूर्ति बनेला, पूजा होला उहवाँ भीड़ इकट्ठा होए लागे ला। नाच-गाना, नाटक, रामलीला, गीत-गवनई शुरू हो जाला। छोट-बड़ सभे पूजा करेला आ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आनन्द उठावे ला।

दशहरा के अवसर पर मेला के अलगे रंग होला जेह में लोक रंग अपना उठान पर रहेला। मेहरारू लोगन के खासकर गाँव में रहे वालिन के इहे अवसर मिलेला घर से बहरी निकले के, गीत-गवनई के आनन्द उठावे के, एक दोसरा से मिले के। लड़िकन के झूला, सर्कस, जादू, यमपुरी नाटक में खूब मन लागे ला। मेला में चाट-पकउड़ी से लेके मिठाई तक मिलेला।

ई सांस्कृतिक पर्व के समापन रावण, कुम्भकरण, मेघनाद के लमहर-लमहर पुतला

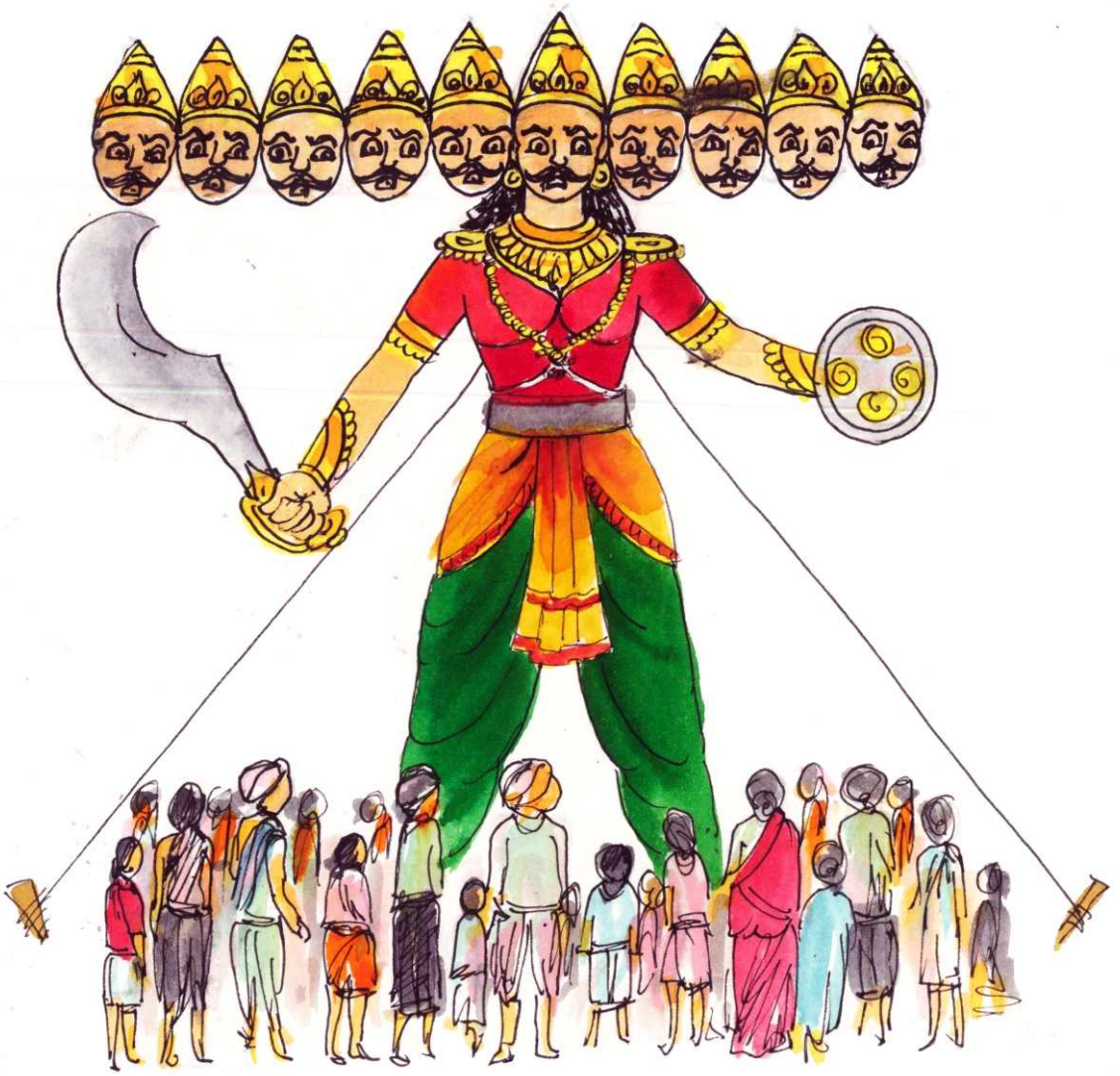

के दहन से होला। पुतला में पटाखा बन्हा ला। एकरा बनावे में हिन्दू-मुसलमान सभे कलाकार के कारीगरी रहेला। मैदान में पुतला खड़ा क दिहल जाला। राम बन के धनुष लेके एगो आदमी आवेला। रावण का नाभि में अग्निवाण मारेला। पुतला धधक उठेला। पटाखा के आवाज से कान अलसा जाला। पुतला जरि जाला। मानल जाला कि एकरा संगे अनाचार पर सदाचार के विजय हो ला। लड़िकन-बूढ़-जवान के भीड़ थपरी पीट के खुशी मनावे ला। ई पर्व नेह-छोह, सद्भाव के पर्व ह जे सुख-शांति के संदेश लेके आवेला।

शब्द भंडार-

कुल्हि- सब

पावन- पवित्र

माह- महीना

कथा- कहानी

अँजोरिया- महिना के एगो पख जे में अँजोरिया रात होला

वातावरण- मौसम

धार्मिक- धर्म संबंधी

सांस्कृतिक- संस्कृति संबंधी

टोला-टपरी- गाँव के छोट हिस्सा

जागरण- जागे के क्रिया

धूम-धाम- जोर-शोर

कुरीति- खराब रिवाज

चेतना- जागृति

जागृत- जगावल

लोक मत- जनमत, लोग के मत, समाज के मत

शीश- सिर

हवन- लकड़ी, धूप, घी, तिल आदि जलावल

स्वच्छ- साफ-सुथरा

दुअरा- दरवाजा

आँख खुलल- मूर्ति पूजा के एगो विधि

यमपुरी नाटक- एगो विशेष नाटक नेह में मुअला का बाद यम राज द्वारा दिहल सजाये के चित्रण रहेला

उठान- खूब तरक्की, चोटी पर

अग्निवाण- जवना वाण से आग निकले ला

पुतला- बांस, कागज लकड़ी आदि के बनल केहु के रूप

धधक उठेला- जरे लागे ला

अनाचार- दुराचार, अत्याचार

सदाचार- अच्छा आचार

नेह-छोह- आपसी प्रेम व्यवहार

सद्भाव- अच्छा विचार

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. दशहरा कइसन पर्व ह ?

   (क) राष्ट्रीय (ख) लोक

   (ग) सांस्कृतिक (घ) ए मे कवनो ना

2. दशहरा पर्व कवना महीना में मनावल जाला ?

   (क) कुआर (ख) चैत

   (ग) बैशाख (घ) भादो

3. कहवाँ के दशहरा नामी ह ?

   (क) दिल्ली के (ख) पटना के

   (ग) कुल्लु के (घ) उड़ीसा के

4. दशहरा प्रतीक ह -

   (क) असत् पर सत के (ख) अधर्म पर धर्म के

   (ग) बुराई पर अच्छाई के (घ) एह सब के

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. दशहरा के आउरी का कहल जाला ?
6. दशहरा कवना-कवना राज्य में धूम-धाम से मनावल जाला ?
7. दशहरा में कवना देवी के पूजा होला ?
8. दशहरा में पूजा-पाठ कए दिन चलेला आ अंतिम दिन का होला ?
9. कवना चीज से वातावरण स्वच्छ हो जाला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

10. दशहरा का पीछे कवन-कवन धार्मिक कथा के चर्चा बा ?
11. रावण पर राम के विजय के वर्णन करीं।

भाषा ज्ञान-

12. विलोम शब्द लिखीं

    सत्, विजय, अँजोरिया, अनाचार, स्वच्छ

13. जवना वाक्य में एगो सरल वाक्य आ ओह पर आश्रित एगो उप वाक्य हो ला मिश्रित वाक्य कहा ला। जइसे मेला के अलगे रंग होला जेह में लोक रंग उठान पर रहे ला।

नीचे दिहल वाक्यन में सरल वाक्य आ मिश्र वाक्य चुन के ओकरा सामने लिखीं-

दशहरा एगो सांस्कृतिक पर्व ह। महिषासुर एगो राक्षस रहे जेकर बध दुर्गाजी कइले रहीं। दुर्गा जी शक्ति के अवतार लेले रहीं जे नौ रूप में भक्त का सामने आवेली। दशहरा सुख-शांति प्रदान करेला।

परियोजना कार्य-

14. दशहरा जइसन कवनो दूसर सांस्कृतिक पर्व का बारे में लिखीं।
15. कवनो मेला पर एगो निबंध लिखीं।
16. दशहरा का अवसर पर कवनो यात्रा के योजना बना के लिखीं।

अध्याय– तीन

- हरिमोहन झा -

प्रो. हरिमोहन झा मैथिली साहित्य के जानल–मानल आ लोकप्रिय साहित्यकार रहलें। इहाँ के जनम 1908 में बैशाली जिला के कुमर बाजितपुर गाँव में भइल रहे। मैथिली साहित्य के लोकप्रियता में इनका रचनन के बहुते योगदान बा। रूढ़िवादिता आ परंपरा के तुड़त इनका रचनन में प्रगतिशीलता आ नवीनता पावल जाला। 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' इनकर दू गो प्रमुख उपन्यास बा जवना पर फिल्मों बनल बा। हास्य रस युक्त रचनन में 'चर्चरी', 'एकादशी', 'खट्टर काका क तरंग', 'रंगशाला', 'प्रणम्यदेवता' प्रमुख बा। हास्य–व्यंग्य के माध्यम से इहाँ का अंधविश्वास आ सामाजिक–धार्मिक पाखंड पर जबर्दस्त चोट कइले बाड़ें। इनकर अंतिम कृति 'जीवन–यात्रा' पर 1985 में मरणोपरांत इनका साहित्य अकादमी पुररस्कार से सम्मानित कइल गइल रहे। 1984 में इनकर निधन भ गइल। इनकर कहानी 'ग्राम सेविका' के अनुवाद पाठ्य–पुस्तक निर्माण समिति द्वारा कइल गइल बा।

विषय प्रवेश–

'ग्राम सेविका' में गांवन में व्याप्त रूढ़िवादिता आ अन्धविश्वास के विरुद्ध एगो बुलंद आवाज बा। स्त्री के संबंध में समाज में फइलल रूढ़िवादी बंधन के एगो ग्राम सेविका अपना कर्त्तव्य आ व्यवहार से विखंडित कइले बिया। सउँसे गाँव नारी जागरण के प्रकाश से जगमगा उठल बा।

ग्राम सेविका

मकुनाही पोखर पर लूटन मिश्र वैद्य के मुँह धोअत देख के काशीनाथ उनका से कहलें कि एगो नया बात सुननी हाँ।

बैद्य उनका ओर ध्यान देके पुछलन कि का भइल बा।

काशीनाथ कहले– अपना इलाका में एगो ग्राम सेविका आइल बिया।

बैद्य जी पुछलन– ग्राम सेविका के माने का होला ? का उ गाँव भर के पैर दबाई।

काशीनाथ– ऊ गाँवे–गाँवे घूम के औरतन के शिक्षा दी।

बैद्य जी– का शिक्षा दी ?

काशीनाथ– इहे कि पर्दा से बहरि आके कुल काम कर जा।

बैद्य जी दांत तरे जीभ दवा के कह लें – अब जे – जे न होए। फूदन चौधरी घाट पर बइठल लोटा माँजत रहस। इ सब सुन के कहले–ओकर उमिर का ह।

काशीनाथ अन्दाज लगावत कहलन– इहे करीब अठारह–उन्नइस।

चौधरी– वियाहल ह कि कुवांरी।

काशीनाथ– देखे में कुवांरे जइसन लागे ली।

चौधरी– त ऊ दोसरा के का सिखाई। लड़िका सिखावे बुढ़दादी के।

काशीनाथ- चौधरी जी, इ मत कहीं। उ बहुत पढ़ल लिखल बिया। एही से सरकार ओकरा एह काम पर बहाल कइले बिया।

चौधरीजी व्यंग्य करत कहलन- अरे तू सरकार के का बूझे ल। दोसरा के बहु-बेटी के नचवा के देखे में खूब मजा आव ता। ओकरा पतिव्रता से कवन काम बा।

अतने में कान पर जनेऊ-चढ़इले पंडित जी पहुँच गइले आ कहलन- एह युग में भ्रष्टे के उन्नति होत बा। जे अपने भ्रष्ट रहे ला ऊ सब के, सऊँसे गाँव के औरतन के बिगाड़ के छोड़ दी। का एको गो बेटी-पुतोह कहना मानी? ओकरा ग्राम सेविका ना ग्राम सोधिका बूझीं।

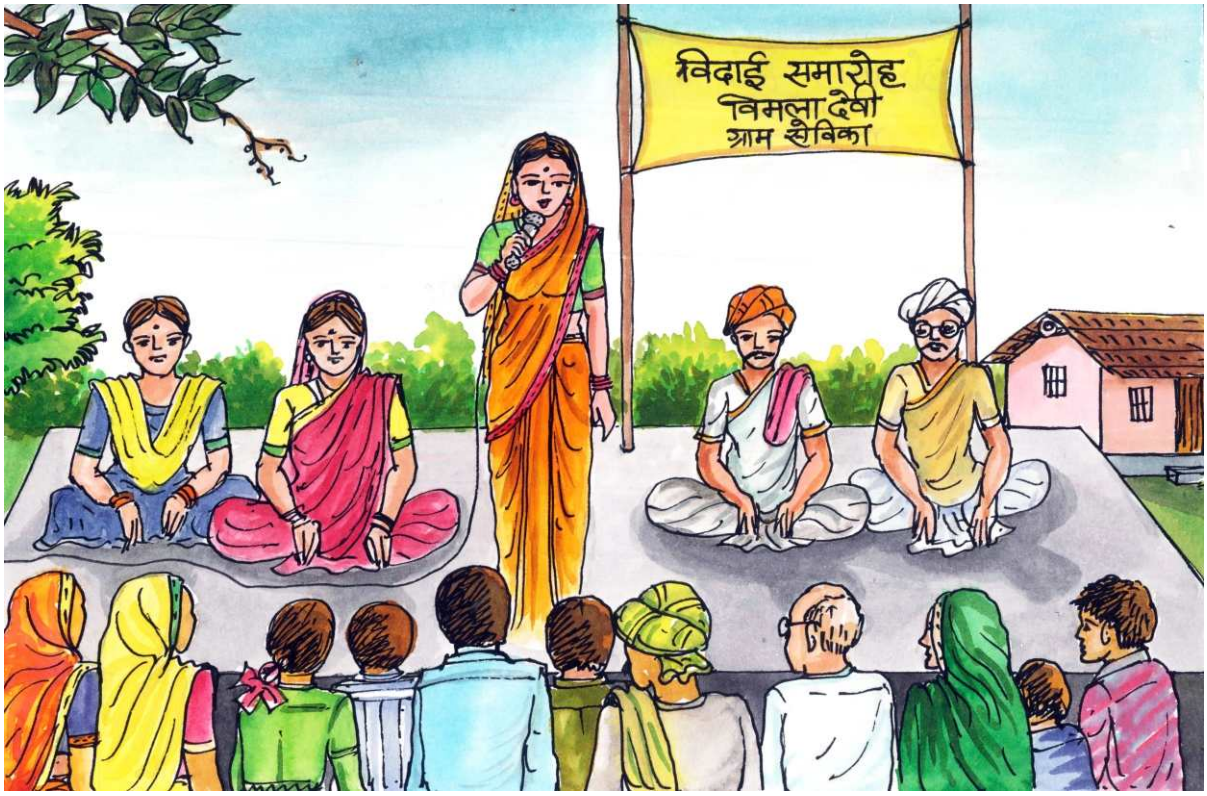

बौकू बाबू डाँड़ भर पानी में खड़ा होके मंतर जपत रहस। उनका रहल ना गइल। उ कहले ओह छोकड़ी के अपना अंगना में टपे ना देव।

काशीनाथ- बाबा अइसे छोकड़ी जन कहीं। उ अफसर होके आइल बिया।

बौकू बाबू उत्तेजित हो के कहलन- एह गाँव में अफसरी शान ना चली। हमार घर बिगाड़े आइ त मार करची के गोड़ तूड़ देब।

अतने में बौकू बाबू के पोता दउड़त-हाँफत आइल।

बौकू बाबू पूछलन- का हो भुटकुन अइसे उदड़ल काहे अइलह। घर में साँप निकलल बा का।

भुटकुन हॉफत-हॉफत कहलन- एगो मेहरारू खूब उज्जर लूगा पहिरले आइल बिया। दलान में कुर्सी पर बइठल बिया आ अंगना में सबसे भेंट करे के कहतिया। दादी कहली ह कि बाबा से पूछ आव।

बौकू बाबू पुछलन ऊ के ह ? का करे आइल बिया रे हमरा अंगना से कवन काम बा ?

भुटकुन के चुप देख काशीनाथ पुछलन- का हो भुटकुन ओकर माथ उघारे ह कि ना ? हाथ में बेगो बा ?

भुटकुन कहलन- हँ।

काशीनाथ कहलन- तब जरूर उहे होई।

बौकू बाबू कहलन- ओह कुलच्छनी के आउरो कवनो घर ना मिलल हा।

सभे मुसुकाए लागल। बौकू बाबू खीसे में घरे चल दिहलन।

जब ऊ अपना अंगना पहुंचलन त जेकरा भर रास्ते ऊ गरियावत अइलन ह ऊ अंचरा के फेंटा बान्ह के एक हाथ में झारू आ दोसरा हाथ में फेनाइल के बोतल लेके मोरी साफ करे में लागल बिया। अंगना में आउरी औरत लोग घूघ तान के पीछे खड़ा बाड़ी। बौकू बाबू के अंगना में घुसते मोरी के महक से नाक फाटे लागत रहे आज साफ बदल गइल बा। ओसारा पर के कूड़ो-करकट साफ हो गइल बा। चौखट पर करिखा से करिया लालटेन आज चमचम खुंटी पर चमकत बा। घर के महीनवन के झोल-झक्कर साफ भ गइल बा।

बौकू बाबू सोचे लगलन- अइसन संस्कार वाली मेहरारू अपना घर में रहित त रोज-रोज अइसन गदकिच्चन ना होइत।

बौकू बाबू जब पूजा पर बइठलन त खिड़की का बहरी उहे लड़की पिछुआरा में नींबू के पेड़ में कीड़ा के दवाई घोर के पिचकारी से पियावत दिखाई पड़ल।

देखते-देखते गाँव के काया पलट हो गइल। जे नाक झाँप के भागल फिरत रहे उ विमला देवी क कहला पर कुदारी ले के गंदा माटी बहरी फेंकत रही। बाद में साबून से हाथ मल के विमला देवी नमस्ते क के चल दे ली। बाकिर बौकू बाबू के धारणा अब बिल्कुल बदल गइल। अब ओकरा कुलच्छनी आ डाइन ना ऋषि कन्या माने लगलन। खाना खाय के बेरिया बौकू बाबू पत्नी से कह लें- देखलीं ई बंगाली लड़की के पानी।

उनकर पत्नी तपाक से कह ली ऊ बंगालिन नइखे ऊत मैथिल बिया।

बैजू बाबू के करेजा में धक्क से लागल। पंजाविन, बंगालिन, अइसन करित त कवनो बात ना बाकिर ई मैथिल हो के अइसन करत बिया। का एकरा भाई-बाप नइखे जे अबले कुँवारे बिया। उनकर मेहरारू कह ली- हम पूछले रहीं त कह ली बच्चा पैदा करे वाली देश में बहुत लोग बा देश सेवा करे वाला कम। एह से हम देश सेवा अपनवली ह।

बौकू बाबू बिगड़ के कहलन दोसर रहित त मनतीं बाकिर एह माटी से निकल के अइसन शान देखाई ई हम ना मानब।

कुछ दिन में विमला देवी के कारण घर-घर उजियार हो उठल। जवना इनार में कीड़ा सोहरत रहे ओह में ब्लीचिंग पाउडर दिया गइल बा। घइला अब उघार नइखे राखल जात उज्जर कपड़ा से ढंकाऽता। जवन मेहरारू लोग रोज-रोज लड़त रहे ऊ सभे ऊन-काँटा ले के बिनत रहे ली। सड़क पर अब नाक नइखे मुंदे के। सभकर बारी-झारी में तरकारी ऊपजे लागल। नारी समाज के ई नव जागरण अब घरे में ना बहरियो पहुंच गइल। समौलवाली मुसम्मात अब अपने मोढ़ा पर बइठके धान कटावत बिया। पंडितजी कहले ई कइसन जमाना आ गइल कवनो दोग-दाग में छिप के कटवइती त ठीक कहल जाइत। बाकिर बीच गाँव में बइठ के मरद लोग के छाती पर मूंग दलल ठीक नइखे।

काशीनाथ कह लें- ग्राम सेविका...

ग्राम सेविका के नाम सुनते पंडित आग बबूला भ गइलन। पहिले घर-घर से उनका नेवता मिलत रहे। अब विमला देवी का अइला से कुछ कम हो गइल बा। पंडित जी कहले- गाँव में अइसन-चांडालिन आ गइल बिया कि धरम-करम अब गाँव में रह कहाँ गइल बा। वैद्योजी विमला देवी से खुश नइखन, काहे कि अब बभनटोली से मुसहरटोली तक जाके जनाना लोगन का बीचे दवाई मँगनिए बांटे ली। उहो विगड़ के कहलन- सब बवाल के जड़ इहे ग्राम सेविका बिया, जे केचुआ के फूँक-फूँक के साँप बना रहल बिया। फूदन चौधरी अलगे धमंडे चूर होके कहलन- हमनी किहाँ अगर जनाना अइसे करी त ओकर गरदनिए...। ई बोलते रहस कि एकाएक चिहुँकलन, जइसे धक्क से बिजली लाग गइल होखे। सड़क किनारे उनके मेहरारू गुड़ के चेकी बनवावत रहली। चौधरी जी चुपा गइलन। बैद्यजी कहहन- कलयुग में का ना होई। पंडितजी मुसुका के कहलन- ई ग्राम सेविका सब के बहतरा बना दी। खाली उनके पंडिताइन बाचल बाड़ी। बाकिर पंडित जी घरे अइलन त देखलन कि उनकर पंडिताइन समधी से हँस-हँस के बतियावत रहली।

आ एगो ऊ दिन आ गइल जब सउँसे गाँव आँख खोल के नारी समाज के जागरण देखत रह गइल। विमला देवी का अगुआई में गाँव भर के बेटी-पुतोह अँचरा के फेंटा बान्ह के श्रमदान से महिला पुस्तकालय के नेयो दे रहल बाड़ी। तनिके दिन में महिला क्लब बन गइल। दूइए बरिस में गाँव के काया पलट हो गइल। गाँव के चौधरी के भावे मास्टरी करे लगली, बैद्यजी के बेटी नर्स बन गइली आ पंडिताइन के पुतोहु रेडियो से गावे लगली। विमला देवी आपन रोपल पेड़ के फरत-फुलात देख के खूब खुश रहली। बाकिर एही बीच उनकर बदली दोसर जगहा भ गइल।

गाँव भर के लोग, अधिका महिला लोग इकट्ठा होके विमला देवी के बिदाई करत रह लीं। जवन लोग कबहुँ इनका पर आँख मटकावत, भौं सिकोड़त रहे ऊ सभे आज विमला देवी के बिदाई में आँख से लोर ढरकावत रहे।

शब्द भंडार-

कन्यादान- लड़की के बियाह में एगो विधि

ग्राम सेविका- एगो सरकारी कर्मचारी

कुवाँरी- बिना बियाहल लड़की

पतिव्रता- पति के प्रति वफादार

दलान- घर के बाहरी बइठकीवाला घर

फेंटा- डांड़ में कस के घोती भा सारी बान्हल

मोरी- नाली

खूँटी- कपड़ा, फोटो भा कवनो चीज लटकावे ला देवाल में ठोकल कील भा लकड़ी

संस्कार- परंपरागत आचरण

पिछुआरा- घर के पीछे के हिस्सा

कुलच्छनी- जेकर लच्छन ठीक ना होखे

मोढ़ा- बेंत भा बांस के बइठे ला बनल सामान

मुसम्मात- जेकर पति मर गइल होखे, विधवा

कोधाग्नि- तेज आग खानि गुस्सा

चिहुँकल- अकचकायल

समधी- बेटा भा बेटी के ससुर, पुतोह भा दमाद के पिता

बहतरा- जेकर चाल ठीक ना होखे, एनेओने बउआए वाला

लूगा- सारी

मरणोपरांत- मरला के बाद

रुढ़िवादी- पुरान विचार वाला

पिछुआरा- घर के पीछे

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. कहानी में विमला देवी का हईं ?
   (क) मालकिन (ख) ग्राम सेविका
   (ग) नौकरानी (घ) एह में से कुछुओ ना।
2. ग्राम सेविका के माने का हो ला ?
   (क) गाँव भर के सेवा करे वाली (ख) गाँव के रक्षा करे वाली
   (ग) गाँव-घर घूम के औरतन के तौर-तरीका, शिक्षा देबे वाली सरकारी कर्मचारी (घ) इ कुल्हि
3. बौकू बाबू कवना के कुलच्छनी कहले बाड़न ?
   (क) ग्राम सेविका के (ख) मेहरारू के
   (ग) कुवाँर लड़कियन के (घ) बिधवा लोगन के
4. गाँव में पुस्तकालय खुले के श्रेय केकर बा ?
   (क) गाँव भर के मेहरारूअन के (ख) ग्राम सेविका के
   (ग) काशीनाथ के (घ) चौधरी जी के
5. विमला देवी गाँव खातिर का-का कइलीं ?
   (क) पुस्तकालय खोलववली (ख) महिला क्लब बनवइली
   (ग) सब औरतन के शिक्षित कइलीं (घ) इ कुल्हि काम कइलीं

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. विमला देवी सबसे पहिले केकरा घरे गइली ?
7. बौकू बाबू जब घरे गइलन त ग्राम सेविका का करत रही ?

8. चौधरी जी सरकार पर का व्यंग्य कइले बानी ?
9. 'एह गाँव में अफसरी चाल ना चली' के कहले बा आ केकरा बारे में ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

10. विमला देवी के ग्राम सेविका के रूप में गांव में कइल काम के वर्णन करीं।
11. विमला देवी जवन-जवन काम कइली गाँव पर ओकर का प्रभाव पड़ल ?
12. गाँव के कुल्हि लोग ग्राम सेविका के आँख पर बइठा लिहल। काहे ?

भाषा ज्ञान-

12. जब एके शब्द बार-बार दुहरावल जाला त ओकरा पुनरुक्ति कहल जाला जइसे- थर-थर, गँवे-गँवे।

    नीचे के वाक्यन में से पुनरुक्ति वाला शब्द चुन के लिखीं।

    ऊ गाँवे-गाँवे घूम के औरतन के शिक्षा दी। भुटकुन के मेहरारू अपना घर में रहित त रोज-रोज गदकिच्चन ना होइत। विमला देवी के कारण घर-घर उजियार हो गइल।

परियोजना कार्य-

1. गाँव के उन्नति खातिर कवन-कवन काम करे के चाहीं ? आपन विचार लिखीं।
2. अनपढ़ लोगन के तरक्की खातिर कवनो जागरण संदेश बनाईं।
3. गाँव के मेहरारूअन में जगावे खातिर कवनो योजना के रूपरेखा बनाईं।
4. गाँव में सफाई, शिक्षा, नारी जागरण खातिर नारा गढ़ीं।

अध्याय– चार

- धरनी दास -

धरनी दास सारण जिला के मांझी गाँव के रहनिहार रहले। मांझी में आजुओ इनका शिष्य परंपरा के मठ बा। 'प्रेम प्रकाश' आ 'शब्द प्रकाश' दू गो इनकर पुस्तक बा। नौकरी करत गृहस्थ जीवन में इनका चित्त में प्रेरणा जागल आ इहाँ का निस्काम भक्ति, योग साधना में लाग गइनी। संवत् 1731 में इनकर निधन भ गइल।

विषय प्रवेश–

संत कवि धरनी दास जी के लिखल इहाँ दू गो पद दिहल गइल बा। पहिलका पद में जहवाँ भक्त अपना के सबले कम अँकले बाड़ें उहँवें भगवान के सब गुन से भरल आ महान कहत बाड़ें। दूसरा पद में कवि भगवान के गुरु मानत बाड़ें उनका कहला अनुसार जवना दिन गुरु के लागीं प्रेम आ आदर मन में ऊपज जाला कुल्ही दुख बलाय भाग जाला।

पद–1

मैं निरगुनियाँ गुन नहिं जाना । एक धनी के हाथ बिकाना ।।
सो प्रभु पक्का मैं अति कच्चा । मैं झूठा मेरा साहब सच्चा ।।
मैं ओछा मेरा साहब पूरा । मैं कायर मेरा साहब सूरा ।।
मैं मूरख मेरा प्रभु ज्ञाता । मैं किरपिन मेरा साहब दाता ।।
धरती मन मानर इक ठाऊँ । सो प्रभु जीवो मैं मरिजाऊँ ।।

पद–2

जहिया भइल गुरु उपदेस, अंग–अंग के मिटल कलेस ।
सुनत सजग भयो जीव, जनु अगिनी परै घीव ।।

उर उपजल प्रभु प्रेम, छुटि के तब ब्रत नेम ।
जब घर भइल अँजोर, तब मानल मन मोर ।।
देखे के कहल न जाय, कहले न जग पतियाय ।
धरनी धनि तिन पाग, नेहि उपजल अनुराग ।।

शब्द भंडार-

निरगुनियाँ- बिना गुण के, निर्गुण ब्रह्म के उपासक
ओछा- नीच
कायर- डरपोक
किरपिन- कंजूस
मूरख- मूर्ख, जेकरा बुद्धि ना होखे ला
ज्ञाता- जानकार, जाने वाला
सूरा- बीर, बलवान, शक्तिशाली
कलेश- दु:ख
अगिनी- आग
नेम- पवित्रता, नियम
उर- हृदय, करेजा
पतियाय- विश्वास कइल, मान लिहल
अनुराग- प्रेम, स्नेह
घीव- घी, घीऊ
ब्रत- पर्व, तेवहार
मोर- हमार
जग- संसार, दुनिया
नेहि- सनेह।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. धरनी दास जी के घर कवना जिला में रहे ?

   (क) चम्पारण (ख) सारण

   (ग) पटना (घ) भोजपुर

2. कवि 'मेरा साहब' केकरा कहत बाड़ें ?

   (क) धनी आदमी के (ख) हाकिम के

   (ग) भगवान के (घ) केहू के ना

3. कवि केकरा ज्ञाता कहत बाड़ें ?

   (क) गुरु के (ख) अपना के

   (ग) विद्वान के (घ) प्रभु के

4. प्रभु के प्रेम कहवाँ ऊपजल ?

   (क) घर में (ख) तपस्या में

   (ग) हृदय में (घ) जंगल में

5. कविता के एह पंक्ति के पूरा करीं ?

   (क) मैं ..... मेरा साहब दाता।

   (ख) मैं मूरख मेरा प्रभु .....।

6. सही पर (✓) के चिह्न आ गलत पर (✗) का चिह्न लगाईं।

   (क) गुरु के उपदेश से दुख दूर होला। ( )

   (ख) जब घर में अँजोर भइल तबो मन ना मानल। ( )

   (ग) देखल कहल ना जाय आ कहल संसार माने ना। ( )

(घ) कवि अपना के पक्का कहले बाडें। ( )

(ङ) नेह से प्रेम ऊपजे ला। ( )

लघु उत्तरीय प्रश्न-

7. कवि अपना के ओछा आ प्रभु के का कहत बाड़ें ?
8. कवि 'एक धनी' केकरा कहत बाड़ें ?
9. अंग-अंग के दुख कवना चीज से मिटल ?
10. कवि के ब्रत, नेम कब छूट गइल ?
11. जीव के सजग भइला के तुलना कवना चीज से कइल गइल बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

12. धरनी दास के पहिलका पद के भाव अपना मातृभाषा में लिखीं।
13. कवि प्रभु का आगा अपना के कवन-कवन चीज कहले बाड़ें ?
14. धरनी दास के दोसरका पद के भावार्थ लिखीं।

भाषा ज्ञान-

15. नीचे के शब्दन के विलोम शब्द लिखीं।

    कच्चा, मूरख, किरपीन, सच्चा, धनी

परियोजना कार्य-

1. गुरु के महिमा बतावे वाला कवनो आउर संत कवि के एगो पद लिखीं।
2. मन के क्लेश मेटावे ला का-का करे के चाहीं आपन विचार लिखीं।

अध्याय– पाँच

- एह पाठ के निर्माण पाठ्य-पुस्तक विकास समिति द्वारा भइल बा -

केसरिया पाँच गो बौद्ध स्थल में एगो मानल जाला। पत्र-विधा का माध्यम से केसरिया बौद्ध स्तूप आ ऊ स्थल के जानकारी एह में दिहल गइल बा।

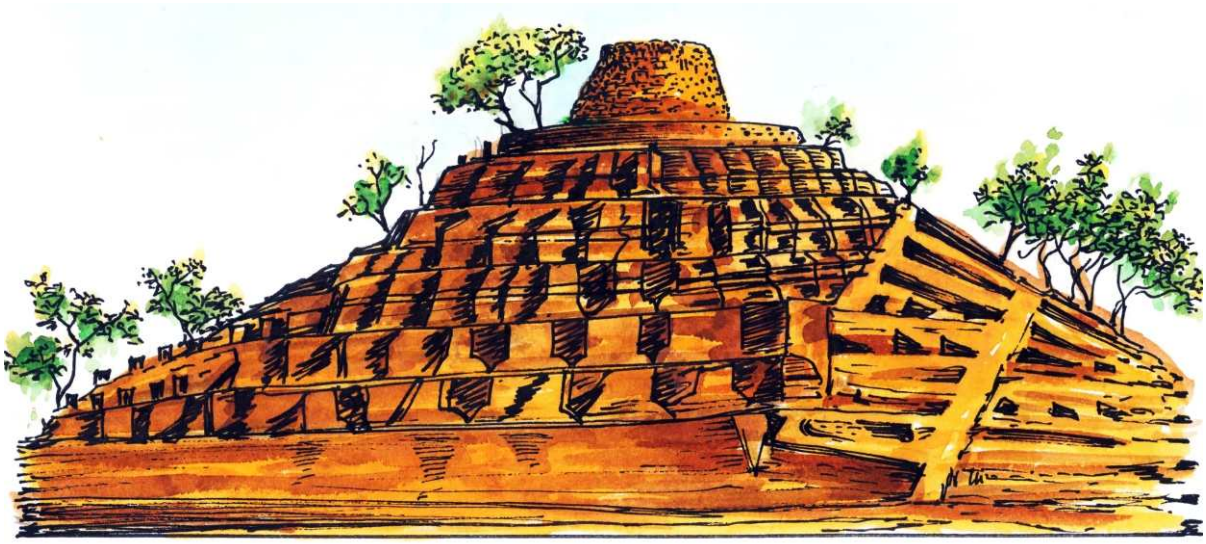

मित के पाती

भित्तिहरवा (प. चम्पारण)
बुद्ध पूर्णिमा, 2011

प्रिय मित्र संतोष

हम परिवार के सँगे ठीक बानी। उमेद बा तूहूँ परिवार जवरे नीके होइबऽ। पिछलका महीना में तोहार एगो पाती मिलल रहे। पढ़नी त ई जान के मन हरिअरा गइल कि तू केसरिया का बारे में जाने के चाहत बाड़ऽ। सुनले त बानी केसरिया का बारे में कि उहवाँ एगो बौद्ध स्तूप बा। बाकिर ओकरा बारे में पूरा जानकारी देवे ला त उहवाँ जाये के पड़ी। तोहार

ऐतिहासिक तथ्यन में रुचि देख के हम पिछला एतवार के उहवाँ गइल रहीं। देख के मन गद-गद हो गइल। तोहरा कारण ई ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थल देखे के अवसर मिलल। ई हमार सौभाग्य बा।

इहवाँ भित्तिहरवा में हम गाँधीजी के आश्रम से सटले रही ले। इहो स्थान अब ऐतिहासिक कहा ला। स्वतंत्रता संग्राम में गाँधीजी चम्पारण के निलहा किसानन के दुर्दशा देख के असहयोग आंदोलन शुरू कइले रहलें त इहँवे आश्रम में रहत रहलें। गाँधी के आश्रम से बुद्ध के स्तूप तक के यात्रा में स्थल के दर्शन करे के इच्छा का आगे सब कष्ट फूल नीयर सह लेनी। का करीं, पहिले बस से नरकटियागंज गइनी, उहँवा से बेतिया ले भीड़ भाड़ ना रहे

बाकिर बेतिया से धक्का-धुक्की शुरू भइल केहू तरी ठेला-ठेली करत चकिया टीसन तक पहुँचली उहँवा से उतर के केसरिया जाये के रहे। पूछला पर लोग जानकारी दिहल। इहवाँ से पन्द्रह किलोमीटर पर केसरिया के बौद्ध स्तूप बा। बसो में रेलगाड़ी जइसन ठेलम-ठेल रहे। उहवाँ त केहू तरी बइठे के जगह मिल गइल रहे, इहवाँ त खड़े-खड़े रास्ता काट लेवे के पड़ल। बाकिर जाए में सड़क के दूनू ओरिया गाछ-बिरिछ के हरियाली आ फुलाइल गुलमोहर के लाली मन के मोह लिहलस बस अड्डा से जइसहीं मेन रोड पर अइनी गोल के गोल विदेशी मरद-मेहरारू, लइका-लइकिन के देखनी। लाल-लाल देह, गोर-गोर मुँह,

भुअर आ नीला आँख वाला कुल्हि अपना पीठ पर बड़का-बड़का झोला आ बेग लटकइले आगे बढ़त मिलल। सभे उहँवे जात रहे। बीच-बीच में ऊ कवन-कवन भाषा में कुछुओ-कुछुओ बोलतो रहे। एक घंटा से कम में हम केसरिया स्तूप से पहिले बस अड्डा पर पहुँचनी। बस रोक दिहलस आ चिल्लाए लागल... खाली करीं... खाली करीं... केसरिया-केसरिया...। सामने स्तूप लउकत रहे। देखे में नियरे लागत रहे। बाकिर पूछला पर लोग कहल कि बेन के टीला इहवाँ से दू किलोमीटर बा...। हम कहनी हमरा बौद्ध स्तूप देखे के बा। एगो पान के दुकान वाला समझवलस। घबराई जन। पहिले इ खंडहर एगो जंगल-झाड़ से भरल टीला रहे, जेकरा के राजा बेन के टीला कहल जात रहे। 1998 में सरकार एकर खोदाई करावल शुरू कइलस। खोदाई में ई स्तूप आ आउरी कतना चीज मिलल जे कुल्हि कवनो पुराना जमाना के बा।

हमरा त जेतना देखे के लालसा रहे ओतने एकरा बारे में जानहूँ के मन रहे। ना जनती त तोहरा के का लिखतीं। उहवाँ टीला पर स्तूप आ आउरी कुल्हि ऐतिहासिक चीजन के देख के लागल कि यात्रा सवारथ भ गइल। इहवाँ पता लागल कि जंगल-झाड़ से भरल ई टीला के पुरातत्व विभाग अपना अधिकार में लेके खोदाई कइलस त ई स्तूप निकलल। खोदाई में पावल चीजन में ई स्तूप सबसे महत्वपूर्ण बा। कहल जाला कि भगवान बुद्ध निर्वाण का पहिले एही जगह लिच्छवी लोगन के भिक्षा पात्र देले रहलें आ कहलें कि बाद में एके वैशाली के लौटा दिह लोगन। कहल जाला कि ई. पू. 750 से ई. पू. 200 के बीच एह स्तूप के निर्माण भइल रहे। एकर ऊँचाई लगभग 104 फीट आ परिधि 1400 फीट बा। कुछ दिन पहिले थाईलैंड के बौद्ध स्तूप सबसे ऊँच मानल जात रहे। अब केसरिया के बौद्ध स्तूप दुनिया के सबसे ऊँच बौद्ध स्तूप मानल जाला।

संतोष का बताईं। एह स्तूप के बनावट आ सुन्दरता देखते बने ला। तुलसीदास जी के चौपाई इयाद पड़ जाला- 'अवस देखिए देखन जोगू'। स्तूप के चारो ओरिया भगवान बुद्ध के एक से एक छोट-बड़ मूरत बा। कवनो खड़ा, त कवनो बइठल। कवनो ध्यानमुद्रा में त

कवनो आशीर्वाद देत आपन तरहत्थी उठवले। मूर्तियन के रंग आ बनावट देख के इचको भर विश्वास ना हो ला कि ई कुल्हि एतना पुराना जमाना के बा। किसिम-किसिम के मुद्रा आ चटक रंग देख के मन तनिको ना अघाए। इहवाँ कए-कए गो कोठरी बा। कहल जाला कि एही कोठरियन में बौद्ध भिक्षु लोग रहत रहे। देश-विदेश के घुमक्कड़ लोगन के आ स्थान के सुन्दरता देखत-देखत मने ना अघाए। इहवाँ कए गो फोटो खिंचवइनी जवन संगे भेज रहल बानी। हम त कहब कि एक बेर आवऽ। एक पंथ दू काज होइ। गाँधीजी के भित्तिहरवो देख लेब आ केसरिया के बौद्ध स्तूपो। अरे गाँधी आ बुद्ध दुनो त अहिंसे के पुजारी रहलें। पाती लमहर भ गइल। पढ़त-पढ़त तोहर मन ऊब जाई। एहसे खतम करत बानी। बड़ लोगन के पाँव लागत बानी आ लड़िकन के आशीर्वाद।

तोहार

दिलीप

शब्द भंडार-

पाती- चिट्ठी

मन हरिअरा गइल- मन खुश भ गइल

स्तूप- पत्थर के बनल ऊँच ढूह

बौद्ध- महात्मा बुद्ध से संबंधित

ऐतिहासिक- इतिहास से जुड़ल

पुरातात्विक- पुरान खोज आ अध्ययन से संबंधित

निलहा- नील के खेती करावे वाला

फूल नियर सहल- आसानी से लिहल

ठेला-ठेली- धक्का

ठेलम-ठेल- कम जगहा में अधिका लोग के भीड़

रास्ता काटल– रास्ता तय कइल

गुलमोहर– एगो पेड़ जवना में सुंदर लाल फूल होला

बेन– एगो राजा के नाम

टीला– पत्थर या मिट्ठी आदि के ऊँच टीला

खंडहर– पुरान मकान, किला के अवशेष

लालसा– इच्छा

ई.पू.– ईसा के जन्म के पहिले

परिधि– गोल चीज के घेरा

ध्यान मुद्रा– ध्यान लगावत मुँह के भाव

बौद्ध भिक्षु– भगवान बुद्ध के शिष्य

घुमक्कड़– घूमे वाला लोग

एक पंथ दू काज– एके मेहनत में दू काम

पाँव लागल– प्रणाम कइल।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. 'मित के पाती' कवना विधा के रचना बा ?

(क) पत्र–लेखन (ख) कहानी

(ग) कविता (घ) नाटक

2. केसरिया के बौद्ध स्तूप कवना जिला में बा ?

(क) पटना (ख) भोजपुर

(ग) पूर्वी चम्पारण (घ) पश्चिमी चम्पारण

3. केसरिया स्तूप में केकर कलात्मक चित्र बा ?

(क) राम (ख) बुद्ध

(ग) कृष्ण (घ) एह में कवनो ना

4. खाली स्थान के सही शब्द में भरी।

(क) केसरिया के बौद्ध स्तूप के गाँव में लोग ..... कहेला।

(ख) केसरिया बौद्ध स्तूप के घेरा ..... फीट बा।

(ग) केसरिया बौद्ध स्तूप में विभिन्न मुद्रा में ..... के मूर्ति पावल जाला।

(घ) केसरिया बौद्ध स्तूप के ऊँचाई ..... फीट बा।

(ङ) पहिले ..... के बौद्ध स्तूप सबसे लमहर स्तूप मानल जात रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. बिहार में आउर कहवाँ-कहवाँ बौद्ध स्तूप बाटे ?
6. संसार के सबसे ऊँच स्तूप कहवाँ बा ?
7. केसरिया कवना रेलवे स्टेशन से नजदीक बा आ उहवाँ से केतना दूर बा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

8. केसरिया बौद्ध स्तूप के विशेषता के वर्णन करीं।
9. केसरिया बौद्ध स्थल पर कवन-कवन चीज पावल जाला ?
10. केसरिया बौद्ध स्तूप कवना समय के बा आ भगवान बुद्ध उहवाँ का कइले रहस?

परियोजना कार्य-

1. बिहार के स्तूपन के चर्चा अपना संगी–साथी का बीचे करीं।
2. बिहार के कवनो दूसर बौद्ध स्थल के यात्रा स्कूल के लड़िकन के संगे करीं आ ओकर वर्णन करीं।
3. कवनो दूसर ऐतिहासिक स्थल के यात्रा के वर्णन अपना छोटा भाई के पत्र द्वारा लिखीं।

अध्याय– छव

- सिपाही सिंह श्रीमंत -

सिपाही सिंह 'श्रीमंत' जी के जन्म 8 मई, 1923 के बिहार के गोपालगंज जिला के मूंजा मटियारी गाँव में एगो किसान परिवार में भइल रहे। मैट्रिक के परीक्षा देबे के समय ही इहाँ का 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़ल रहीं। बाद में इहाँ का एम.ए., एम.एड. तक शिक्षा ग्रहण क के शिक्षा विभाग में जिला अधीक्षक के पद क सेवा कइनी। हिन्दी आ भोजपुरी के अनेक विधा का माध्यम से इहां का साहित्य सेवा कइनी। सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के साहित्य मंत्री आ महामंत्री, भोजपुरी अकादमी के सदस्य, प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ के इहां का निरन्तर साहित्य सेवा में लागल रहनी। भोजपुरी में 'उषा रानी', 'आंधी', 'जवानी के जगाइले' काव्य संग्रह। 'थरूहट के लोक गीत' आ 'छठ परमेश्वरी' शोधपरक निबंध संग्रह के अलावे रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीताजंलि के भोजपुरी अनुवादो कइलीं। 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के' आ 'भोजपुरी निबंध निकुंज' के सम्पादन में इहां के महत्वपूर्ण योगदान रहल बा। भोजपुरी आंदोलन के इहां का एगो जुझारू सेनानी रहीं। 15 जनवरी, 1940 में इहां के निधन भ गइल।

विषय प्रवेश :

'थारू जनजाति के लोक जीवन' श्रीमंतजी के 'थरूहट के लोक गीत' से लिहल गइल बा। एह निबंध में थारू जन जाति के परंपरा, पर्व-त्योहार, घर-दुआर, रहन-सहन, विविध संस्कार के वर्णन बा। हिन्दी निबंध के भोजपुरी अनुवाद पाठ्य-पुस्तक विकास समिति कइलस जे में थारू जाति के जीवन शैली के स्पष्ट झलक मिलेला।

थारू जनजाति के लोक जीवन

हिमालय पहाड़ के निचला मैदानी भाग के तराई कहल जाला। नेपाल के दक्खिनी भाग नेपाल के तराई कहा ला। एकरा पूरबी भाग में पश्चिम बंगाल के जलपाई गुड़ी से पश्चिम में कुमाऊँ तक के गांवन में निवास करे वाली एगो विशेष जाति के 'थारू' कहल

जाला। एह जनजाति के लोग बहुते पिछड़ल बा। इ लोग जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत के उपासना आदि अंध-विश्वास में आस्था राखे लें। बिहार के पश्चिम चम्पारण जिला के उत्तर-पश्चिम के पहाड़ी आ जंगली इलाका के रामनगर, मैनाटांड, हरनाटांड, बगहा आ शिकारपुर थाना 'थरूहट', कहा ला। एह थरूहट में थारू जाति के बहुलता बा।

थारू लोगन के घरो-दुआर के आपन विशेषता बा। पहिले खाली लकड़ी आ फूस से बनल घर रहत रहे। गँवे-गँवे छप्पर पर खपड़ा आ कुछ धनी-मानी थारू लोगन के ईंटो के घर मिले लागल। आजुओ अधिका लोगन के घर खरे-फूस के बा। गाँव का बीचो-बीच सड़क होला आ सड़क के दुनो ओरिया घर। घर के बीच में एगो अंगना होला आ चारो ओरिया घर। घर के दुआर सड़क के ओर रहेला। घर का बहरी एगो दालान होला, जहवाँ जानवरन के राखल जाला। घर के मेहरारू लोग घर के खूब नीमन, साफ-सुथरा सजा के राखे ली। माटी के देवाल के लीप-पोत के चिक्कन-चाकन राखे ली। देवाल के बहरी भाग

में नीचे से दू-अढ़ाई फीट अधिका चौड़ा होला जे डांड़ अइसन लागे ला। एही से अइसन घर के डंडहर घर कहल जाला। मेहरारू लोग हाथ के तरहत्थी, अंगुरी भा मुट्ठी से चूना, गेरू, चउरठ, हरदी, सेनुर आदि का सहारे देवाल पर किसिम-किसिम के चित्र बनाके देवाल के सजावे ली। घर में अनाज राखे खातिर माटी के डेहरी भा लमहर-लमहर घइला जेकरा के भरौचा कहल जाला, पावल जाला।

थारू जाति में एगो अजबे रेवाज बा। जनाना लोग मरदाना के चउका में ना जाए देवे ली। पकावल खाना छुहहुँ ना देवे ली। हिन्दू लोगन में अपना मरद (पति) के जूठा खाए में पुण्य मानल जाला बाकिर थारू लोगन में एकरा उल्टा जनाना लोग मरदाना के जूठ ना खाए ली।

थारू लोग में पूजा-पाठ के खूब रेवाज बा। इन्हनी के अनेक देवी-देवता बाडें। देवता लोगन में 'मनुसदेव', 'गन', 'बढ़म', 'महावीर', 'रसोगुरो', 'भोला धामी' आदि के पूजा होला। देवी लोगन में 'कालिका', 'चंडी', 'बनदेवी', 'हठी माई', 'कुँअरवर्त्ती' के लोग पूजे ला। 'मनुस देव' आ गन के थारू लोग आपन कुल देवता माने लन। कुछ थारू 'भोलाधामी' के भी आपन कुल देवता माने लें। दशहरा के समय धूम-धाम से इनकर पूजा होला। पूजा में परेवा (कबूतर) आ बकरा के बलि देबे के चलन बा। भोलाधामी खस्सी, परेवा, फूल, धूप, लौंग, सेनुर आदि से पूजल जालें। रसोगुरो के पूजो अईसही दशहरे के बेर होला। बढ़म के पूजा सामूहिक रूप से कुआर में भा बियाह आदि कवनो विशेष उत्सव का अवसर पर होला। केहू-के-केहू फूल, धूप, आदि से पूजेला आ खीर परसादी चढ़ावे ला। नया धाजा, फूल के माला, धूप, सेनुर आदि से कातिक पूरनमासी के थारू महावीर के पूजा करेला।

देवी लोगन में 'कलिका देवी' के पूजा दशहरा में आ नौमी के बकरा, पाठी, कबूतर, चुनरी, टिकुली, सेनुर, चोटी, काजर, दारू मुर्गा से होला 'बनदेवी' के पूजा में कबूतर, दारू, फूल, धूप, साड़ी आदि चढ़ावल जाला। तीन बरिस में एक बे असाढ़-सावन में 'हठी माई' के पूजा होला जवना में खस्सी, भेंड़ा, भईंसा, कबूतर, मुर्गा के बलि दिहल जाला आ सेनुर,

काजर, चोटी आदि चढ़ावा चढ़ावल जाला। कतहूँ-कतहूँ माटी के हाथिओ चढ़ावे के रेवाज बा। अइसही फूल, धूप, मिठाई, पंचमेवा से कुँअरवर्त्ती के पूजा होला।

थारू लोग पर्व के पावन कहेला। जइसे नागपंचमी के 'पुतरीपावन'। एकरा अलावे जन्माष्टमी, कजरी, तीज, अनंत, जिउतिया, पिंडवारी (पितृपक्ष), दशहरा, सोहराई, दिवाल, छठ, खिचड़ी, फगुआ, रामनौमी आदि पावन के चलन बा।

पुतरी पावन में लड़की लोगनि कपड़ा के पुतरी बनाके ओकर बियाह रचावे ली। दिन में उपवास राखे ली दुपहर बाद पुतरी के कवनो नदी भा पोखरा में दहवा के नहाए ली। घरे आके आनन्दी धान के लावा आ दूध खाइल जाला। भादो अँजोरिया में 'बुढ़वा एतवार' के पावन होला। दिन भर उपवास राखला के बाद दही-भूंजा, दही-चिउरा, भा दही रोटी खाइल जाला जेकरा तरखा खरना कहल जाला। 'पिंडवारी' में अपना बराबरी के लोगन का संगे घरे-घरे घूम के दारू पिए के रेवाज बा। जनाना लोगनिओ सहेलियन का संगे घूमे ली। 'सोहराई' में सांझ के गाय के पूजा होला आ दोसरा दिन गाय के फल, नून, भतुआ, तेल, हरदी आदि सिआवल जाला। अइसने एगो पावन बनपसार बा जे जंगल में गइअन के रक्षा खातिर मनावल जाला। 'खिचड़ी' में नेहा के चाउर आदि छू के दान कइल जाला आ खिचड़ी खाइल जाला। 'फगुआ' में सम्मत जरावे का पहिले दारू के दौर शुरू होला। सम्मत जरवला का बाद उहवाँ से लौटते बेर चौताल गावत दारू के दौड़ तेज हो जाला। जब आँख पर गुलाबी नशा चढ़ेला, तब रंग-अबीर से फगुआ होला।

थारू लोगन में पूजा, परब-त्योहार का अलावे अउरियो-अउरियो संस्कारन के प्रचलन बा। लड़िका के जनम के समय कवनो विशेष उत्सव के चलन इनखे, बाकिर मेहरारू लोग सोहर गावे ली आ कतहूँ-कतहूँ थालियो बजावल जाला। छठिआर में पास-पड़ोस के लोग के खियावल जाला। नामकरण संस्कार में पहाड़ी ब्राह्मण (पुरोहित) आके नामकरण करे लें। सभे ई संस्कार ना करे कुछ भरल-पूरल थारू लोग ई करे ले। एक बरिस, तीन बरिस भा पांच बरिस के उमिर में लड़िका के मुंडन होला। मुंडन में माई-बाप

अपना लड़िका के ले के गुरो के पास जा लें। गुरो खस्सी, कबूतर, दारू, धोती आ नगदी रुपया ले के मंत्र पढ़ के मुंडन करावे लें। कुछ लोग कवनो देवी देवता के मनौती मानले रहे लें त उनको स्थान पर जा के महतारी आ लड़िका नया कपड़ा पहिने लें आ लड़िका के मुंडन होला। थारू लोगन में बियाह तीन तरह के होला- 'गोलावट', 'तीन घरवा' आ 'कनिअउती'। गोलावट में लेन-देन ना होला। जे आपन लड़की दोसरा के लड़िका के देवेला ऊ अपना लड़िका ला ओकरो से लड़की लेवे ला। तीन घरवा में तीन घर में संबंध जोड़ल जाला। कनिअउती में लड़की खरीदल जाला। एह में लड़की के दहेज दिहल जा ला, बाकिर एकरा के दहेज ना कनिअउती कहल जाला। दुलहा उज्जर धोती, कुरता, पगड़ी आ गरदन में हँसुली पहिन के बियाहे जा लें। बैलगाड़ी पर मरद-मेहरारू का संगे-संगे लड़िकनो गीत गावत बरियात जा लें। सेनुरदानो के रेवाज दू तरह के बा। कतहूँ-कतहूँ ससुराल अइला पर सेनुर दिहल जाला। पहिला दिन बरियात के उपासे राखल जा ला। दोसरका दिन खिया-पिया के बिदा कइल जाला। नया-न्योचार मेहरारू लड़की के जबरदस्ती बैलगाड़ी पर चढ़ा के बिदा करे ली आ कुछ दूर तक संगे-संगे जाली सन। लड़की ससुरार में एक रात भा तीन दिन रहे ली। बाद में भाई भा बाप जाके बोला लावे लन। फेर कातिक में अँजोरिया एकादशी के गाँव के लड़की लोग ओकरा ससुराल पहुँचा आवे ली।

मजदूरन के मजदूरी का रूप में दिन भर के चार 'हटहकी' अनाज दिहल जाला आ दुपहर में भर पेट पनपिआव। जवन मजदूर हरवाही करे ले ओकरा तीन बेर खाना आ चार हटहकी अनाज दिआला। घर में एगो मरद मालिक होला, जे सभन के काम अरहावे ला। आउरी मरद लोग हरवाही, गाय-भईंस-बैल के खिआवे, चरावे, रोपनी के काम करे लें। लड़की लोग घर-दुआर बहारे-सोहारे के, गोबर साफ करे के, लड़िका खेलावे के आ मेहरारू लोग धान कूटे के, चक्की चलावे के, खाना बनाबे के, कलेवा पहुँचावे के काम करे ली। बूढ़-पुरनिया औरत बच्चा के लालन-पालन में मदद करेली आ बगइचा के रखवारी करे ली।

कुल मिला के थारू लोगन के लोक जीवन पुरान परंपरा से जुड़ल बा। थारू लोग अपना सामाजिक मान्यता में निष्ठा राखे लें आ प्राकृतिक सम्पदा से संतुष्ट रहे लन। लोक गीतन में उनकर सामाजिक जीवन के धड़कन मिलेला। थारू लोग के जिनगी जादे करके कृषि प्रधान ह। फसल कटाई के बाद इ सब लोग मिल-जुल के गावे-बजावे आ नाचे लें। इनका नृत्य के 'झुमरा' कहल जाला।

शब्द भंडार-

शब्द भंडार-

तराई- पहाड़ के निचला मैदानी भाग

अंधविश्वास- बिना सोचले बुझले कवनो बात पर विश्वास कइल

थरूहट- थारू जाति के लोगन के निवास स्थान

दुआर- घर के बाहर वाला जगह

गँवे-गँवे- धीरे-धीरे

दालान- घर के बाहर वाला बइठका

नीमन- बढियाँ

चउरठ- चाउर के आँटा

डेहरी- कोठिला

भरौचा- अनाज राखे वाला लमहर घड़ा

चउका- रसोई घर

परेवा- कबूतर

खस्सी- पाठा

पंच मेवा- छुहाड़ा, नारियल, काजू, किसमिस आ मखाना आदि के मिश्रण

पुतरी पावन- थारू जाति के एगो परब

पिंडवारी- पितृपक्ष

पुतरी– कपड़ा से बनल गुड़िया

आनन्दी धान– धान के एगो विशेष प्रकार

चौताल– एक प्रकार ताल

सोहर– लइका के जनम पर गावे वाला गीत

मुंडन– माथ मुड़ावल

कनिअउती– बिआह के एगो प्रकार

हँसुली– गरदन में पहिरे जाने वाला एगो गहना

बरियात– बारात

हटहकी– थारू जाति के प्रचलित अनाज तउले के एगो इकाई

हरवाहीं– हर चलावे के काम

तरखा खरना– परब के पुरनाहुति के बाद वाला भोजन

पनपिआव– जलखई।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. हिमालय पहाड़ के निचलका मैदानी भाग के का कहल जाला ?

(क) हिमालयी मैदान (ख) समतल

(ग) तराई (घ) मैदानी

2. बिहार में थारू लोग अधिका संख्या में कहवाँ बसल बा ?

(क) सारण (ख) वैशाली

(ग) कैमूर (घ) पश्चिमी चम्पारण

3. थारू लोगन का घर से बहरी का रहेला जवना में जानवरन के राखल जाला ?

(क) दलान (ख) ओसारा

(ग) आंगन (घ) बधार

4. थारू लोगन का घर में अनाज राखे वाला बड़हन-बड़हन घइला होला जेकरा कहल जाला-

(क) डेहरी (ख) भरौचा

(ग) महाघइला (घ) एह में से कवनो ना

5. थारू लोग कुल देवता का रूप में पूजेलन-

(क) बढ़म (ख) मनुसदेव

(ग) महावीर (घ) रसोगुरो

6. जवन कथन सांच होखे ओकरा सामने कोष्ठक में (✓) चिह्न लगाईं, जे सांच न होखे ओकरा सामने कोष्ठक में (✗) चिह्न लगाईं।

(क) मनुसदेव के पूजा में परेवा के बलि दिया ला। ( )

(ख) बढ़म के पूजा सामूहिक रूप से कातिक में होला। ( )

(ग) लड़का लोग पुतरी पावन मानवे लें। ( )

(घ) पुतरी पावन में आनन्दी धान के लावा, खाइल जाला। ( )

(ङ) थारू लोग तंत्र-मंत्र, जादू टोला में विश्वास करे लें ( )

7. अधिका से अधिका दू वाक्यन में उत्तर दीहीं -

(क) बिहार में थरूहट केकरा कहल जाला ?

(ख) डंडहर घर कइसन होला ?

(ग) थारू लोग होली में सम्मत जरावे का पहिले का करेला ?

(घ) सोहराई का ह ?

8. वन देवी के पूजा के करेला ?

9. थारू लोग केकर-केकर पूजा करेला ?

10. कम-से-कम दस पंक्ति में उत्तर दीहीं-

(क) थारू जाति के औरत लोग आपन घर कइसे राखेली ?

(ख) थारू लोग के बियाह के प्रथा के वर्णन करी ?

भाषा ज्ञान-

'लड़िका घर जाला' सरल वाक्य ह काहे कि एमे एके गो वाक्य ह कवनो दोसर आश्रित वाक्य नइखे।

'ई ऊ लड़िका ना ह जे इहवाँ से भागल रहे' मिश्र वाक्य ह काहे कि ''जे इहवाँ से भागल रहे'' एगो आश्रित वाक्य जुड़ल बा।

'ऊ लड़िका आइल आ ओकरा आते बिजली बुता गइल' संयुक्त वाक्य ह काहे कि ए में दू गो वाक्य अव्यय से जुड़ल बा।

❋ नीचे दिहल वाक्यन में सरल, मिश्र आ संयुक्त वाक्य चुनके लिखीं-

थारू जनजाति के लोग बहुत पिछड़ल बा। थारू लोगन के घर माटी के होला आ औरत लोग के कइल ओपर सुन्दर चित्रकारी रहेला। थारू लोगन में वनपसार एगो पर्व ह जवना से जंगल में गइअन के रक्षा होला। पहिला दिन बरियात उपासे राखल जाला आ दुसरका दिन खिया-पिया के बिदा कइल जाला। घर में एगो मरद मालिक होला जे सभन के काम अरहावे ला।

परियोजना कार्य-

1. थारू जनजाति जइसन कवनो आउर जाति के बारे में जानत होखीं त लिखीं।

अध्याय– सात

- रिपुञ्जय निशान्त -

भोजपुरी के जानल–मानल गीतकार रिपुञ्जय निशान्त के जन्म सीवान जिला के देवरिया (महाराजगंज) निवासी श्री नवल किशोर प्रसाद आ श्रीमती लीलावती देवी के पुत्र के रूप में 4 मार्च, 1950 के भइल रहे। इहाँ का दर्शनशास्त्र आ विधिशास्त्र के शिक्षा ग्रहण कइनीं बाकिर हिन्दी आ भोजपुरी के कवि के रूप में इहाँ के आपन एगो अलगा पहचान बा। 'निशान्तजी' के हिन्दी काव्य संग्रह 'सुधियों के पाँव' आ भोजपुरी काव्य संग्रह 'आवे याद बसेरा' चर्चित रचना बा। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' समकालीन भोजपुरी साहित्य', 'कविता', 'कोइल' आदि पत्रिकन आ आकाशवाणी पटना के 'आरती' कार्यक्रम का माध्यम से इहाँ के गीत आ गजल प्रकाशित–प्रसारित होला। 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन', 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन', 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन' आदि साहित्यिक संस्थन से इहाँ का जुड़के भोजपुरी के विकास में लागल बानी।

विषय प्रवेशः–

'नाचे बुन्नी सावन में' 'निशान्तजी' के भोजपुरी काव्य संग्रह 'आवे याद बसेरा' से लिहल एगो सुंदर ऋतु गीत ह जवना में सावन के मनभावन महीना में गाँव के चिरई–चुरूंगन, खेत–खरिहान, बिहॅसत धरती, बरसत मेघ के इन्द्र धनुषी सौन्दर्य निहारत झूला आ कजरी के सांस्कृतिक स्वरूप के मनोहारी चित्रण बा।

नाचे बुन्नी सावन में

बादल गरजे आसमान में
धरती बिहँसे ले मन में
नाचे बुन्नी सावन में
गाँव–नगर–घर–टोला चहके
गावे गीत चिरइया

इन्द्रघनुष चढ़ बदरा आवे
थिरके कृष्ण-कन्हइया
ऐनक चमका के चउँकावे
बिजुरी श्याम सघन घन में
नाचे बुन्नी सावन में।
सूखल खेत भरल पानी से
माटी में रस भीनल
बहुरल परती में हरियाली
देख-देख मन रीझल
झुला लगे कदम के डाढ़ी
कजरी गूँजे बागन में

नाचे बुन्नी सावन में।

दिन के उठते घर के सीमा
लाँघ चँवर के ओरी
हर के हार पहिर, निकलल घर-
से बैलन के जोड़ी
रोपत धान सुहावन लागे
गाँव जुटल बा खेतन में
नाचे बुन्नी सावन में।

शब्द भंडार-

बिहँसे ले- हँसे ले, खुशी प्रकट करे ले
बुन्नी- मेघ के बूंद
चहके- खुश हो ले
इन्द्रधनुष- पनसोखा (मेघ बरसला के बाद आसमान में सात रंग के धनुष के आकार के आकृति)
बदरा- बादल, मेघ
थिरके- धीरे-धीरे नाचल
ऐनक- ऐना, शीशा
चउँकावे- अचम्भित करे
बिजुरी- बिजली, तड़का, लउका
सघन- घनेर
नजदीक- निअरे
घन- बादल

भीनल– भींजल

कजरी– एक प्रकार के गीत

परती– बिना फसल के खाली जमीन

कदम– एगो फल के पेड़

डाढ़ी– डाली, डाढ़

बागान– बगइचा, फुलवारी

लांघके– टप के, फान्द के

चॅवर– ऊ गहिर जमीन जहवाँ पानी लागल रहे ला

हार– माला

सुहावन– अच्छा, मन के भावे वाला।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. **रिपुञ्जय निशान्त के जनम कवना जिला में भइल रहे ?**

   (क) सारण (ख) आरा

   (ग) सीवान (घ) वैशाली

2. **'नाचे बुन्नी सावन में' कवना ऋतु के वर्णन बा ?**

   (क) बसंत (ख) वर्षा

   (ग) शिशिर (घ) शरद्

3. **बादल कब गरजे ला ?**

   (क) गरमी में (ख) बसंत में

   (ग) सावन में (घ) आसिन में

4. 'नाचे बुन्नी सावन में' कविता केकर लिखल बा ?

(क) अशान्तजी (ख) प्रभातजी

(ग) अंशुमानजी (घ) निशान्तजी

5. सावन में आसमान में का चमकेला ?

(क) सूरज (ख) चन्द्रमा

(ग) तरेगन (घ) बिजुरी

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. सावन में कवन-कवन चीज चहके ला ?
7. सावन में गाँव के लोग जुट के खेत में का करे ला ?
8. सावन में सूखल खेत आ परती में कवन परिवर्तन होला ?
9. झूला कहवाँ लागेला आ कजरी कहवाँ गूंजे ला ?
10. बादल कहवाँ गरजेला आ धरती कहवाँ बिहँसे ली ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

11. 'नाचे बुन्नी सावन में' कविता के भावार्थ लिखीं।
12. सावन के बारे में कवि का-का अनुभव करेला ?

भाषा ज्ञान-

नीचे दिहल शब्दन के विलोम लिखीं

सूखल, गाँव, दिन, भरल

परियोजना कार्य-

1. सावन महीने के जइसन फागुनो मनभावन होला। कइसे ?
2. 'नाचे बुन्नी सावन में' ऋतु गीत बा। अइसने कवनो दोसर कवि के ऋतु गीत लिखीं।

अध्याय– आठ

- पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय -

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायजी के जन्म 3 मार्च, 1911 में बिहार के बक्सर जिला में कुल्हरिया गाँव में भइल रहे। अइसे त इहाँ का पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहीं। बाकिर भोजपुरी परिवार पटना के प्रमुख आधार स्तंभ रहीं। इहाँ के भोजपुरी के एगो जानल मानल साहित्यकार का सँगे-सँगे भोजपुरी अकादमी आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक सदस्यन में रहीं। भोजपुरी के प्रसिद्ध पत्रिका 'अँजोर' के सम्पादक के रूप में पाण्डेय जी भोजपुरी के जवन सेवा कइलीं उ भुलावल ना जा सके।

'वन्देमातरम्' निबंध पाण्डेयजी के साहित्य के एगो महत्वपूर्ण दस्तावेज बा। एह निबंध में 'वन्देमातरम्' के इतिहास का संगे-संगे राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, पौरुष आ शक्ति के भी चित्रण बा।

वन्देमारतम्

स्वतंत्र देशन के आपन एगो झंडा आ एगो गीत होला। झंडा के राष्ट्रीय झंडा आ गीत के राष्ट्रीय गीत कहल जाला। आजाद देश के दूनो चीज एकदम जरूरी ह। झंडा ओह देश के संस्कृति सभ्यता, धार्मिक भावना आ राजनीतिक चेतना के प्रतीक होला। ओइसहीं राष्ट्रीय गीत ओह देश के संस्कृति, परंपरा, रहन-सहन, सामाजिक आ धार्मिक चेतना के एगो छोट-मोट इतिहास होला।

झंडा में एगो चिह्न उगावल रहेला, जे ओह देश के गौरव, गरिमा के याद दिलावे ला। झंडा के ऊँचा राखेला देशवासी आपन हर तरह के बलिदान करेले जे इतिहास बतावता। भारत के झंडा में अशोक चक्र के चिह्न आ रंग-तिरंगा (केसरिया, उजर आ हरियर) दीहल बा। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के नियम ह कि हर आजाद देश दोसरका आजाद देश के झंडा

अपना किहाँ राखी आ विशेष अवसर पर अपना झंडा के संगे ओहू देश के झंडा फहराई।

ओइसहीं हर आजाद देश दोसरा देश के राष्ट्रीय गीतन के अपना किहाँ, आ अवसर विशेष पर अपना देश के गीत के संगे ओकरो के बजा के गावे ला। एकरा से आपस में भाई चारा के रिश्ता कायम होला। झंडा आ गीत ओह देश के त्याग, तपस्या, संस्कृति, सामाजिक, राजनैतिक आ धार्मिक चेतना के प्रतीक होला। जड़ आ चेतन प्रकृति के दूगो अवलम्ब ह। झंडा में देश के जड़ प्रकृति रहेला आ गीत में चेतन।

राष्ट्रीय गीत में देश के स्वतंत्र भावना गूंजेला। जब तक भारत स्वतंत्र ना रहे- कवनो गीत के राष्ट्रीय गीत के मान्यता ना मिलल रहे। जब देश आजाद भइल त रवीन्द्रनाथ ठाकुर रचित 'जन-गण-मन...' के राष्ट्र गान के मान्यता मिलल, बाकिर एकरा संगे 'वन्देमातरम्' के भी राष्ट्रीय गीत के दर्जा दीहल गइल। 'वन्देमातरम्' एगो संस्कृत शब्द ह जेकर माने होला 'माई हम तोहरा के प्रणाम करत बानी। एह गीत के रचयिता बंगाल के नामी-गिरामी उपन्यासकार वंकिम चन्द्र चटर्जी रह लें। एकर रचना उहाँ का आपन उपन्यास 'आनन्दमठ' में कइले रहलीं। 'वन्देमातरम्' गीत ढेर लमहर बा। बाकिर जेतना राष्ट्रीय गीत का मद मं लियाइल बा ओतना नीचे दियाता-

वन्दे मातरम्
सुजलां-सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम् ।।
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम् ।।

''तोहरा के माता नमस्कार करतानी हम, जे उत्तम, मीठ, मधुर जल से समृद्ध रुचिर अनेक फल से सम्पन्न, दक्षिणी मलय पवन से शीतल आ नाना प्रकार के फसल आ वनस्पति से भरल पूरल बा। नमस्कार करतानी माँ विशाल चाँदनी का गुदगुदी से भरल रात वाली खिलल फूलन संगे पेड़न का पाँति से शोभामयी, जेकर मुस्कान मधुर ह, आ जे सुख देबे वाली वर देबे वाली ह।''

'जन-मन-गण...' के राष्ट्रीय गीत के रूप में एह से मान्यता दिहल गइल कि वोह में भारत के हर प्रांत के चित्रण रहे। उ पूरा देश के प्रतिनिधित्व करत रहे। वन्दे मातरम् के ई वन्दना भारतमाता के वन्दना ह, जेकरा एक गीत में मूर्तिमान कइल गइल बा। 'आनन्दमठ' उपन्यास में लेखक एह गीत के 'संतान' नामक सन्यासियन के मुँह से गववले बाड़ें। जे घर-बार छोड़ि के आपन सर्बस भारत माता के वेदी पर न्योछावर के देले रहे आ देश सेवा के व्रत लेले रहे। ओकरे के उपन्यास में 'संतान' के संज्ञा दियाइल बा। अपना उपन्यास में एह गीत के लिख के वंकिम बाबू देशवासियन के एगो अपूर्व संदेश आ दर्शन दिहलीं। किताब के प्रकाशन 1882 में भइल बाकी अइसन कईगो सबूत मिलेला जे से ई बुझाला कि ई गीत 1875-76 में लिखाइल रहे। सफल साहित्यकार वंकिम बाबू एह कविता में अइसन सुंदर राष्ट्रीय भाव भरले बानी कि पढ़ते मन-प्राण झुमि उठेला, मगन हो जाला। युग-युग खातिर एगो पवित्र संदेश एह गीत में गुंथाइल मिलेला।

'आनन्दमठ' जब पुस्तक रूप में छपि के वन्देमारतम् गीत का साथे आइल त पढ़निहार का मन-प्राण में बिजली फूँक दिहलस। नस-नस में शक्ति राष्ट्रीयता आ पौरुष के शंखनाद सुनाइल। वन्देमातरम् का प्रचार-प्रसार का साथ देश में जे राष्ट्रीयता के भावना उगे लागल, ओकरा के विदेशी सरकार सह ना सकल। ब्रिटिश सरकार ओह गीत पर किसिम-किसिम के प्रतिबंध लगावे लागल गीत के लोकप्रियता एतना बढ़ल कि सरकार कठोर दमन नीति के सहारा लेले रोके लागल। बाकिर वन्देमारतम् के जादू का हिन्दू, का मुसलमान, सिख, ईसाई सब का माथा चढ़ि बोले लागल। जतने एकरा पर दमन नीति के

कठोरता होखे लागल, ओतने एकर आगि धधके लागल आ ई गीत आजादी के एगो महामंत्र बनि गइल।

राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार खातिर कलकत्ता में 1905 में 'वन्देमातरम्' नाम से एगो संस्था के स्थापना भइल। इ संस्था हर एतवार के झंडा का संगे जुलूस निकाले। लोग कहेला रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी एह जुलूस में शामिल होत रहीं। बाद में महान् क्रांतिकारी बिपिनचन्द्र पाल 1906 में वन्देमातरम् गाँव से एगो अखबारो निकलले।

वन्देमातरम् अपना राष्ट्र के गौरव मर्दानगी के नमूना आ त्याग-तपस्या के प्रतीक, स्वतंत्र भारत के पहरूआ बनि युग-युग तक भारत के रक्षा करी।

शब्द भंडार-

राष्ट्रीय- राष्ट्र से संबंधित, राष्ट्र के
संस्कृति- रीति-रिवाज
अंतर्राष्ट्रीय- देश-विदेश स्तर के
अशोक चक्र- सारनाथ के अशोक स्तंभ पर के चक्र के निशान
गौरव- सम्मान
चेतना- ज्ञान, होश, भावना
उपन्यास- गद्य के एगो प्रकार, एगो विधा
वनस्पति- पेड़-पौधा
विशाल- वड़-भव्य
न्योछावर- लुटावल
संदेश- संवाद, समाचार
गुंथाइल- पिरोवल, गूंथल
पौरुष- मर्दानगी

शंखनाद– घोर गर्जना, शंख बजा के कार्यारम्भ के घोषणा

पहरूआ– पहरा देबे वाला, रक्षा करे वाला।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. रिक्त स्थानन में उपयुक्त शब्द भरीं–

(क) भारत के झंडा में ..... के चिह्न बा।

(ख) प्रकृति के दू गो अवलम्ब ह, जड़ आ .....।

(ग) 'जन–गण–मन...' राष्ट्र गान के रचयिता ..... रहलें।

(घ) 'वन्देमारतम्' गीत ..... उपन्यास में बा।

(ङ) वन्देमातरम् के रचयिता ..... रहलें।

2. आनन्दमठ उपन्यास में वन्देमातरम् गीत केकरा मुँह से गवावल गइल बा ?

(क) वंकिम चन्द्र (ख) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(ग) 'संतान' सन्यासियन (घ) अंगरेजन

3. आनन्दमठ उपन्यास में आपन सर्बस भारत माता का बलिवेदी पर न्योछावर करेवाला के का कहल गइल बा ?

(क) देशभक्त (ख) संतान

(ग) क्रांतिकारी (घ) देशवासी

4. आनन्दमठ उपन्यास के प्रकाशन कब भइल रहे ?

(क) 1975 (ख) 1876

(ग) 1882 (घ) 1857

5. जब वन्देमातरम् के प्रचार-प्रसार से देश में राष्ट्रीयता के भावना उगे लागल त विदेशी सरकार का कइलस?

(क) गीत के किताब जरा दिहलस

(ख) गीत पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगवलस

(ग) गीत के शिकायत कइलस

(घ) एह में से कुछ ना कइलस।

6. वन्देमातरम् के स्थापना 1905 में कहवाँ भइल रहे ?

(क) नागपुर (ख) दिल्ली

(ग) जयपुर (घ) कलकत्ता

लघु उत्तरीय प्रश्न-

7. झंडा कवनो देश के केकर प्रतीक होला ?
8. वन्देमातरम् के का अर्थ होला ?
9. वन्देमातरम् गीत पढ़निहार का मन पर का प्रभाव डाले ला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

10. 'वन्देमातरम्' के जवन अंश राष्ट्रगीत में बा ओकर अर्थ लिखीं।
11. राष्ट्रगान आ राष्ट्रीय झंडा के महत्व के वर्णन करीं।

भाषा ज्ञान-

1. नीचे दीहल कई शब्दन के बदले एक शब्द दीं जइसे -

जे देश के भक्त होला ओकरा ला देशभक्त शब्द बा।

(क) जे कवनो चीज लिखेला -

(ख) जे कविता करेला -

(ग) देश में बसे वाला –

(घ) राष्ट्र से संबंधित –

(ङ) समाज से संबंधित –

2. 'अंग–अंग' व्याकरण से पुनरुक्ति ह जे मे एक शब्द बार–बार आइल बा। एक पाठ से दूगो पुनरुक्ति के उदाहरण चुनीं।

पाठ से बहरी-

भारत के राष्ट्रगान लिखीं।

परियोजना कार्य-

1. 'वन्देमातरम्' गीत के सामूहिक रूप से गायन प्रस्तुत करीं।

अध्याय– नौ

- एह पाठ के निर्माण पाठ्य-पुस्तक विकास समिति द्वारा भइल बा -

विषय प्रवेशः-

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर भोजपुरी के एगो अइसन व्यक्तित्व रहलन, जे ना के बराबर पढ़ला-लिखला के बावजूद साहित्य में आपन महत्वपूर्ण योगदान देलन। भिखारी ठाकुर समाज में फइलल कुल्हि प्रकार के कुरीतियन के यथार्थ के विषय बना के ओह पर जोरदार प्रहार कइले बाड़न।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर

गंगा-घाघरा के संगम पर एगो गाँव वा कुतुबपुर दियारा। एही गाँव के गुदरी के लाल रहले भोजपुरी के शेक्सपीयर आ जानल मानल नाटककार भिखारी ठाकुर। उहाँ का नाटककारे ना रहीं, बलुक कवि आ अभिनेतो रहीं। एह कालजयी लोक कलाकार के जनम 18 दिसम्बर, 1887 में भइल रहे। नौ बरिस के उमिर में पढ़े के प्रयासो कइलन, त साल भर में कुछ ना आइल। आखिर गरीबी के कारण छूरा-कइंची ले के नाई के आपन पुश्तैनी धंधा शुरू कइले। एहु में मन ना रमल त कमार खातिर कलकत्ता गइलें। पहिले खड़गपुर फेर मेदनीपुर। मेदनीपुर में जात्रा आ रामलीला देखे के मौका मिलल। रामलीला के इनका मन पर गहिर छाप पड़ल। इनका भीतर के कलाकार जाग उठल। सुरीला कंठ आ अभिनय के अजगुत गुण इनका ईश्वरीय वरदान के रूप में मिलल रहे। अपना लड़काई के मित्र रामानन्द सिंह से मिलके रामलीला मंडली बनवलन। रामलीला के केहू सराहल केहू दूसल केहू आउर नीमन से जमावे के कहल। बाकिर एकरा से घर-परिवार चलावल कठिन रहे। पढ़ल-लिखल त नाहिए के बराबर रहलन बाकिर तुलसीदास के रामचरित मानस के दोहा आ चौपाई खूब इयाद रहे। खूब रेघा के ओकरा के अपना मधुर कंठ से गावस। लगभग तीस बरिस के उमिर में उहाँ का एगो आपन नाच मंडली बनाके कमाए के धंधा शुरू कइनी। आपन कविताई आ भीतर छिपल साहित्यिक प्रतिभा से ओह समय के समाज में फइलल कुरीतियन, समस्यन, दुर्गुनन के विषय बना के लोक नाटक बनावे आ मंच पर खेले लगलन। भिखारी ठाकुर के भले छंद शास्त्र के पूरहर जानकारी ना रहे, बाकिर ओह बेर के करीब-करीब सब धुन आ छंद जइसे, चउपाई, सोहर, बिरहा, पचरा, निरगुण, जँतसार, झूमर, आल्हा? चउबोला, पूरबी आदि के इहाँ के सफलतापूर्वक प्रयोग कइले बानी। जहवाँ कबीर के कविता आध्यत्मिक बा ओहिजा भिखारी ठाकुर के कविता में लोक-परलोक दूनू के चिंतन बाटे। अपनहुँ, नाटक के एगो नीमन पात्र रहले। अइसे त 'बिरहा बहार' से 'मातृ-भक्ति', 'श्रीराम रतन' तक बहुते

गीत आ नाटक लिखनी, बाकिर 'विदेशिया' के एगो अलगा स्थान मिलल। गरीबी आ कंगाली के कारण जब आदमी दहेज के दानव से ना लड़ सके त बेटी बेचे के घृणित कामों करे से ना चुके। एकरा कारण बेमेल बियाहो होत रहे। भिखारी ठाकुर एकरे पर 'बेटी बेंचवा' आ 'बेटी वियोग' नाटक में बेटी के दरद उजागर कइले। विधवा विलाप में विधवा लोगिन के समस्या 'कलयुग प्रेम' में नशाखोरी के खिलाफ आवाज उठइले। 'गबरघिचोर' में संतान पर माई के आधिकार-देखावल गइल बा त 'विदेशिया' में गरीबी से तंग आ के परदेश जाये के, उहाँ जाके अपना मेहरारू तक के बिसर जाय के दुखद कहानी मिले ला।

ओह जमाना में भिखारी ठाकुर के नाच देखे खातिर दस-दस हजार के भीड़ जामा होत रहे। एगो समय आइल जब उनकर नाम आसमान छुए लागल। अइसे त उनका कतना सम्मान आ पदवी मिलल बाकिर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के कहल कि ऊ सचमुच 'अनगढ़ हीरा रहले।' उनकर सबसे बड़ सम्मान रहे। 10 जुलाई, 1971 के इनकर निधन भ गइल। आजु भले उहाँ के नइखीं बाकिर उनकर भोजपुरी नाटक आ गीत, भोजपुरी भाषा के धरोहर मानल जाला।

शब्द भंडार-

गुदरी के लाल- गरीबीयो में जी के तरक्की कइल, महान बनल
कालजयी- जे कर नाम-काम बहुत दिन तक रहे, जे काल के जीत ले
प्रयास- कोशिश
संगम- उहवाँ दू भा दू से अधिका नदी मिलेली
अजगुत- अचंभित करे वाला
सराहना- बड़ाई
मधुर- मीठ
चिंतन- सोच-विचार
नीमन- अच्छा, बढ़िया
दानव- राक्षस
घृणित- खराब, घृणा करे लायक
मेहरारू- औरत, जनाना
सम्मान- इज्जत, आदर
निधन- मउअत
धरोहर- थाती।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. भिखारी ठाकुर के जनम कवना जिला में भइल रहे ?

(क) चम्पारण (ख) सारण
(ग) सासाराम (घ) आरा

2. भोजपुरी के शेक्सपीयर केकरा के कहल जाला ?

(क) राम लाल (ख) रामानन्द सिंह

(ग) रघुवीर नारायण (घ) भिखारी ठाकुर

3. भिखारी ठाकुर के जनम कवना गाँव में भइल रहे ?

(क) रामपुर (ख) भिखारी छपरा

(ग) कुतुबपुर (घ) मोहनपुर

4. भिखारी ठाकुर अपना कवना लड़िकाई के दोस्त का संगे मंडली बनवलन?

(क) प्रभुनाथ सिंह (ख) राम लाल

(ग) रामानंद सिंह (घ) राम दास जी

5. सही के सामन कोष्ठ में (✓) के आ गलत के सामने (✗) के निशाल लगाईं।

(क) भिखारी ठाकुर धनी परिवारके रहले। ( )

(ख) 'कलयुग प्रेम' नाटक में दहेज के विरोध बा। ( )

(ग) मेदनीपुर में भिखारी ठाकुर के रामलीला देखे के मौका मिलल। ( )

(घ) भिखारी ठाकुर छंद शास्त्र के जानकार ना रहस। ( )

(ङ) भिखारी ठाकुर के रामलीला में खूब आमदनी रहे। ( )

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. नाटककार के का अर्थ होला ?
7. भिखारी ठाकुर पहिले पहिले कब पढ़े गइलन ?
8. भिखारी ठाकुर के नाच देखेला कतना लोग के भीड़ जुटत रहे ?
9. भिखारी ठाकुर के पुश्तैनी धंधा का रहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

10. भिखारी ठाकुर कवना-कवना कुरीतियन पर प्रहार करत कवन-कवन नाटक लिखले बानी। वर्णन करीं।
11. भिखारी ठाकुर गाँव छोड़ के कहवाँ गइनी आ कइसे-कइसे नाट्य मंडली बनवनी ?

भाषा ज्ञान-

1. विलोम शब्द लिखीं।
   सुरीला, गुण, आपन, गरीबी, विधवा, देश, दुखद
2. नीचे दिहल कई शब्दन के बदले एक शब्द लिखीं।
   (क) जहाँ दू भा दू से अधिका नदी मिलेली
   (ख) खराब रीति-रिवाज
   (ग) राम के कहानी नाटक के रूप में देखावल
   (घ) ईश्वर के दिहल आशीर्वाद

परियोजना कार्य-

1. स्कूल में रामलीला भा भिखारी ठाकुर के कवनो नाटक करीं।
2. भिखारी ठाकुर अइसन कवनो आउरो लोक कलाकार का बारे में खोज के लिखीं।

अध्याय– दस

- सूर्यदेव पाठक 'पराग' -

भोजपुरी भाषा के जानल–मानल कवि सूर्यदेव पाठक 'पराग' के जनम 23 जुलाई, 1943 में सीवान जिला के बगौरा नामक गाँव में भइल रहे।

शुरू से भोजपुरी भाषा के बढ़न्ती ला जागरूक 'पराग जी' हिन्दी आ संस्कृत में एम.ए. बानी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'पराग जी' भोजपुरी भाषा में अनेक विधन में रचना कइले बानी। 'अछूत' उपन्यास, 'जंजीर' नाटक, 'प्रश्न–चिह्न' कहानी संग्रह, 'तिरमिरी' लघु कथा संग्रह, 'भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत' (संपादित पुस्तक) आदि भोजपुरी के बहुत वेसकीमती किताब बाड़ी सन।

'पराग जी' शिक्षक रहनी आ उ. वि. मढ़ौरा से सेवा निवृत्त भइलीं। उनका कई गो साहित्यिक पुरस्कार मिलल बा। 1994 में अखिल भा.भो. साहित्य सम्मेलन द्वारा अभयानंद पुरस्कार, भोजपुरी विकास मंडल सीवान के 2005 में भोजपुरी शिरोमणि पुरस्कार आदि इहाँ का पवनी।

विषय प्रवेश–

इहाँ दिहल गइल 'नया समाज' मथेला वाला कविता इनकर रचना 'अलग–अलग रंग' से लिहल गइल बा। एह में नया समाज आ नया भारत के निर्माण में छुआछूत, जातिवाद, अशिक्षा आउर धार्मिक भेदभाव के बाधक मानत एकरा दूर करेके आह्वान बा।

नया समाज

नौजवान हमनी भारत के उन्नत देश बनाएब।
जाति–धर्म–भाषा के झगड़ा
कबहीं खड़ा करब ना,
आपस में टकराव बढ़ावे
अइसन नेंव धरब ना,

मन्दिर–मस्जिद–गिरजाघर–गुरुद्वारा साथे जाएब।
नया समाज बनी, होई ना
केहू पिछड़ा अगड़ा,
ना केहू कमजोर रही
ना केहू होई तगड़ा,
लोगन के मन में छिपके बइठल भय दूर भगाएब।
कहीं खोजलो पर ना लउकी
चोरी आ मुँहजोरी,
केहू के ना चले दियाई
अकड़ आ सीनाजोरी,

गलत राह जाये वालन के सही राह पकड़ाएब।
गाँव-नगर-घर में केहू ना
अब अनपढ़ रह पाई,
शिक्षा का अँजोर से जगमग
घर आँगन हो जाई,
आजादी के सही लाभ जन-जन तकले पहुँचाएब।

शब्द भंडार-

उन्नत- ऊँचा
टकराव- लड़ाई, झगड़ा
तगड़ा- मजबूत
भय- डर
घुसखोरी- बेइमानी से लिहल पइसा
अकड़- घमंड
सीनाजोरी- जोर-जबरदस्ती
अनपढ़- बेपढ़ल-लिखल
अँजोर- रोशनी, प्रकाश
लाभ- फायदा
जन-जन- लोगे लोग, जनता जनार्दन
नेंव- दीवार के जमीन के नीचे वाला हिस्सा
मुँहजोरी- बोली से जबरदस्ती
मथेला- शीर्षक
बेशकीमती- बहुत मूल्यवाला
बढ़न्ती- तरक्की।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. सूर्यदेव पाठक 'पराग' के जनम कवना ईस्वी में भइल रहे ?

(क) 1945 (ख) 1943

(ग) 1931 (घ) 1953

2. 'नया समाज' कविता में केकर आवाहन कइल बा ?

(क) सैनिक (ख) शिक्षक

(ग) नौजवान (घ) मजदूर

3. घर अँगना में अँजोर कइसे होई ?

(क) झगड़ा से (ख) भय से

(ग) शिक्षा से (घ) धर्म से

4. लोगन के मन से का भगावे के बा ?

(क) अकड़ के (ख) धर्म के

(ग) मुँहजोरी के (घ) भय के

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. एक वाक्य में उत्तर लिखीं।

(क) नौजवान लोग भारत के कइसन देश बनावे के चाहत बाड़ें ?

(ख) नौजवान लोग साथे-साथे कहाँ जाई ?

(ग) गलत राह पर चले वाला के कइसन राह दिखाएब ?

(घ) घर अँगना कइसे होई ?

(ङ) जन-जन तक का पहुँचावे के बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

3. (क) नया समाज बनला से कवन-कवन सुधार हो जाई ?
   (ख) शिक्षा के अँजोर से कवन-कवन लाभ होई ?
   (ग) नौजवान लोग साथे-साथे कहाँ जाए के विचारऽ तारे ?
   (घ) भारत के उन्नत देश बनावे ला का-का, जरूरी बा ?
   (ङ) सूर्यदेव पाठक का जन्म कब भइल ?

भाषा ज्ञान-

1. **नीचे दिहल गइल शब्दन के वाक्य में प्रयोग करीं।**
   अनपढ़, घर-आँगन, अँजोर, सीनाजोरी, गाँव-नगर
2. **नीचे दिहल गइल शब्दन में से धार्मिक स्थल चुनीं।**
   देश, मंदिर, नेंव, उन्नत, गुरुद्वारा, समाज, मस्जिद
3. **नीचे लिखल शब्दन के विलोम शब्द लिखीं।**
   अँजोर, गाँव, नौजवान, तगड़ा, पिछड़ा, गलत

परियोजना कार्य-

1. गिरिजाघर आ गुरुद्वारा अपना संगी का संगे जा के उहाँ के प्रार्थना देखीं आ विधि के वर्णन करीं।
2. 'नया समाज बनी' के भाव बताबे वाला एगो दोसर कविता इयाद करीं आ वर्ग में सुनाईं।
3. देश के उन्नत बनावे ला कवन-कवन जरूरी बात बा अपना शिक्षक से बतकही क के जानीं।

अध्याय– ग्यारह

- 'गछउँधी' एकांकी के निर्माण पाठ्य-पुस्तक विकास समिति द्वारा भइल ह -

विषय प्रवेश–

छुआछूत, बाल–विवाह, जनसंख्या बृद्धि, अशिक्षा जइसन कुरीतियन से देश पर पड़े वाला प्रभाव आ ओकरा के दूर करे के संकल्प 'गछउँधी' नामक रचना में बा। एह पाठ से एकांकी विधा के परिचय भी प्राप्त होला।

गछउँधी

पात्रः-

अखिलेश- दसवॉ के छात्र

रजनीश- अखिलेश के सहपाठी

गणेश- एगो हरिजन छात्र नउवा के

सावित्री- गणेश के बहिन अठवॉ के छात्रा

गुरुजी- शिक्षक

घूरन मोची- गणेश के बाबूजी

सुखिया- घूरन के पत्नी

दर्शक- एगो बूढ़ा आदमी

अखिलेश- अरे भाई रजनीश! कुछ सुनल ह। अब इहो दिन आ गइल। जे सोझा बइठत ना रहे ओकरो लड़िका हमनी का संगे बइठी, पढ़ी। घूरन मोची के बेटा गणेश आ बेटी सावित्री के नाम हमनिए के स्कूल में लिखाइल ह।

रजनीश- भाई अखिलेश! एह में अचरज के कवन बात ह। पुरान बात अब भूल जा। अब केहू बड़ भा छोट नइखे। अब छोट जात आ बड़ जात केहू नइखे। सभे बराबर बा। इहे बराबरी त गांधीजी के सपना साकार करी।

अखिलेश- वाह! तू कब से गांधी बाबा के चेला बन गइलऽह। कुल्हि के माथा पर चढ़ा लेवऽ त कुल-खानदान के इज्जत बाची ? जवना से देह ना छुआवत रहीं ऊ अब संगे बइठी, खेली, पढ़ी। इ नीक लागी ?

रजनीश- इ सब कुल्हि बात अब छोड़ दे। आदमी-आदमी बराबर होला। सभे के खून लाले होला। सभे के एके गो भगवान बनइले बाड़न। त केकरो अछूत कहल ठीक नइखे। के बड़ आ के छोट बा इ अब इतिहास के बात हो गइल।

अखिलेश– बात तू जवन कह। बाकिर बड़–छोट के बात छोड़ दिआई त ओकनी के मन बढ़ जाई। उनन्ह के दिमाग असमान चढ़ जाई। हमनी के रहल मुश्कील हो जाई।

रजनीश– तू समझत काहे नइखऽ। समझे के कोशिश करऽ। अब सभकर समान अधिकार बा। सबका शिक्षा पावे के अधिकार बा। एही में समाज आ देश के भलाई बा कि छूआछूत के भूत भगा दीं। ऊँच–नीच, जात–पात के भेद के ताख पर रख दीं।

अखिलेश– इ कबो होई का ? पांचो अंगुरी कबो बराबर हो सकेला ?

रजनीश– पांचों अंगुरी बराबर त ना हो सकी बाकिर पांचो अंगुरी अगर अलगा–अलगा रही, एक दूसरा के सहयोग ना करी त कवनो काम होई ?

(गुरुजी के प्रवेश)

अखिलेश– वाह! रजनीश वाह! हम तोहार दूनो जाना के बतकही सुनत रहली ह रजनीश! तोहार विचार सुन के मन गद्–गद् हो गइल। हिया जुड़ा गइल। तोहरे जइसन आदमी समाज के जोड़ी छुआछूत, ऊँच–नीच के भेद मिटाई। आ वोही दिने बड़–छोट, छुआछूत के दानव मुई। देश में एकता के डोरी मजबूत होखे लागी। देश आगे बढ़े लागी।

रजनीश– अपने का बचपन से जवन विचार हमनी के मन में भरलीं उहे आज फरत–फुलात बा। रउए बताईं आ अखिलेश भाई के समझाईं कि आउर का–का करे के चाहीं जवना से देश आगे बढ़े।

गुरुजी– समाज में छुआछूत, ऊँच–नीच, छोट–बड़ के भेद के अलावे कुछ आउरियो बुराई बा जवना से देश पिछड़ रहल बा। तोहनी के उन्हनियों के जड़ से उखाड़ के फेंके के होई। जनसंख्या बृद्धि, बाल–बियाह, तिलक–दहेज, अशिक्षा आदि अइसने कुरीति बा। एकरा के दूर कइल जरूरी बा।

रजनीश– चलीं गुरुजी! अखिलेश भाई! हमनी के गणेश आ सावित्री के घरे चल के ओकनियो के समझाईं आ संगे लेके आगे बढ़ी।

अखिलेश– चलऽ।

दोसर दृश्य

(सावित्री आ गणेश के घर ओकर माई सुखिया आ बाप घूरन बइठल बतकही करत)

सुखिया (सावित्री के माई)– का भइल? कवनो जोगार बइठल कि ना ? घर में बइठल रहला से कहीं बेटी के बियाह होला। आज काल लड़िका वाला के दिमाग आकासे पर चढ़ल बा।

घूरन (सावित्री के बाप) – खोजते त बानी। बाकिर अपना हाथ में त बा ना। एने सावित्री दिने-राते रोआ-काना ठानले बिया। ओकरा अबहीं पढ़े के मन बा।

(अतने में गुरुजी का संगे अखिलेश आ रजनीश पहुँचऽ ताड़ें)

अखिलेश-रजनीश– (संगे-संगे) पाँव लागी काका! पाँव लागी काकी!

सुखिया आ घूरन– जुग-जुग जीअ! बबुआ लोग!

अखिलेश– **(गुरुजी के देख के संगे-संगे)** पाँव लागी गुरुजी! हमार धन्य भाग अपने ई गरीब के दुअरा अइनी।

गुरुजी– खूब खुश रहीं। कहीं सब समाचार ठीक बा नू।

घूरन– जी गुरुजी! बस ठीके बा। गरीब के दिन कइसहूँ कट रहल बा। इहे सावित्री के बिआह के जोगार में लागल बानी। कइसहूँ बेड़ा पार लाग जाइत।

गुरुजी– सावित्री के बियाह! अबहीं त ओकरा खेले-कूदे, पढ़े के उमिर बा। अबहीं बियाह। आ ऊ लड़की त नीमन पढ़निहार बिया। पढ़ लिख के नाम करी।

घूरन– बात त ठीक बा। बाकिर गरीब आदमी लड़की के जल्दी बियाह ना करी त बड़ी दिक्कत होई। पढ़-लिख जाई त लड़िका त ओकरो से अधिका पढ़ल

खोजे के पड़ी, तिलक–दहेज के हाल देखते बानी।

गुरुजी– सब ठीक बा, बाकिर अब त कानूनो बन गइल बा कि अठारह बरिस से कम उमिर के लड़की आ एकइस बरिस से कम उमिर के लड़िका के बियाह कइल अपराध बा।

घूरन– गुरुजी! हम का करीं बुझाते नइखे। अबहीं समाज के लोग बूझत नइखे। लोग लड़की के बियाह जल्दिए क के गंगा नहा लेबे के चाह ता। एने सावित्री दिने–राते पढ़े ला रोअत बिया।

अखिलेश– भाई गणेश! भाई रजनीश! सावित्री के बियाह अबहीं ना होई। हमनी का ओकरा पढ़े के, आगे बढ़े के मौका देहब। पढ़–लिख जाई त ओकर बियाह हमनी का करब।

रजनीश– काका! तिलक–दहेज के चिन्ता अब छोड़ दीं। सावित्री के पढ़े दीं। आगे बढ़े दीं। अबहीं हमनी का टोला के लोगन के बोला के एगो सभा करऽतानी आ सब बात समझाव तानी।

तीसर दृश्य

(बरगद का पेड़ के नीचे सभा के दृश्य। एगो चउकी पर गुरुजी, रजनीश, अखिलेश, गणेश बइठल वाड़े)

गुरुजी– **(खड़ा होके)** आज हमनी के इहवाँ इकट्ठा भइनी ह एगो जरूरी बात ला। हमनी गरीब लोग कमे उमिर में लड़की के बियाह क के भार टाल देबे लीं। बाकिर इ ना सोंचि ले कि ऊ लड़की के जिनगी खराब हो जाई। कुछ के मउअत हो जाला। जनसंख्या बेमतलब बढ़े लागेला। पढ़े–लिखे में भी बाधा पड़ेला।

दर्शक– **(बीच में उठ के टोकत)**– रउआ लोगन जे कहीं बाकिर हमरा विचार से हमनी का घर में जतने सवाँग आई ओतने कमाई बढ़ी। ओतने आमदनी

बढ़ी। कहल बा जेतने हाथ ओतने काम। तबे न पुरनिया लोग कहत रहलन ह जे एक से एकइस होख। दूधो नहा पूतो फल।

रजनीश- (खड़ा हो के) इ कुल्हि पुरान बात मे छोड़ दीं। जमाना कहाँ से कहाँ चल आइल। तब से गंगा में केतना पानी बह गइल। जनसंख्या के बढ़न्ती देश के पीछे ढकेल रहल ह। ई एगो सामाजिक कुरीति के अंग ह। अशिक्षा, बाल-बियाह एकर असली कारण ह। जनसंख्या बढ़ला से गरीबी, भुखमरी, बेकारी बढ़ेला। ना पढ़ला-लिखला से गरीब गरीबे रह जाला। पुश्त-दर-पुश्त गरीबी के चक्की में पिसात रहे ला। हई बरगद के पेड़ देखतानी न। एकर डाढ़-पात फइलल जाता आ एकरा गछउँघी में कवनो पेड़ अंकुरे ला त कोकर के रह जाला। जनसंख्या वृद्धि, बाल-बियाह, अशिक्षा, दहेज आदि कुरीतियन गछउँघी वा जे देश में विकास के विचरा के पनपे, फरे, फुलाए ना देबे। आई हम सब मिल के एह कुरीतियन के गछउँघी के हटाईं। विकास के अँजोर फइलाईं, आ संकल्प करीं-

छुआछूत भगाएब हमनी बाल-बियाह के रोकब,
जनसंख्या के बान्हव सभनी पढ़-लिख सुखिया होखब।
आईं मिली संकल्प करीं कुल्हि कुरीतियन के झारीं,
प्रेम, एकता, नेह-छोह के दियना एगो बारीं।

(धीरे-धीरे पर्दा बंद हो जाता)

शब्द भंडार-

सोझा- सामने

अचरज- आश्चर्य

अछूत- जेकरा ना छुअल जाये

समान- बराबर

अंगुरी- अंगुली

सहयोग- मदद

बतकही- बातचीत

हया- हृदय

दानव- राक्षस

फरत-फुलात- विकसित होत, बढ़त

रोआ-काना- रोअल

ठानल- जिद्द कइल

पाँव लागी- प्रणाम कइल

जुग-जुग- युग-युग

जीअ- जिन्दा रह

जोगार- जुगत, उपाय

पढ़निहार- पढ़े वाला

अपराध- जुर्म, दोष

टोला- गाँव के एगो छोट भाग, एगो मुहल्ला

मउअत- मृत्यु

बाधा- रूकावट

सवाँग- घर के सदस्य

कमाई– काम से आमदनी

कुरीति– खराब चलन, खराब रेवाज

पुश्त–दर–पुश्त– वंश–परंपरा, पीढ़ी–दर–पीढ़ी

जनसंख्या वृद्धि– आबादी में बढ़न्ती

गछउँधी– गाछ के छाँह जवना में कवनो पेड़–पौधा ना उगे

अँजोर– उजाला, रोशनी

संकल्प– कवनो चीज के प्रण कइल

नेह–छोह– प्रेम

दियना– दीया।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. एह नाटक के मूल भाव ह –

(क) मनोरंजन (ख) नाटक खेलल

(ग) कुरीति मेटावल (घ) जनसंख्या रोकल

2. गछउँधी गद्य के कवन विधा ह –

(क) कहानी (ख) एकांकी

(ग) रेखाचित्र (घ) संस्मरण

3. एह नाटक में गांधी बाबा के चेला के भूमिका के निभावत वा ?

(क) सावित्री (ख) गुरुजी

(ग) दर्शक (घ) रजनीश

4. **'पांचो अंगुरी कबो बराबर हो सकेला' एह पाठ में के कहले बा ?**

(क) रजनीश (ख) गणेश

(ग) अखिलेश (घ) घूरन

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. रजनीश बराबरी के बात केकरा से कहले बाड़न ?
6. स्कूल में केकरा नाम लिखइला पर अखिलेश विरोध करत बाड़न ?
7. घूरन सावित्री के कम उमिर में बियाह काहे करे के चाहत बाड़ें ?
8. एह एकांकी में गछउँधी कवना चीज के प्रतीक बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

9. एह एकांकी के उद्देश्य लिखीं।
10. बाल बियाह से कवन-कवन हानि हो ला ?

भाषा ज्ञान-

विलोम (विपरीतार्थक शब्द) लिखीं

1. पुरान, असमान, भलाई, ऊँच, दानव, जीअ
2. अनेक शब्दन के बदले एक शब्द लिखीं।

(क) लड़िकाई में होखे वाला बियाह

(ख) जेकरा छुअल ना चाहे लोग

(ग) समाज में फइलल खराब रिवाज

(घ) गाछ के छाँह जवना में कुछ ना उगे।

(ङ) सुख भोगे वाला

परियोजना कार्य-

1. वर्ग में बाल बियाह पर वाद-विवाद करीं।
2. प्रेम आ भाईचारा पर एगो भाषण लिखीं।
3. एह एकांकी के स्कूल में लड़िकन संगे खेलीं।

अध्याय– बारह

- पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह -

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के जन्म 19 मई, 1905 के सारण जिला के शीतलपुर में भइल रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इनकर शिक्षा-दीक्षा भइल रहे। द्विवेदी युग के सुप्रसिद्ध साहित्यकार दामोदर सहाय 'कवि किंकर' के सुपुत्र के रूप में साहित्यिक प्रतिभा विरासत के रूप में मिलल रहे। घरौंदा (हिन्दी कहानी संग्रह), खरोंच (भोजपुरी कहानी संग्रह) इनकर प्रकाशित पुस्तक बा एकरा अलावे 'बवाल विनय', 'भारत-गीत', 'ग्राम-जीवन' के सम्पादनों इहां के कइले रहीं। हिन्दी-भोजपुरी के विभिन्न पत्र-पत्रिकन में इनकर सैकड़न कहानी आदि प्रकाशित बा। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ बिहार सरकार के राजभाषा विभाग से इनका सम्मानित कइल जा चुकल बा।

'गुरु-दक्षिणा' कहानी मानव मूल्य परक कहानी बा। एगो छात्र बेरोजगारी के त्रस्त होके चोरी के दुष्कर्म करऽता। बाकिर जब ओकरा पता चलऽता कि चोरावल सामान ओकरा गुरु प्राचार्य डॉ. करमरकर के बा त ओकरा चरित्र में एकाएक परिवर्तन आव ता आ ऊ कुल्हि सामान क्षमा याचना के संगे लौटावे के नीयत से ट्रेन में राख आवऽता।

गुरु-दक्षिणा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साइंस कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर करमरकर सोचलन कि कॉलेज के विज्ञान-यंत्र खुदे पसंद कर के कीनल जाव। एह खातिर ऊ पाँच हजार रुपया ले के कलकत्ता चल पड़ले। एगो सूटकेस में ऊ आपन कपड़ा आ जरूरी सामान के साथ पाँच हजार रुपया के नोट के गड्डी भी रख ले ले आ पहिला दरजा के टिकट ले के आधा रात के गाड़ी में बनारस कैंटोनमेंट टीसन पर सवार हो गइले। एगो बेंच पर ऊ आपन बिस्तर लगवले आ ओही पर सूटकेस रख देले। एकरा बाद ऊ ठाट से सूत गइले।

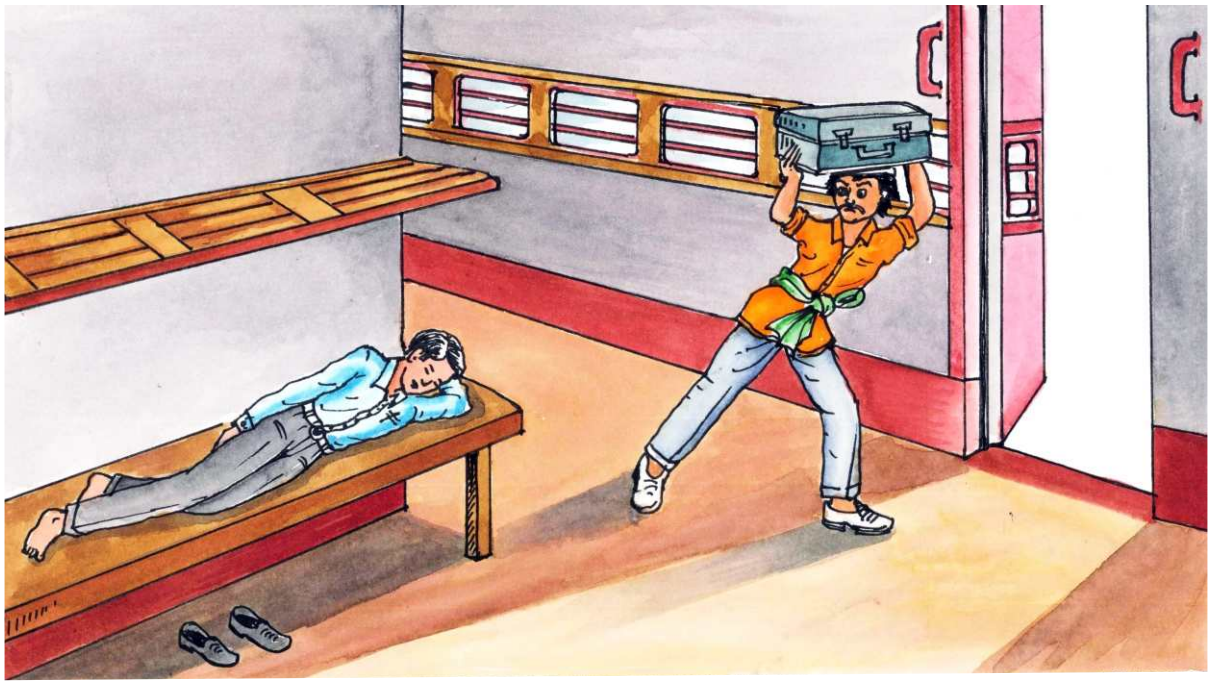

भोरे जब उनकर नींद खुलल त गाड़ी एगो टीसन पर खड़ा रहे। ऊ जब आपन सूटकेस खोलल चहलन त देखलन कि उनकर सूटकेस गायब बा। ऊ बड़ा फेर में पड़ले। कलकत्ता का ओर बढ़स कि इहँवेसे से कौनो ट्रेन से वापस जास। संयोग से उनकर मनी बेग उनका पासहीं रह गइल रहे, जे में आवे-जावे के खरचा के लाएक रुपया रहे, बाकिर कपड़ा आ सामान कीने खातिर पाँच हजार रुपया त ओही बकसा में रहे। कलकत्ता पहुँचला पर बदले खातिर कपड़ा तक उनका पास ना रह गइल रहे। बाकिर फेर कुछ सोच-विचार के ऊ कलकत्ते जाए के तय कइलन। ऊ पुलिस के खबर दे के बेकार के बवाल खड़ा कइल अच्छा ना समुझले, काहे कि रुपया त अब मीले से रहल।

हबड़ा टीसन पर उतर के ऊ एगो टैक्सी कइलन आ अपना इयार प्रोफेसर एस.पी. मुखर्जी के इहाँ चल पड़ले। प्रोफेसर मुखर्जी से मिलला पर ऊ आपबीती उनका से कह सुनवले आ पाँच सौ रुपया उनका से उधार लेले। ओही रुपया से ऊ अपना खातिर कुछ कपड़ा आ जरूरी सामान किनले आ चार सौ रुपया बेयाना दे के कॉलेज खातिर वैज्ञानिक

यंत्र कीन लेले, आ ओह यंत्र सब के पार्सल से भेज देबे के आर्डर दे देले। बाकी रुपया खातिर ऊ दूकानदार के बिल भेज देबे के कहले। प्रोफेसर मुखर्जी के साथ रहला से उनका कवनो दिक्कत ना भइल।

सब काम खतम क के ऊ तीसरा दिने आधा रात के गाड़ी से बनारस खातिर रवाना भइले। अबकी बार ऊ एगो छोटहने चमड़ा के सूटकेस किनले रहले। ओकरा के ऊ अपना सिरहाने तकिया के नीचे दबा के रख लेले रहले। भोरे जब नींद टूटल त पर-पाखाना से निपट लेबे के खेयाल से ऊ बेंच के नीचे उतरलें। उनकर गोड़ एगो बकसा से ठेकल। ऊ देखस, त ई त उनकर उहे बकसा रहे जे चोरी चल गइल रहे। चाभी उनका पास रहबे कइल। तुरते खोल के देखे लगले। देखलन कि उनकर सभ सामान जइसे के तइसे रखल बा- तनिको एने-ओने नइखे कइल गइल। रुपया भी पूरा के पूरा बकसा में मौजूद बा। उनका नाँव के एगो मोहरबन्द लिफाफा सब सामान का ऊपर रखल बा।

ऊ लिफाफा खोल देलन। ओमें से एक सौ रुपया के एगो नोट आ एगो चिट्ठी निकलल जे उनही के लिखल गइल रहे। ऊ चिट्ठी पढ़े लगले-

गुरुजी!

अपने के चरन में हमार प्रणाम पहुँचे। जब हमार साथी लोग एह बकसा के हमरा आगे रखलन त हम देखनी कि ओकरा ऊपर अपने के नाम आ पता लिखल बा। हमनी के चोरी आ डकैती जइसन नीच करम में लागल बानी जरूर, बाकिर जवना गुरुजी के छत्रछाया में रहके हम एम.एस-सी. तक के पढ़ाई पढ़नी उनकर चीज हमरा चाहे हमरा साथी लोग से लूट लेहल जाय, हम एकरा के ना सह सकीं। हमनी अइसने काम में लागल बानी जवना के अपना के सभ्य कहे वाला समाज नीच काम बूझेला; बाकिर अइसन काम करे में हमनी के मजबूरी बा। हम खुदे एम.एस-सी. हईं; हमरा साथी लोग में केहू भी ग्रेजुएट से कम नइखे। तबहूँ हमनी अइसन काम में लागल बानी। काहे ? काहे कि हमारा सामने सवाल बा-हम जीहीं त कइसे ? पापी पेट खातिर हमरा कुछ ना कुछ त करहीं के बा। बाल-बच्चा के

परवरिस कहाँ से होखी ? पढ़ाई-लिखाई में त हमनी में से जादे लोग अपना घरहूँ के आटा गील क चुकल बा। पढ़-लिख के तइयार भइला के बाद हमनी के देखतानी कि हमनी खातिर कवनो कामे नइखे। फेर हमनी के करीं त का ?

अपने के आज्ञाकारी,

अपनहीं के एगो चेला।

फेन- एही लिफाफा में गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने का एक सौ रुपया के एगो नोट पाएब। हम रउरा के बिसवास दिलावत बानी कि ई रुपया अमीर लोग के खजाना से लूटल गइल बा। हमनी का गरीबन के कबहीं ना सताईं। एह से एकरा के कबूल करे में अपने का संकोच मत कइल जाई।

प्रिंसिपल डॉक्टर करमरकर जब हिन्दू विश्वविद्यालय के अपना क्वाटर में घुसलें, त उनकर चेहरा उतरल रहे, आ ऊ अपना ओह बेचीन्हल चेला के पेशा पर गंभीर हो के सोंचत रहले।

शब्द भंडार-

विश्वविद्यालय- उच्च शिक्षा ग्रहण करेवाला जगह
विज्ञानयंत्र- विज्ञान से संबंधित यंत्र
सुटकेस- छोटबक्सा, पेटी
टीसन- स्टेशन
ठाट- आराम से, रोब के साथ
सिरहाना- माथा के ओर
तुरते- झटपट
आपबीती- अपना पर बीतल घटना
बेयाना- कवनो चीज खरीदे ला अगौत रुपया देहल
छोटहन- छोट आकार के

मोहरबंद– बंद सील आइल लिफाफा

छत्र–छाया– शरण, आश्रय

परवरिस– पालन–पोषण

आटा गील कइल– बेकार गइल

गुरु–दक्षिणा– शिक्षा पूरा भइला पर गुरु के देबे वाला दक्षिणा

संकोचाइल– सकुचाइल

क्वाटर– विभाग द्वारा दिहल घर

बेचीन्हल– बिना पहिचानल।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. गुरु–दक्षिणा कवन विद्या से संबंधित बा ?

(क) रेखाचित्र (ख) संस्मरण

(ग) कहानी (घ) कविता

2. प्रिंसिपल डॉ. करमरकर के सूटकेस कहवाँ से चोरी भइल।

(क) कलकत्ता से (ख) बनारस से

(ग) टीसन से (घ) ट्रेन से

3. डॉ. करमरकर कवन काम से कलकत्ता जात रहलन ?

(क) वैज्ञानिक यंत्रन खरीदे खातिर

(ख) एस.पी. मुखर्जी से मिले खातिर

(ग) उधार–रुपया खातिर

(घ) सूटकेस लावे खातिर

4. गुरु–दक्षिणा कहानी के मूल–भाव का बा ?

(क) गरीबी (ख) अमीरी

(ग) सामाजिक विक्षोभ (घ) अमीरी–गरीबी विक्षोभ

लघु उत्तरीय प्रश्न-

5. गुरु–दक्षिणा कहानी का संदेश देत बा ?
6. चोर डॉ. करमरकर के सूटकेस काहे लोटा देहल ?
7. गुरु–दक्षिणा के रूप में डॉ. करमरकर के का मिलल ?
8. कॉलेज के लेले विज्ञान यंत्र खरीदे खातिर पइसा कहवाँ से आइल ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

9. गुरु–दक्षिणा कहानी के सारांश अपना शब्द में लिखीं
10. गुरु–दक्षिणा कहानी के मुख्य पात्र के बा ? ओकर चरित्र चित्रण करीं।
11. डॉ. करमरकर आपन भूलाइल सूटकेस पाके सोचे पर मजबूर हो गइलन काहे ? विस्तार से चर्चा करीं।
12. पढ़ल–लिखल लोग भी चोरी करे पर मजबूर बा काहे ? गुरु–दक्षिणा कहानी के संदर्भ में एकर व्याख्या करीं।

व्याकरण-

नीचे लिखल शब्दन के विलोम लिखीं–

भोरे–

सुतल–

उतरल–

उधार–

छोटहन–

नीच–

नीचे दिहल शब्द के लेल एक शब्द लिखीं।

(क) कवनो चीज चोराएल जालाऽ। जइसे– चोरी

(ख) जवना बैग में पइसा रखल जाला–

(ग) अपना पर बीतल घटना के वर्णन–

अध्याय– तेरह

- बिजेन्द्र अनिल -

'बनारसी प्रसाद भोजपुरी' सम्मान से सम्मानित बिजेन्द्र अनिल के जन्म 21 जनवरी, 1945 के बक्सर जिला के बगेन गाँव में भइल रहे। हिन्दी आ भोजपुरी के विभिन्न पत्र-पत्रिकन सैकड़न गीत, कविता, कहानी, आ निबंध प्रकाशित बा।

'उमड़ल जनता के धार' 'बिजेन्द्र अनिल के गीत' गीत संग्रह आ 'एगो- सुबह-एगो सांझा' भोजपुरी उपन्यास इनकर प्रमुख पुस्तक बा। इहाँ के बक्सर के बगेन गाँव में उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पदो पर रहनी।

'किसान के बेटा' शीर्षक कविता में किसान के जीवन शैली, मेहनत आ दुख: सुख के सटीक आ मार्मिक चित्रण बा।

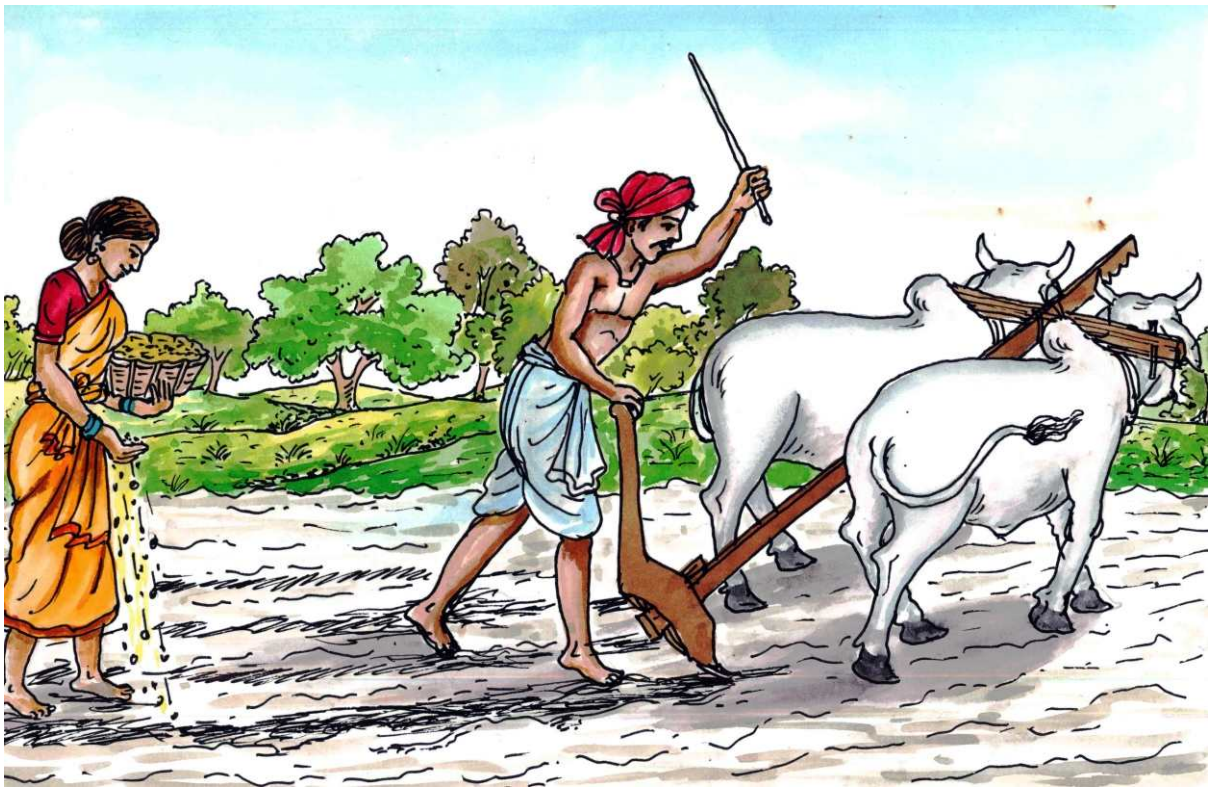

किसान के बेटा

हम किसान के बेटा, धरती मइया हई हमार,
हँसुआ-खुरपी, हल-कुदाल हउए हमार हथियार।
चिरंइन के बोले के पहिले
हम खटिया छोड़ी ला
अपना माल-मवेसिन से
हरदम नाता जोड़ी ला,
बैल हमार हवन से बाजू, बछवा ह पतवार।
खून-पसीना में अब ले हम
फरक कबो नाकइनीं
जाड़ा-गरमी-बरखा के सभ
मार हमेसा सहनीं
चान-सुरूज, बांदर-बिजुली, हउए हमार संसार,
भरल जवानी में हम आपन
खेत अगोरत रहनीं
घाव करेजा के जब टभकल
मेहरि से ना कहनीं
एह जनम में ना जनलीं, रसदार बात-बेवहार,
हम किसान के बेटा, धरती मइया हई हमार।

शब्द भंडार-

मइया- माँ, माई
माल-मवेशी- पशु, जानवर

हरदम– हमेशा

बाजू– बाँह

अगोरत– पहरेदारी करत बइठ के देखत– भालत

करेजा– हृदय

टभकल– पिराइल, टीसल

पतवार– नाव खेवे वाला एगो साधन

बछवा– बछड़ा, गाय के छोट बच्चा

मेहरि– आपन मेहरारू, पत्नी

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. बिजेन्द्र अनिल जी कवना जिला के रहे वाला रहीं ?

(क) भोजपुर (ख) सासाराम

(ग) बक्सर (घ) पटना

2. 'किसान के बेटा' के कवि बिजेन्द्र अनिल कवना विभाग में काम करत रहीं ?

(क) खनन विभाग (ख) आपूर्ति विभाग

(ग) सिंचाई विभाग (घ) शिक्षा विभाग

3. किसान कब खटिया छोड़े लन ?

(क) सूरज उगला का बाद

(ख) बैलन के बोली सुन के

(ग) चिड़ियन के बोले से पहिले

(घ) खाये के सामान के गंध लगला पर

4. किसान भर ल जवानी में कवना चीज के अगोरे ला ?

(क) घर (ख) गहना-जेवर

(ग) गाँव (घ) खेत

5. किसान कवना मौसम के मार सहेला ?

(क) जाड़ा (ख) गरमी

(ग) जाड़ा-गरमी-बरखा (घ) बसंत

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. किसान के हथियार कवन-कवन चीज हो ला ?
7. किसान केकरा से नाता जोड़ लें ?
8. किसान मेहनत करे के बेर कवन-कवन चीज में फरक ना करेला ?
9. किसान केकरा के आपन भाई मानत बाड़ें ?
10. किसान के संसार का ह ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

11. किसान के दिनचर्या के वर्णन करीं।
12. किसान के जिनगी में कवन-कवन दुख उठावे के पड़ेला ? वर्णन करीं।

भाषा ज्ञान-

1. 'हँसुआ-खुरपी' युग्म शब्द बा। अइसन पांच गो शब्द एह कविता से चुन के लिखीं।
2. विलोम शब्द लिखीं।

   जनम, गरमी, जवानी, हरदम, आपन

परियोजना कार्य-

1. कविता के आधार पर किसान पर एगो निबंध लिखीं।
2. किसान से संबंधित कवनो दोसर कवि के एगो कविता खोज के लिखीं।

अध्याय– चउदह

- डॉ. प्रभुनाथ सिंह -

डॉ. प्रभुनाथ सिंह के जन्म बिहार के सारण जिला के मुबारकपुर (मांझी) गाँव में 2 मई, 1940 के एगो किसान परिवर में भइले रहे। इनकर स्वनिर्मित व्यक्तित्व, अनुकरण के लायक बा। गरीबी के दंश झेलत इहाँ का अर्थशास्त्र में एम.ए. तक के पढ़ाई कइनी। पढ़ाई के बाद बिहार विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के विभागध्यक्ष पद तक पहुँचनी। साहित्य में छात्र–जीवन से ही इनका गहिर अभिरूचि रहे। साहित्य का संगे–संगे राजनीति में भी इनका सफलता मिलल आ बिहार सरकार में राज्यमंत्री के पद पवलन। अर्थशास्त्र के पुस्तकन का अलावे हिन्दी आ भोजपुरी में इनकर अनेक कृति बा। हीरा–मोती (काव्य–संग्रह), 'इ हमार गीत' (काव्य–संग्रह) 'गांधीजी के बकरी' (निबंध–संग्रह), 'हमार गाँव : हमार घर' (गद्य–रचना) आदि इनकर प्रसिद्ध रचना बा।

'अली मियाँ' एगो संस्मरणात्मक कहानी बा। एह रचना में सामाजिक सद्भाव के आदर्श चित्रित बा। 'अली मियाँ' हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रतीक बाड़न।

अली मियाँ

पता ना काहे, आज अली मियाँ के इयाद अनसोहातो बार-बार आ रहल बा। दशहरा के छुट्टी के बाद आठ-नव महीना पर गाँव आइल बानी। एक बीच गाँव में बहुत कुछ घटल-बढ़त बा। आवते-आवत, गाँव-घर के लोग कुशल-क्षेम पूछे खातिर दुआर पर टाट बन्हले बा। दशहरा आ गर्मी के बीच के लेखा-जोखा चल रहल बा- के मुअल, के जिअल, केकर बिआह भइल, केकर श्राद्ध, केकर बैल मुअल, केकर गाय बिआइल। एक-एक कर के सभ लोग सुन रहल बा, किसिम-किसिम के बेयान। काठ मार गइल, जब ई पता चलल कि अली मियाँ मर गइले। बिजली के झटका अइसन ई समाचार लागल, जइसे कि गाँव मर गइल, गाँव में केहू जिन्दा नइखे, सब कुछ जर के राख हो गइल। आँख डब-डबा गइल। केहू जीये खातिर नइखे आइल। बहुत लोग एह बीच गाँव में मुअल बा, लेकिन अधिक पीड़ा अली मियाँ के मुअला से काहे बुझाता जइसे आपन बाप मर गइल होखस।

अली मियाँ के चेहरा आँख के सामने नाच गइल- दुबला-पतला शरीर, साठ के पार के ढलत उमिर, चंडुल माथ, हाथ में गोजी आ एक हाथ में थरिया-लोटा, घुटना पर ले धोती, देह में मिरजई आउर माथ पर पगड़ी। अली मियाँ के परिवार रहे, जात-पाँत से ऊपर, आपन घर नाम के चीज भी उनका ना रहे। एगो बाबूसाहेब के दलान में रहत रहन। सम्पत्ति के नाम पर बस लोटा-थरिया, एगो चटाई आ कम्बल, बिछावन के लेवा, कुछ धोती आ मिरजई- मिलाजुला के एक मोटरी के सारा असबाब। भाँजा बान्ह के हर घरे एक टाइम ऊ भोजन करत रहलें। लोग उनका के श्रद्धा से खिआवत रहे। अपने सूखल-पाकल लोग खा लेबे; लेकिन जवना दिन अली मियाँ के खाये के दिन रहे, ओह दिन सुअन्न बने, बड़ा पसंद से। इंतजार रही अली मियाँ के आवे के आ जूठन गिरावे के। इयाद बा। बचपन में लइकन में तहलका रही, आनंद कि आज अली मियाँ खाये अइहें आ कवित्त सुने के मिली। जवना घरे उनका भोजन करे के रही ओकरा दस-बीस कदम पहिले से ही उनकर कवित्त शुरू हो जात रहे-

गहागड करो,

गहागड करो,

मिलाव गहागड, डोलाव गहागड।

गहागड करो, महागड करो

गहागड करो गहागड।

कवित्त कान में पड़ते झुण्ड-के-झुण्ड लइकन के दल टिड्डी अइसन मियाँ केचारो तरफ बटोरा जास। घर के सभे बइठ जाई आ बीच में अली मियाँ के भोजन चलत रही। भोजन समाप्त होते लइकन के गोहार- 'अली बाबा एगो आउर कवित्त, अली बाबा एगो आउर कवित्त' आ हो जइहें चालू एक बार आउर अली मियाँ अपना कवित्त का साथे- 'गहागड करो, गहागड करो...।' एक हाथ में लोटा-थरिया आ एक हाथ में लाठी लेले कवित्त सुनावत आगे-आगे अपना डेरा के राह धइले अली मियाँ आ पीछे-पीछे लइकन के जमात उनका के 'सी ऑफ' करे खातिर।

साल-छव महीना पर दोबारा कवनो घर में अली मियाँ के भोजन करे के भांज लवटत रहे। ऊँच-नीच, धनी-गरीब-सबका घरे बारी-बारी से अली मियाँ के भोजन होखे। आज ले कबहूँ केहू उनका के खिआवे में भार ना महसूस कइल। लोग का ईहे बुझाइल कि अली मियाँ के चरण अइला से घर पवित्र हो गइल। अली मियाँ ना हिन्दू रहले, ना मुसलमान, बस मात्र एक इंसान। लोग बेआन करे लागल कि जवना दिन अली मियाँ मुअले, गाँव के कवनो घर आँच ना बराइल। झमेला खड़ा हो गइल। मुसलमान लोग कहे कि अली मियाँ मुसलमान के घर पैदा भइल रहले, एह से गाड़ल जइहें। हिन्दू लोग कहे कि अली मियाँ के शरीर में हिन्दू के अन्न के रक्त रहे, एह से अली मियाँ जरावल जइहें आ हिन्दू रीति-रिवाज से उनकर श्राद्ध करम होई। गाँव में पंचायत बटोराइल आ फसिला भइल कि अली मियाँ के लाश कब्र में दफना दिआव आ सोलह दिन का बाद हिन्दू रीति-रिवाज से उनकर श्राद्ध-करम कइल जाव।

सारा गाँव पइसा-अनाज एकट्ठा कर के बड़ा धूम-धाम से अली बाबा के श्राद्ध कइल। तीन दिन तक भंडारा चलत रह गइल। पूरा जवार जूटल। रामधुन, हरिकीर्त्तन, अष्टयाम सब कुछ बड़ा ठाट-बाट से सम्पन्न भइल। 'कलियुग के कबीर' के जीवन-लीला समाप्त हो गइल। सोचत-सोचत चेतना शून्य हो गइल। कहाँ जा रहल बा आज अली बाबा के गाँव-देश? धरती ऊहे बा : पहिले उगत रहे प्यार-भाईचारा, मिल्लत के बिचड़ा, आज ओही धरती पर उग आइल बा नफरत के रेंगनी के काँट, जवन डेग-डेग पर चुभ रहल बा, कर रहल बा तलवा लहु-लुहान। बा कवनो अइसन संजीवनी बूटी, जवन कर सके अली मियाँ के फेर से जिन्दा ? गाँव के डगर पर सुनाई पड़े अली मियाँ के कवित्त-

(गहागड करो गहागड करो, गहागड करो...।)

शब्द भंडार-

अनसोहतो- अचानक बिना सोंचले-समझते

कुशल-क्षेम- हाल-चाल

टाट बन्हले- भीड़ लगवले

लेखा-जोखा- हिसाब-किताब

श्राद्ध- मुअला के बाद हिन्दू लोगन के एगो विधि, संस्कार

बेयान- बात कहल

काठ मार गइल- स्तब्ध भइल, हक्का-बक्का भइल, लजाइल

आँख डब-डबा गइल- रोआई आ गइल

पीड़ा- दुख

ढ़लत उमर- बुढ़ापा आ ओर बढ़त उमिर

दालान- घर के बाहर बइठका बनल जेकरा नजदीक माल मवेशी बन्हा ला

लेवा- कपड़ा के सिअल तोशक जइसन, सूजनी

असवाव– सामान

श्रद्धा– आदर

सुअन्न– अच्छा अन्न (अच्छा खाना)

गोहार– झुंड

कवित्त– फकड़ा

गहागड करो– खुशी मनाओ

टिड्डी– एगो कीड़ा जे समूह में उड़ेला

बटोराना– एकट्ठा भइल

सी–ऑफ– बिदा कइल

भाँज लवटल– पारी आइल, बारी आइल

आँच ना बराइल– चुल्हा ना जलल

फसिला– फैसला, निवटारा, निर्णय

लाश– मुअल आदमी के शरीर

कब्र– जवना में लाश के जमीन का नीचे गाड़ल जाला

भंडारा– भोज

मिल्लत– एकता

हरिकीर्त्तन– झाल आदि बजा के साथ हरि के भजन

जवार जूटल– इलाका के लोग आइल

बिचड़ा– अंकुरला के बाद छोट पौधा

संजीवनी बूटी– एगो बूटी जे जिनगी देवेला

रेंगनी– एगो कंटइला पौधा

डगर–सड़क

तहलका– हलचल।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. खाली स्थान में सही शब्द चुन के भरीं।

(क) अली मियाँ के इयाद ..... आवत रहे। (बार-बार/अनसोहतो)

(ख) अली मियाँ के मुअला से अइसन लागल जइसे आपन ..... मर गइल होखस (बाप/भाई)

(ग) सारा गाँव अली मियाँ के ..... रहे। (जमीन/परिवार)

(घ) झुण्ड-के-झुण्ड लड़िकन ..... अइसन बटोराए। (भेंड़/टिड्डी)

(ङ) अली मियाँ का मुअला पर ..... तक भंडारा चलल रहे। (तीन दिन/तेरह दिन)

2. (i) अली मियाँ लड़िकन के का सुनावस ?

(क) कहानी (ख) दुखरा

(ग) कवित्त (घ) गीत

(ii) अली मियाँ कइसे खात रहलें ?

(क) अपने बना के (ख) जेने-तेने माँग के

(ग) फल तोड़ के (घ) भाँज बान्ह के एक टाईम एक घर

(iii) अली मियाँ के एक हाथ में लोटा-थरिया आ एक हाथ में का रहत रहे ?

(क) कटोरा (ख) गोजी

(ग) झोला (ग) तलवार

(iv) अली मियाँ के भोजन कहवाँ होत रहे ?

(क) मस्जिद में (ख) धनी के घर

(ग) गरीब के घर (घ) धनी–गरीब सबका घर

(v) अली मियाँ के अइला से लोग के का बुझाए ?

(क) फेर खाए आ गइल (ख) घर अपवित्र भ गइल

(ग) घर पवित्र हो जाला (ग) ई कुल्हीं

लघु उत्तरीय प्रश्न-

3. अली मियाँ के मुअला के समाचार सुन के लेखक के का बुझाइल ,
4. अली मियाँ के परिवार के रहे ?
5. अली मियाँ भोजन समाप्त होखे त लइकन के गोहार का कहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

6. अली मियाँ के मुअला पर कवना बात के झगड़ा भइल आ का फैसला भइल ?
7. अली मियाँ के चरित्र–चित्रण करीं ?
8. अली मियाँ के गाँव में खाए–पीए के कवन व्यवस्था रहे ? वर्णन करीं।

भाषा ज्ञान-

1. विलोम शब्द लिखीं।

   ऊँच, धनी, घटल, मुअल, गर्मी
2. नीचे लिखल शब्दन के पर्याय लिखीं।

   समाचार, श्रद्धा, भोजन, चरण, आनन्द
3. नीचे दिहल वाक्यन के बदले एक शब्द लिखीं

   (क) मुसलमान लोग जवना के भीतर लाश के दफन करे ला।

(ख) आठो याम लगातार पूजा

(ग) कवनो झगड़ा करेला एक दल के बटोराइल लोग के समूह

परियोजना कार्य-

1. अली मियाँ के जइसन कवनो दोसर नाटक भा कहानी के एगो पात्र के चरित्र वर्ग में सुनाईं। ऊ पात्र केकर, कवना रचना के बा इहो कहीं।
2. गाँव में कवित्त पढ़े वाला के भांट कहल जाला। भांट घरे-घरे घूम के का करेला?

अध्याय– पन्द्रह

- एह पाठ के निर्माण पाठ्य-पुस्तक विकास समिति कइलेवा -

शहीदे आजम भगत सिंह के जन्म शताब्दी अभी कुछ बरिस पहिले 2007 में मनावल गइल रहे। भगत सिंह जी के जीवन विद्यार्थियन खातिर प्रेरणा के मशाल बनी। बचपन से ही कइसे उ अत्याचार का खिलाफ खड़ा होत रहलें। आ अपना भरल जवानी में देश के आजादी खतिर आपन कुर्बानी दिहलन। इहे कुल्हि के जानकारी एह पाठ में बा।

शहीदे आजम भगत सिंह

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एगो महान क्रांतिकारी रहलें। उनका रग-रग में देशभक्ति के भाव भरल रहे। इनकर जन्म 28 दिसम्बर, 1907 में लायलपुर जिला के बंगा गाँव (चक नं. 105) में भइल रहे। आज ऊ जगहा पाकिस्तान मं बा। हालांकि इनकर पुश्तैनी घर आजुओ (पंजाब के नवाँ शहर जिला के खटकड़कला गाँव में बाटे। इनकर पिता सरदार किशन सिंह आ माता विद्यावती कौर रहलीं। इ सिक्ख परिवार के रहलें बाकिर आर्य समाज अपना ले ले रहलें।

भगत सिंह बचपने से जुझारू आ स्वाभिमानी प्रवृत्ति के रहलें। उनका आगा देश के आजादी के ललक ललकारत रहे। उहाँ का धकाधक जिनगी जीये वाला रहीं, धुक-धुक ना। देश के मजदूर आ शोषित-पीड़ित सकेता पड़ल लोगन के उबारल उनकर आदर्श रहे। 13 अप्रील, 1919 के पंजाब के अमृतसर में जालियाँवाला बाग हत्याकांड भइल। उनका भीतर क्रांति उफान लेबे लागल। जालियाँवाला बाग में देश के आजादी खातिर सभा करत निहत्था लोगन पर जेनरल ओ. डायर अंधाधुंध गोली चलवइल रहे। सैकड़न लोग मारल गइल रहे। उनका जिन्दगी में एगो नया मोड़ आइल। बारह बरिस के उमिर में बारह मील पैदल चल के उहाँ गइनीं। देख के उनकर दिल दहल गइल। खून खौल उठल। लाहौर कॉलेज छोड़ के क्रांतिकारी संगठन सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोशियन से जुड़ गइलन।

जालियाँवाला बाग के नृशंस हत्या के नजारा देख के एकर खूनी बदला लेवे खातिर बेचैन हो गइनीं। एही बीच साइमन कमीशन के विरोध करत लाल लाजपत राय पर लाठी-चलल। ओही में उनकर मउअत भ गइल। उनकर मउअत आंदोलन का आग में घी के काम कइलस। भगत सिंह लाला लाजपत राय के मउअत के बदला लेवे के ठान लिहलें। लाला लाजपत राय पर लाठी चलावे वाला पुलिस सुपरिटेंडेंट सान्डर्स के गोलीमार के क्रोध शांत कइलन। इ घटना सउँसे देश में लूत्ती लेखा फइल गइल।

खून खराबा करे के उनकर मनसा ना रहे। बाकिर बहिरा अंग्रेजी साम्राज्य के कान खोलल ऊ जरूरी समझलन। उहाँ का एगो इन्कलाबी घोषणा कइनी कि बहिर सरकार के केन्द्रीय असेम्बली में बम के धमाका से चेतावल जरूरी बा। कार्यक्रम बनल। उनकर संघतिया बटुकेश्वर दत्त उनका साथ हो गइलन। 8 अप्रील, 1929 के केन्द्रीय असेम्बली बम के धमाका से दहल उठल। धमाका का सँगे-सँगे इन्कलाब जिन्दाबाद के नारा लागल। चहिते त भगत सिंह भाग चलते। बाकिर उहाँ का भगली ना। अपना के गिरफ्तार करइलन। 31 मार्च, 1931 के दू बरिस के जेल यातना के बाद इनका फाँसी दिहल गइल। एह बीच जेल में लिखहूँ-पढ़हूँ के काम करत रहलन। फाँसी के तख्ता पर जाय के पहिले राह में एगो गीत गावत गइलन- 'रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे बसंती चोला।' भगत सिंह फांसी पर चढ़ियो के अमर हो गइलन। आज उहाँ का नइखीं बाकिर देश के आजादी के जंग में उहाँ के योगदान कबो भुलाइल ना जाई।

शब्द भंडार-

संग्राम- लड़ाई, युद्ध
जुझारू- लड़ाकू सोभाव के, डट के रहे वाला
ललक- लालसा, इच्छा
शोषित- जेकर शोषण होते होखे
निहत्था- खाली हाथ, जेकरा हाथ में कवनो हथियार ना होखें
नृशंस- निर्मम
हत्या- जान मार दिहल
यातना- तकलीफ
जंग- युद्ध
मनसा- विचार, इच्छा

चोला– कपड़ा

संघतिया– साथी, मित्र, दोस्त

संउसे– पूरा, सोगहग

मउअत– मौत, मृत्यु

उफान– तेज भइल

सकेता– कष्ट में, दिक्कत में

पुश्तैनी– पूर्वज के।

अभ्यास

पाठ से-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. भगत के जन्म कवना बरिस में भइल रहे ?

(क) 1908 में (ख) 1905 में

(ग) 1907 में (घ) 1947 में

2. भगत सिंह लड़िकाइए से का रहले!

(क) घमंडी (ख) स्वाभिमानी

(ग) कायर (घ) डरपोक

3. जालियाँवाला बाग कहाँ बा ?

(क) दिल्ली में (ख) कोलकाता में

(ग) पटना में (घ) अमृतसर में

4. भगत सिंह के संघतिया में के रहे ?

(क) र ाम सिंह (ख) सुनिल दत्त

(ग) बटुकेश्वर दत्त (घ) लाला लाजपत राय

5. भगत सिंह कवना सभा के स्थापित कइलें ?
6. लाठी से पीटा के केकर मउअत भइल ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

7. भगत सिंह के माता-पिता के का नाम रहें ?
8. साइमन कमिशन के विरोध कवना बरिस में भइल रहे ?
9. जालियाँवाला बाग कांड कब भइल रहे ?
10. भगत सिंह कवना तारीख के केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकले ?
11. भगत सिंह के फाँसी कवना साल भइल रहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

12. जालियाँवाला बाग कांड कब भइल रहे ? ओह, बाग में गोली के चलवावल ?
13. भगत सिंह पुलिस सुपरिटेंडेट सांडर्स के गोली काहे मरलें ?
14. भगत सिंह के केन्द्रीय असेम्बली में बम चलावे के का मनसा रहे ?
15. भगत सिंह के एगो महान क्रांतिकारी कहल जाला काहे ?

भाषा ज्ञान-

1. **दिहल गइल शब्दन के पर्यायवाची लिखीं-**

   बाग, देश, लाठी, मनसा, संघतिया

2. **पाठ्य-पुस्तक से खोज के खाली जगह के भरीं-**

   (क) भगत सिंह बारह बरिस के उमिर में ..... मील पैदल चललें।

   (ख) साइमन कमीशन के विरोध में ..... पर लाठी चलल।

   (ग) ..... भगत सिंह के संघतिया रहलें।

(घ) केन्द्रिय असेम्बली में सन् ..... में बम फेकाइल।

3. दिहल गइल वाक्यन के पढ़ के बताईं कि एह में मिश्र वाक्य कवन ह ?

(क) खून खराबा करे के उनकर मनसा ना रहे।

(ख) आज उहाँ का नइखी बाकिर देश के आजादी में उनकर योगदान ना भुलाइल जाई।

(ग) चहते त भगत सिंह भाग जइते।

परियोजना कार्य-

1. भगत सिंह के जीवनी पर आधारित कवनो नाटक खेले के कोशिश करीं।
2. भगत सिंह के साथी बटुकेश्वर दत्त आ राजगुरु के बारे में जाने के कोशिश करीं।
3. स्कूल में भगत सिंह के जयन्ती मनाईं आ उनका जीवनी पर निबंध प्रतियोगिता के आयोजन करीं।
4. 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गीत के समूह-गान के रूप में गावे के तइयारी करीं।

व्याकरण

* वाक्य-सरल, संयुक्त आ मिश्रित
* पर्यायवाची शब्द
* विलोम शब्द
* श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
* अनेकार्थक शब्द
* अनेक शब्दन के बदले एक शब्द

वाक्य

वाक्य-

सार्थक शब्दन के उ समूह जवना में कर्ता आउर क्रिया दूनू होखे ओकरा के वाक्य कहल जाला।

रचना के बिचार से वाक्य तीन किसिम के होला।

(1) सरल भा साधारण वाक्य

(2) मिश्र वाक्य

(3) संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य-

जवना वाक्य में एगो क्रिया आउर एगो कर्ता होखे ओकरा के सरल भा साधारण वाक्य कहल जाला। एह में एगो उद्देश्य आउर एगो विधेय होला। जइसे- बिजुरी चमकत बिया। एह वाक्य में एगो उद्देश्य यानी कि कर्ता आउर एगो विधेय यानी कि क्रिया बा। त इहे सरल भा साधारण वाक्य भइल।

मिश्र वाक्य-

जवना वाक्य में एगो सरल आ साधारण वाक्य के अलावे ओकरा अधीन में कवनो दूसर अंग वाक्य होखे, ओकरे के मिश्र वाक्य कहल जाला। अधीन में आवे वाला अंग वाक्य अपना में पूरा आ सार्थक ना होला बाकिर मुख्य वाक्य के साथे आवते ओकर अर्थ निकल जाला। जइसे, उदाहरण ला एगो मिश्र वाक्य बा- ''उ कवन अदमी होई जे महात्मा गाँधी के नाम ना सुलने होई'' एह वाक्य में ''उ कवन अदमी होई'' मुख्य वाक्य ह आउर ''जे महात्मा गाँधी के नाम ना सुनले होई'' सहायक भा अंग वाक्य ह काहे कि इ मुख्य वाक्य पर आश्रित बा।

संयुक्त वाक्य-

जवना वाक्य में साधारण भा मिश्र वाक्यन के मेल, संयोजक अव्यय द्वारा होला, ओकरे के संयुक्त वाक्य कहल जा ला संयुक्त वाक्य में दू भा दू से अधिका सरल वाक्य भा मिश्र वाक्य संयोजक शब्द (अव्यय) के सहारे जुड़ल होला। जइसे-

''राम बाजार से अइलें आउर मोहन इस्कूल गइलें'' चाहे ''हम रोटी खाके ओठँगले रहनी कि पेट में दरद होखे लागल आउर दरद एतना बढ़ल कि डाक्टर के बोलावे के पड़ल।''

ऊपर के वाक्यन पर नजर डालला पर दूनो वाक्यन में 'आउर' आ 'कि' के मदद से पहिले दू गो सरल वाक्य के जोड़ के एगो संयुक्त वाक्य रचाइल बा आउर बाद वाला वाक्य में दूगो मिश्र वाक्य के जोड़ के एगो संयुक्त वाक्य रचाइल बा। संयुक्त वाक्य के खूबी होला कि एह में हरेक वाक्य आपन स्वतंत्र सत्ता बनाके राखेला आउर उ एक दोसरा पर आश्रित ना होला। खाली संयोजक अव्यय उ कुल्ही स्वतंत्र वाक्यन के मिलावे लें।

भाषा में एगो शब्द के कय-कय गो माने होला जवना के पर्यायवाची शब्द कहल जाला। भोजपुरियो में पर्यायवाची शब्दन के कमी नइखें। जवना में से कुछ प्रचलित शब्दन के पर्यायवाची नीचे दिहल गइल बा।

पर्यायवाची-

1. पेड़- गाछ, रुख, फेंड़
2. शरीर- देह, जाँगर, काया
3. ढक्कन- ढकना, झपना, पेहना
4. खीर- रसियाव, तसमई, जाउर
5. काफी- ढेर, पुरहर, पूरा
6. मनुष्य- आदमी, जन, मनई, लोग
7. विधवा- राँड़, बेबा, मुसमात

8. ताकत– बूता, हियाव, काबू
9. खुशामद– चिरउरी, निहोरा, हथजोरी
10. देखना– निरखल, आँकल, ताकल
11. तंग करना– उबियावल, कँउचावल, खूनसावल, दिकदिकावल
12. साफ करना– काँछल, पोंछल, धोवल
13. भूखा– भुखाइल, हहरल, छछाइल, खखाइल
14. उल्टी करना– ओकाइल, वोकरल, ढकचल
15. ठीक– नीक, नीमन, बढ़ियाँ
16. सब– सभ, कुल्हि, समूचा
17. विष– बिख, जहर, माहुर
18. उलीचना– उदहल, उबहल, उबिछल
19. नौकर– नोकर, टहलुआ, चाकर
20. तौलिया– गमछा, गँवछी, अगौछा
21. रखवाली– रखउरी, अगोरिया, पहरेदारी, चउकिदारी
22. किनारा– कोर, पोर, छोर, आर
23. दीया जराना– बारल, जरावल, लेसल
24. काँच– सीसा
25. हार– गर्दन के गहना, हड्डी, हारगइल

विलोम शब्द–

आपन –	पराया	दुखिया –	सुखिया
अन्हार –	अँजोर	मजगूत –	कमजोर
काँच –	पाकल	आग –	पानी
जनम –	मरन	मेहरारू –	मरद

मुस्मात–	एहवात	मड़ई –	महल
पढ़ल –	निपढ़	गाँव –	शहर
साफ –	मईल	कुँवार –	बिअहल
मोट –	पातर	मीठ –	तीत
डरपोक–	करेजगर	इहवाँ –	उहवाँ
नया –	पुरान	मालिक –	नौकर
रुखर –	चिकन	नीमन –	बाउर
हँसी –	रोआई	अँगना –	दुआर
करिया–	उज्जर	आज –	काल्ह
देवता –	राकस	बाढ़ –	सुखाड़
गोरकी–	करियक्की		

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द-

जवन शब्द सुने में एक जइसन लागे बाकिर ओकरा अर्थ में अंतर होखे ओकरा श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहल जाला।

1. पातर – पतला
   पाँतर – सुनसान, एकन्ता
2. अगाह – पहिले
   आगाह – चेतावल
3. अदहन – खउलत पानी, अऊँटल पानी
   अनहद – जवना के हद नइखे, जोगियन के सुनाए वाला आवाज
4. गोर – साफ चमड़ा वाला
   गोड़ – पैर
5. अनारी – ना जाने वाला, अनजान, गंवार
   अनेरी – जेकर ठौर नइखे

6. अहीर – ग्वाला
   अहेर – शिकार
7. अन्हार – अँधेरा
   अन्हेर – अत्याचार, जे ना होए के चाहीं
8. अरूइ – जमीन में बइठे वाला कन्द जे सब्जी के काम आवे ला
   अरूआइल – देर भइला से खराब भइल खाये के सामान
9. अलहदा – अलग
   अलहदी – आलसी
10. अरचन – रूकावट
    ओरचन – खटिया के ओरचन

अनेकार्थक शब्द-

कुछ शब्दन के एक से जादा अर्थ होला, अइसन शब्द अनेकार्थक कहाला। भोजपुरियों में अइसन ढेर शब्द बाड़न स कुछ उदाहरण नीचे दिहल जाता।

कन – चाउर के टुकड़ा, कंद
काग – एगो करिया चिरई, ठेपी
लीख – ढील के अण्डा (माथा में पड़े वाला), बैलगाड़ी के राह
सउरी – प्रसूति घर, एक तरह की मछरी
चाल – चले के ढंग, आदत
चीक – माँस बेचे वाला, तीली से बनल परदा
धूरा – माटी, गाडी में लागे वाला एगो पाट पूरजा
पगार – ऊँख के पत्ता, मजदूरी
हार – हार जाना, गर में पहिने वाला एगो गहना
पैर – गोड़, दवनी ला, दँवरी ला बिछावल फसल

आम – एगो फल, साधारण

आँट – समाइल, दुश्मनी, अन्दाज

उत्तर – एगो दिशा, जवाब

काल – मउअत, समय

काँच – सीसा

कुल – सभ, खानदान

कोठी – घर, बाँस के झूर

खोंटल– साग के फुनगी तुरल, धोती आ लूँगी खोंस लेहल

कुटना – कूटेवाला, चुगलखोर

झींक – जाँत में पीसे के बेरा डालल जाये वाला वस्तु

लेव – धनरोपनी के पहिले खेत के तैयारी कइल माटी

दलान – बइठका

तीथा – इनार के चारो ओर के ऊपरी दीवार

डेहुँगी – गाछ के टहनी

उटुँग – छोट, ओछा

अनेक शब्दन ला एक शब्द–

जइसे– हर चलावे बाला		– हरवाहा
1.	जे माल–मवेशी के चरावे ला	– चरवाहा
2.	जेकर कद सामान्य से छोटा होखे	– बौना
3.	गीत गावे वाला/वाली	– गवैया
4.	पूजा करे वाला	– पूजारी
5.	जेकर बियाह भ गइल होखे	– बियाहल

6.	जेकर बियाह ना भइल होखे	– कुँवार
7.	तुरते जवन लड़िका जन्म ले ले होखे	–जनमउती
8.	एगो जनाना के मरद (पति) के दोसर पत्नी	– सौतिन
9.	जे घर, खेत, बगइचरा आदि के रक्षा करेला	–अगोरिया
10.	शादी–बियाह, यज्ञ आदि में नाईं, धोबी आदि जे काम करे ला	–पउनिआ, पउनी
11.	जहाँ माल–मवेशी राखल जाय	– बथान
12.	जे घास काटे जाय	–घसवाहा/ घसवाहिन
13.	जवना रस्सी से इनार से पानी निकालल जाला	– उबहन, डोरी
14.	जवना में भूसा राखल जाला	– भुसउल, बेढ़ी
15.	जवना के एगो आँख छोट होखे	– अईंच
16.	जवना के आँख भूअर होखे	– कुईस
17.	जवना घर में खाना पकावल जाला	– भनसा
18.	जहवाँ अनाज भूंजल जाला	– घुनसार
19.	जहवाँ खेत से काट के फसल राखल जाला	– खरिहान
20.	जे बुद्धि से भा पढ़े–लिखे में कमजोर होखे	– भुसकउल
21.	जवन औरत के मरद (पति) जिन्दा होखे	– एहवात
22.	बांस के पेड़ के डाढ़	– करची
23.	दूध में चाउर डाल के बनल पकवान	– खीर, तसमई

पढ़ऽ–गुनऽ

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति सामान्य व्यवहार में संक्षिप्त आ गंभीर उक्ति ह। संक्षिप्त आ लोकप्रिय उक्ति के जे कल्पित सत्य आ नैतिक शिक्षा देवे ला लोकोक्ति कहल जाला। लोकोक्ति में शब्दावली आ वाक्य विन्यास अधिकांशत: बोलचाल के वास्तविक आ व्यवहारिक भाषा पर आधारित होला। एकर भाषा लयात्मक होला। एह में सामान्य अर्थ का अलावे व्यंग्यार्थो होला। भोजपुरी भाषी लोग शुरूए से घुमक्कड़ प्रकृति के रहल बा एह से जहवाँ-जहवाँ गइल उहवाँ कुछ लेलक आ कुछ देलक। ऊ लोग आपन सोंचल विचारल उक्ति के लोकोक्ति के रूप में सगरो बिखेर दिहलस। एह पाठ में भोजपुरी के कुछ चुनल लोकोक्ति के अर्थ सहित समेट के राखल गइल बा।

पाठ के निर्माण पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति कइले बा आ एकरा निर्माण में डॉ. शशिशेखर तिवारी के 'भोजपुरी लोकोक्ति' आ रामज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' के 'लोक लहर' से सहयोग लिहल गइल बा।

लोकोक्तियाँ

1. चिरईं के जान जाय लड़िका के खेलौना
   (केहू के दुख देख के केहू के मजा आवे)
2. अनका धन पर विक्रम राजा
   (दोसरा का धन पर धमंड कइल)
3. जवना थरिया में खाय ओहि में छेद करे
   (जे भलाई करे ओकरे हानि पहुँचावल)
4. एक त करइला अपने तीत दूजे चढ़ल नीम पर
   (कवनो खराब के आउरी खराब के संगत)

5. गोदी में लड़िका भर गाँव ढिढ़ोरा
(कवनो चीज नीयरे रहे आ जेने-तेने खोजत फिरे)
6. थान हारब त हारब बाकिर गज ना फारब
(थोरका लाभ ला अधिका गमावल, जिद्द के कारण अधिका घाटा)
7. अन्हरा का आगा रोअल आपन दीदा खोअल
(मूर्ख के कुछ कहल आपन इज्जत गॅवावल)
8. बानर का हाथे नारियर
(अयोग्य हाथ में नीमनो चीज के मोल ना होता)
9. जेतना के बबुआ ना ओतना के झुनझुना
(कवनो चीज ला अधिका लागत लगावल भा मेहनत कइल)
10. छुछुंदर के मुड़ी में चमेली के तेल
(कुपातर के मूड़ी पर ताज)
11. सब धान साढ़े बाइसे पसेरी
(सब चीज के मोल बराबर लगावल)
12. जहवाँ बड़-बड़ ढोल तहवाँ टिमकी के का मोल
(बड़-बड़ का आगा छोट के पूछ ना होला)
13. चोर सहे अँजोर ?
(अपराधी भीतरा से कमजोर होला)
14. जहाँ गाछ ना बिरिछ उहाँ रेंड़ पुरधान
(अभाव में छोट चीज भी प्रधान हो जाला)
15. भल मरल भल पिलुआ परल
(कवनो काम तुरते ना होला)
16. अपना घरे बिलइओ बाघ
(अपना दुआर पर कमजोरो बलवान हो जाला)

17. हड़बड़ी के बिआह कनपट्टी में सेनूर
(जल्दीबाजी के काम सही ना होखे)
18. चलनी दूसनल सूप के जेकरा अपने बहत्तर गो छेद
(जेकरा में ढेर अवगुण होखे ऊ दोसर के अवगुण खोजे)
19. आगा नाथ ना पाछा पगहा
(जेकरा कवनो अवलम्व ना होखे)
20. गाछे कटहर ओठे तेल
(समय का पहिले उमेद)
21. पानी में मछरी नौ–नौ कुटिया बखरा
(मिलला के पहिलहीं बखरा लगावल)
22. हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत
(अनर्गल बात बोलल)

भोजपुरी के लिपि : कैथी

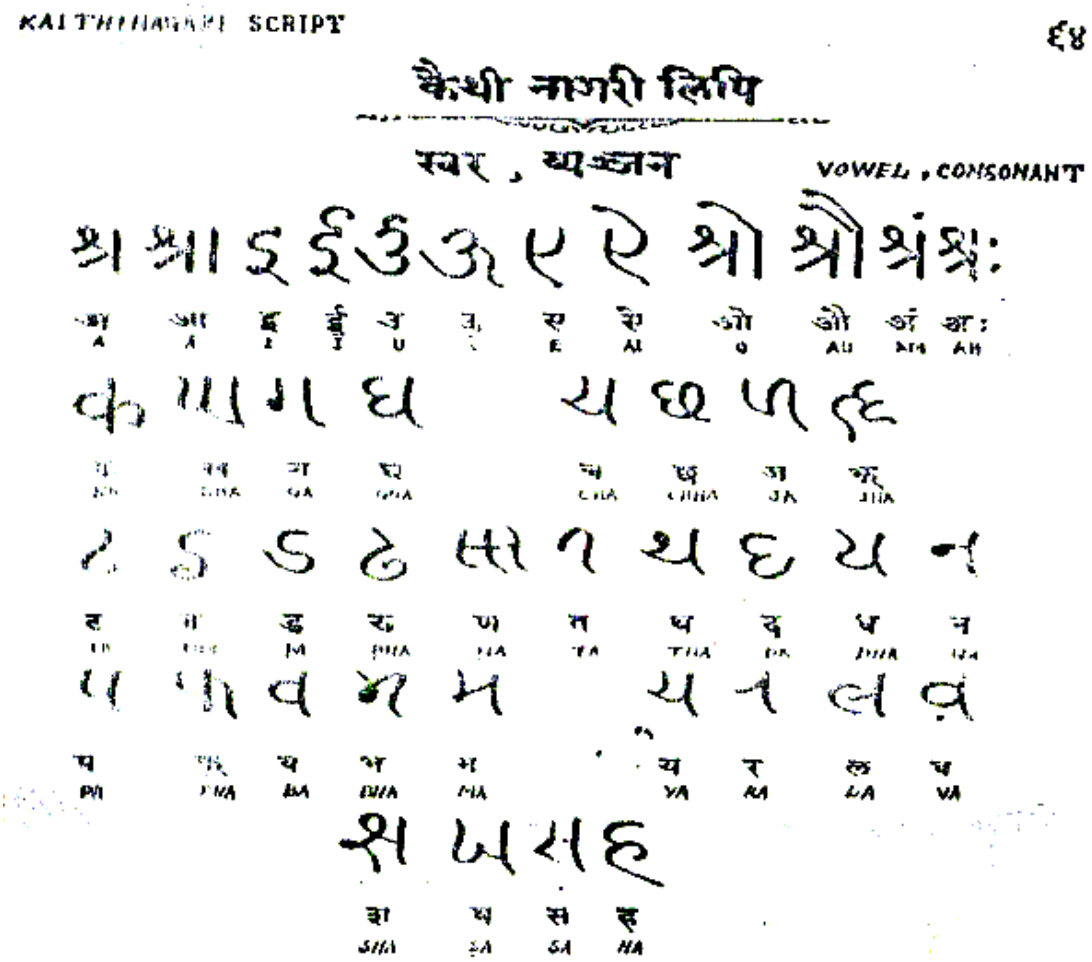

प्राचीन काल में मध्य प्रदेश में एगो लिपि व्यवहार में रहे जेकरा के कैथी कहल जात रहे। कहल जाला कैथी के शुरूआत भोजपुरिये लोग कइलस। इहे भोजपुरी भाषा के आपन लिपि बा। आज भले इ लिपि लुप्त भ गइल बा बाकिर पहिले के जमीन-जायदाद के दस्तावेज, खतियान कुल्हि एही लिपि में लिखल मिलेला।

एकर चर्चा भाषा शास्त्र के विद्वान डॉ. ग्रियर्सन के किताब में आ पूर्णियां जिला के गजेटियरो में पावल जाला। पुराना राजघराना के ताम्रपत्रन पर भोजपुरी के बीजक कैथी में मिलेला। कैथी के इण्डो आर्यन भाषन के पूर्वी समूह के लिपि मानल गइल बा। इ देवनागरी लिपि के करीब के लिपि मानल जाला।

कैथी लिपि के नामकरणों के एगो कहानी बा। पहिले पुराना जमाना में लिखे-पढ़े के काम कुछ जाति विशेष के लोग करत रहे। उहें सभे कातिब आ मुनीम भा मुंशी होत रहे लोग। कहल जाला कि अंग्रेज लोग पारसी लिपि के हटावे खातिर कैथी लिपि के बढ़ावा देलस। पहिले भोजपुरी इलाका में पढ़े-लिखे के शुरूआत 'रामगति देहूँ सुमति' से होत रहे। आज इ लिपि विलुप्त हो रहल बिया। अब केहू के अगर कवनो पुराना लिखल किताब भा कवनो दस्तावेज पढ़ावे के होला त पढ़े वाला के खोजे में नौ दिया के तेल खरच हो जाला, तबहूँ कबो-कबो ना मिले। बाकिर इ बात सोरह आना साँच बा कि भोजपुरिया लोग जहवाँ-जहवाँ गइलन मारिशश, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिडॉड तहवाँ कैथी लिपि संगे ले ले गइलन। कैथी गुजराती आ बांगला देश के सिलॉटी लिपि से बहुत मेल खाले। भोजपुरी के ''कैथी लिपि'' के बचावल बहुत जरूरी बाटे। जेह से कि भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन में नवका पीढ़ी अपना भाषा के लिपि के बारे में नीमन से जानकारी राख पावें।

- प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय-

प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय के जन्म 11.1.1936 के बिहार के सारण जिला के रामपुर महेश (अमनौर) में भइल रहे। अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त क के इहाँ का विधि के भी अध्ययन कइनी आ बी.एल. के डिग्री प्राप्त कइनी। जगदम कॉलेज, छपरा में अध्यापन का संगे-संगे हिन्दी, भोजपुरी आ अंग्रेजी में कविता, कहानी, निबंध, समीक्षा आदि पर इनकर अनेक रचना विभिन्न पत्र-पत्रिका, पुस्तक में प्रकाशित बा। जगदम कॉलेज के प्राचार्य पद से इहाँ के सेवा-निवृत्त होके साहित्य सेवा में लागल बानी।

'रेल के डिब्बा' एगो व्यंग्य निबंध बा। एह में आज के युग में व्यक्ति के स्वार्थी स्वभाव के चित्रण बा। आज आदमी खाली आपन सुविधा खोजे ला। दोसर के कष्ट के ओकरा कवनो परवाह नइखे।

रेल के डिब्बा

गार्ड साहेब सीटी देलन; गाड़ी घसक चलल। हम देखलीं हमरा डिब्बा के साथे-साथे एक जना दउड़े लगलन- ''ए भाई साहेब, तनी हई बक्सवा खींच लियाव,'' हम झट से खीड़की पर आधा लटकल बक्सा भीतर खींच लेलीं। ''तनी हई अटैचिया भाई साहेब... हई डोलची बा...आ हई केरा... आ तनी हई थरमसवो भाई साहेब।'' हम एक-एक क के सब खींच ले लीं, ऊ दरवाजा मांहि भीतर आ गइलन। उनकर छाती भाँथी लेखा चलत रहे। चालीस-पैंतालीस के होइहन, कनपटी भुआ चलल रहे। गोर रंग, नीमन, कद-काठी, प्रिंस कोट आ पलतून में रहस। दू-तीन दिन से दाढ़ी ना बनवला से चेहरा पर सन्यास भाव आ गइल रहे। हमरा बगल में कोई ना रहे, जगह काफी रहे। ऊ हमरा बगल में बइठ गइलन, नीचा छितराइल समान के उठा-उठा के पूरा सीट पर सजा देलन। तब चैन के एगो साँस छोड़ के, रूमाल से आपन लिलार पर के चुहचुहाइल मेहनत पोंछलन आ हमरा ओर घुमलन- ''अलबत्त अँधेर बा महाराज, कोई माई-बाप नईखे एह देश के... अब हद हो रहल बा।'' अपना कमीज के बाँह सरका के घड़ी पर अँगुरी धरत कहलन- ''का टाइम ह एह गाड़ी के यहाँ से खुले के ? दू बज के दस... आ खुलल कब ? दू बज के सात में... ई ह स्वतंत्रता... ई ह प्रजातंत्र... मुँह ना मारी अइसन प्रजातंत्र के... तनी सोचीं त ओह मुसाफिरन के हाल जे बाल-बच्चन का साथे अब स्टेशन आके कपास ओटत होइहन। ''हम पुछली- 'इहवे रहीले रउआ ?'' कहलन- 'जी, हम डाक्टर पी.सी. अभय, बुद्धि के डाक्टर हई'', माने पी-एच. डी.। बड़ा मनगर लगलन।

अतने में अगिला स्टेशन आ गइल। ऊ चिहुक के दरवाजा का लगे बइठल मुसाफिर से कहलन- ''अरे, ए भाई साहेब, जल्दी से दरवाजा बंद ना क लीं, ना त दुनिया भर के अखोर-बखोर भेंड़िया-धसान क दीहन स। ''ऊ, मुसाफिर कवनो कान ना देलस। पाँच-सात गो मुसाफिर हमरा सीट का लगे आ के खड़ा हो गइलन, आ एगो बोलल,- ''ए

भाई, ई समान केकर ह ?'' ऊ अनाठियाइल बोललन- ''केहू के होइबे नू करी, कुछ जना नीचे गइल बारन पान-बीड़ी का फेर में, कुछ जाना पानी पीये उतरल बा लोग'' आ अपना मुँह घुमा के खिड़की का बाहर ताके लगलन। ऊ सब मुसाफिर अगिले स्टेशन पर उतर गइलन स। जब गाड़ी खुलल त ऊ सब समान एकोर कर देलन आ कहलन- ''भाई साहेब, तनी कगरिया जइतीं नू त तनी हम कर फेर लेतीं... लखनऊ तक के जानमारू सफर बा... रउरा त पान खाइले, बुझाता... त ठीक बा, पीक फेंके में, खिड़की का लगे अरामो होई, ''ऊ कहत गइलन आ सीट पर पसरत गइलन; फेरु कम्मर ओढ़ के मुँह तोप लेलन। हम किनारे घुसक के बुदबुइलीं- ''टोटल स्वतंत्रता।'' थोड़हीं देर में हमरा बगल से केरा के सुगंध मिले लागल। जा... कहीं उनकर केरवा चिपटा गइलन स का ? साँच पूछीं त हमरा मन का भीतर खुशियो भइल... ठीक भइल, अइसन स्वार्थी का कुछुओ त सजाय मिलल। अतने मे उनकर एगो हाथ कम्मर से बाहर निकलल- ''भाई साहेब, बुरा मत मानेब, तनी हई खिड़िकिया का नीचा बीग देतीं,'' उनकर हाथ सिंगल लेखा डाउन भइल रहे आ अँगुरियन में से एक हत्था छिलकोइया झालर लेखा झूलत रहे। मन अतना कउँचल कि का कहीं, मगर केरा खाये में उनकर बारीकी गणेशजी का सवारी अइसन देख के, मन का हैबत हो गइल। बुद्धि के मतलब इहे ह। खाला त सभे, मगर खाली जीभ-दाँत से। ईहाँ देखीं, खाये के पहिले सोचल गइल बा कि कइसे खाये के चाहीं, मतलब ई कि बुद्धि से भी खाइल गइल बा, गूदा साफ, मगर छिलकोइया हत्था नइखे छोड़ले; खात जाईं आ थरिया मँजातो जाय, ई खूबी। चाल अइसन चलीं अढ़ाई घर कि प्यादा साफो हो जाय आ शह भी पड़ जाये- ''भाई साहेब, बुरा मत मानेब... ''हम छिलकोइया बाहर फेंक देलीं।

अतने में कम्मर का भीतर से बहुत धीमा गीत सुनाये लागल। गा रहल बाड़न का ? एकाएक मुँह बहरिया के चिल्लइलन- ''जीत गइल'' हम घबरा के दुबुक गइलीं- ''का भइल जी?'' कम्मर में से हाथ निकाल के ताश का पत्ता अतवत ट्रांजिस्टर नचावत कहलन- ''क्रिकेट।'' हमरा जान में जान आइल। हमनी गोरखपुर आ गईल रहीं। लोग चढ़े-उतरे लागल रहे। चार गो मुसाफिर हमरा सीट का ओर अइलन, आपन सामान एने-ओने रखलन, चैन के साँस लेलन आ हमरा से पूछलन- 'ई साहेब ? सुतल काहे बाड़न ?'' तबले ओ में से एगो उनकर कान्ह ध के हिलावे लागल- ''ए भाई साहेब, उठ-उठ, उठिके के बइठ...

दिनवों में सुत्तल बाड़ ?'' कम्मर का भीतर से कँहरत, रोआइन आवाज आइल- ''आह... आ ह,'' आ काँपत अँगुरी मुँह से धीरे-धीरे कम्मर सरकावे लगली स। मुँह समाधि से निकलल, आँख आधा मुँदाइल, ध्यान का मुद्रा में, बढ़ल दाढ़ी बुद्ध के करुणा हो गइल रहे। ओठ पर जीभ फेर के तर कइलन आ घायल स्वर में बोललन ''दिन के... आह... दिन के... सूते के... सवख... आह... केकरा होला... ऐ भाई... हम त... हमरा त जाँघ में जहरबाद के... अपरेसन'' अतना कहके ऊ आपन मूँड़ी दीवाल का ओर लुढ़का देलन।

उठावेवाला मोम हो गइलन स। एगो लजाइल-कचोटत स्वर में बोलल आ... रे... नाहीं... नाहीं... भइया... तूँ... सुत-सुत।'' खड़ा साथियन से ऊ कहलस- ''अरे, रहे द यार, बीमार बाड़न... नीचे चद्दर बिछावल जाय, ठाठ से ताश खेलत रास्ता मजे-मजे कट जाई।'' ऊ लोग नीचा जम गइल। एही बीच कम्मर के भीतर से ऊ स्टील के एगो छोट गिलास निकाल के नीचे लटकवलन- 'ए भइया... तनी मदद... हमरा गोड़ के लगे... थरमसवा।'' ''कवनो बात नहीं, लाव गिलास भइया।'' कहत एगो गिलास ले लेलस। काँपत हाथ से गिलास ले के, तनी गर्दन टेढ़ करके, आँख बंद कइले, पी गइलन। फेरु आँह-ऊँह करत आपन गर्दन कछुआ लेखा सिकोड़ के अपना पताल-लोक में चल गइलन।

रात आइल, गइल। मगर हाय रे भाग्य, ई चादर वाला ना उठलन स, कहीं ना उतरलन स। ईहों लखनउए जइहन स का ? गाड़ी भागत चल गइल आखिर आइए गइल लखनऊ। बाकिर, अब उपायो का रहे? हम साँस रोकले देखत रहलीं। जइसहीं एक धचका के साथे गाड़ी खड़ा भइल, ऊ एगो हनुमानी कुदान ले के खड़ा हो गइलन आ कूद-फाँद के सब सामान प्लेटफार्म पर उतारत उतर गइलन। चादर वाला लोग अकबका के एक-दोसरा के मुँह देखे लागल लोग। एगो का ना रहाइल- ''एक नम्बर के छँटल बा हो, सीट खातिर कइसन नाटक कइलस!'' आपन सामान गिनत ऊ मुसुकइलन- ''अकिल होय इयार, त सीट कतहीं मिल जाला'', ''आ डाक्टरेट भी'' हमरा मुँह से निकल गइल। ऊ हें-हें करत पुकारे लगलन- ''ए कुली।'' हमार गाड़ी खुल गइल।

- शिव पूजन सहाय -

आचार्य शिवपूजन सहाय के जन्म शाहाबाद (अब बक्सर) जिला के उनवाँस गाँव में भइल रहे। उहाँ का कॉलेज के पढ़ाई ना कइनी। पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य सेवा में लाग गइनी। 'माधुरी', 'गंगा', 'जागरण' आ 'बालक' का संगे-संगे साहित्य के संपादन कइलीं। इहाँ के हिन्दी साहित्य में गहिर पैठ के कारण छपरा के राजेन्द्र कॉलेज में अध्यापनों कार्य कइनी। हिन्दी में 'विभूति' (कहानी संग्रह), 'देहती दुनिया' (उपन्यास), 'ग्राम सुधार' आ 'अन्नपूर्णा के मंदिर' निबंध संग्रह प्रकाशित बा। भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' आ भागलपुर विश्वविद्यालय से इहाँ के डी. लिट के मानद उपाधि प्रदान कइल गइल। इनकर निधन 1963 में भ गइल।

'अवढ़र दानी बाबू साहेब' में बाबू कुँअर सिंह के मानवीय संवेदना आ उदारता के चित्रित कइल गइल बा। एह कहानी में जहाँ मानव मूल्य के झलक मिलेला उहँवे आचार्य जी के सुंदर भाषा शैली के परिचय मिलेला।

अवढ़र दानी बाबू साहेब

बाबू कुँअर सिंह के जगदीशपुर के बन्हवार गाँव बाटे। जहाँ हमरा सबसे बड़ बहिन के ससुरा ह। लड़िकाईं में हम उहाँ उर्दू मदरसा में पढ़त रहीं। बन्हवार के देशपात चौबे बड़ा नीमन गवैया रहले। जगदीशपुर के बाबू साहेब लोगिन के दरबार में उनकर बहुत आवा जाही रहे। लगभग पचहत्तर बरिस के उमिर में उनका मरला करीब आठ-दस बरिस भइल। आज से पचास बरिस पहिले जब हम मदरसा में पढ़त रहीं तब उनकर ढेर बूढ़ बाप जीअत रहले। कुँवर सिंह के दरबार में अपना जवानी में ऊ दरवान रहले। नब्बे बरिस के उमिर में मुअलें। उनका से रोज कुँअर सिंह के खीसा सब लइका मिल के सुनत रहीं जा। ओही में से दूगो खीसा इहाँ सुनावत बानी।

बाबू साहेब के दरबार में गाजीपुर से एगो गंधी आइल रहे। जाड़ा के दिन रहे। दरबार लागल रहे। गंधी सब दरबारी लोगिन के अतर देखावत रहे। सब लोग के हाथ में ठेपिए से अतर लगावत चल गइल। जब बाबू साहेब के मसखरा के पास पहुँचल त ऊ सीसी के सामने अँजुरी पसार देलस। गंधी ओकरा अँजुरी में इतर गिरा देलस। मसखरा दुनो तरहथी से अपना दुनो ठेहुना में अतर मले लागल। लोग हँसे लागल। सभ केहु के हँसत देख के बाबू साहेब भी हँसे लगलन। उहाँ का पूछलीं कि सभे हाथ पर अतर सूंधत ह ई ठेहुन में काहे लगवलस। जोंकर कहलस कि सरकार जाड़ के रात में हम रात भर ठेहुने सुँघब एही से दुनो ठेहुन में अतर लगवलीं हाँ। बाबू साहेब अपना खजांची के बोला के पुछलन कि जोंकर के जड़ावर ना दियाइल हा? मामूल भइल कि अबहीं जोंकर के जाड़ा के कपड़ा ना दियाइल हा। उहाँ का तुरंते हुकुम दिहलीं कि एकरा डेढ़ सौ रोपैया जड़ावर खातिर आज के दिहल जाय। दरबार में खूब हँसी भइल।

कुछ छत्री लोग किहाँ बाबू साहेब के मालगुजारी बाकी रहे। साँढ़नी सवार ओह लोग के जगदीशपुर पकड़ ले आइल आसामी लोग के रियासत के भंडार से रसद मिलत रहे। ओह लोग के आंटा भंटा मिलल। लोग लिट्टी लगा के खाए बइठलन। आग का आड़ा प कुछ लिट्टी आ कुछ चोखा बाचल रहे। खात-खात आपुस में लोग कहे लागल कि जवन बाचल बा तवना के सधावे के चाहीं। एगो आदमी दोसरका से कहलस तुहीं डेढ़ सेर हुरेल सधाव। दोसरका कहलस कि तुहीं छछाइल बाड़ हम दलिद्दर ना हई। बाता-बाती में गेंग बढ़ि गइल। लाठी-सोटा चल गइल। एगो आदमी के कपार फूट गइल। बिहान भइला दरबार में बोलाहट भइल। बाबू साहेब पूछलीं कि एकर कपार कइसे फूटल हा रे। एगो आदमी सब हाल कहलस। सुन के बाबू साहेब हँसे लगलीं। कहलीं कि पाँच गो लिट्टी प ई कुकुर निअन लड़त बाड़े स त अइसन दलिद्दर से माल गुजारी वसूल होई ? इन्हनीं के सब बकाया माफ क के पचास रोपया पचावन दे द। आ हमरा सामने से खदेर द। हुकुम के मोताबिक बाकी मालगुजारी पचवला खातिर पचास रोपेया पचावन दे दिहल गइल।

- डॉ. चम्पा देवी -

डॉ. चम्पा देवी का जनम 22.6..1941 के ग्राम अमहरा, पटना में भइल रहे। इहाँ के लोकगीत के बढ़िया गायक बानी! इहाँ के मुख्य रूप से मगही भाषी रहीं, बाकिर भोजपुरी क्षेत्र में विवाह के कारण भोजपुरी के लेखक बन गइनी! इहाँ के एगो सफल 'स्त्री रोग विशेष' डॉक्टर बानीं। इहाँ के मुख्य रचना 'गाँवन के जगाई जा' निबंध संग्रह बा। ई संग्रह 1976 में छपल रहे। ई पाठ एही संग्रह से लेल गइल बा।

लोक गीत गाईं, मन हरखाईं

गाँवन के बोली में, लोक भाषा में; जुग-जुग से, समय-समय पर, जवन गीत गवात चल आइल बा, ओकरे के लोक गीत कहल जाला। अपना देश में रंग-रंग के बोली, रकम-रकम के भाषा बोलेवाला लोग बाड़े। अपना बिहार राज में भोजपुरी, मगही, मैथिली, बज्जिका, अंगिका आउर-संथाली आदि बोली भाषा बोलेवाला इलाका बा।

बिहार राज में भोजपुर, रोहतास (आदिवासी छोड़ के) सारन (छपरा), सीवान, गोपालगंज, पुरुबी चम्पारन, पच्छिमी चम्पारन, मुजफ्फरपुर के पच्छिमी भाग, आधा हजारीबाग, राँची जिला के कुछ भाग, पलामू अवरु उत्तर-परदेश में बलिया, देवरिआ, गोरखपुर, जौनपुर, आजमगढ़, बस्ती, गाजीपुर, बनारस, मीरजापुर जिला आउर मध्ध-प्रदेश के कुछ भाग में करीब चउआलिस हजार वर्गमील तले भोजपुरी बोलेवाला लोग पसरल बा। करीब पांच से छव करोड़ का बीच के जनसंख्या के लोग भोजपुरी बोलेला। इहे खांटी भोजपुरी इलाका के साधारन परिचय भइल। दुख के साथ कहल जा सकेला कि एह इलकन के भारी-भारी विद्वान लोग हिन्दी-भाषा में महान स्थान बनावल, बाकी अपना भोजपुरी लेखा धनी, सम्पन्न बोली में रचना करे में ना जाने कवन मान-हानि के भय रहे ? हर्ष के बात बा कि आज-काल्ह एकरा पऽ कुछ नेह आइल बा।

भोजपुरी अतना रूचिआवन, भरल-पुरल अवरु धनिक भाषा वा कि एकरा के सुनते-सुनते बोले के मन करे लागेला! इहे कारन बा कि भोजपुर के जवान सेना-सिपाही, कल-कारखाना के इलकन में जहाँ-जहाँ गइले, अपना भाषा के कायम रखलें अवरु ओहिजा के लोगन पऽ एकर असर डाल के भोजपुरी बोलले एहतरे भोजपुरी के शब्द हर हालत में, हर समय पऽ, हर हाव-भाव के परगट करे खातिर अपना-आप मे पूरन बाड़ेसन।

ग्रियर्सन साहेब भोजपुरी, मगही अवरु मैथिली तीनों के बिहारी-बोली के नाँव से इआद कइले बानीं। एह तीनों भषवन के संबंध एके परिवार लेखा बा। मगही अवरु भोजपुरी के सनेह तऽ मेहर-मरद लेखा देखल जाला। खाली इची भऽ के कीरिआ पद में अंतर होला। बिहारी बोली के एगो झाँकी देखीं।

भोजपुरी में कहल जाई- ''सुनतानी जी! रावा इची बोलीं ना ? का करतबानी ?''

मरद कहीहें- ''का कहतारू! देखत नइखू कि काम में बाझल बानीं!''

इहें बात मगही में- 'सुनइत न ही जी! अपने तनी बोलूँ न ?''

मरद कहतन- ''का कहिथी ? देखित न ही कि काम करीत ही।''

इहे बात मैथिली में- ''सुनइछी जी! अहाँ तनी बाजु न ?

मरद कही हे- ''की कहिछी! देखइत नइछी कि काम करइछी।''

एही तरे एह बोलिअन में लोक गीतन के भी परंपरा एक-दोसरका के साथे-साथ मिलते-जुलते बा, सगरे बीध-बेवहार, चलन अवरु समय के अनुसार गीतवन में समानता बा। मगही, मैथिली, अवरु भोजपुरी तीनों इलकवन के गीतगवनी लोग तनी भऽ के अंतर कके एके गीत के अपना-अपना बोली के अनुसार अपना-अपना भासा में जोरि-जोरि के गावेली। ये लोग के भोजपुरी में ''गीतगवनी'', मगही में ''गीतहरिन'' अवरू मैथिली में ''गाइन'' कहल जाला। तीनों में कवनों के ओछ कहल आपन छोटापन बा। बाकी अपना नइहर के भाषा मगही के छोड़ के हम ओहि तरे ससुरा के भाषा, भोजपुरी के बखान करतबानी, जइसे सब अवरतन के ससुरे के चीज पऽ अधिकार हो जाला, आपन होला।

ई बड़ी मजदार, लोचदार, ओजदार, रसदार, भरल-पूरल, अवरु रुचि आवन भाषा बा। एकर भारी खूबी ई बा कि कठोर बोले खातिर पथलो ले ठाँय-ठाँय होला। ओहितरे मधुर बोले के बेरा मिसिरिओ ले मीठ। जइसे- ''मनबु कि ना, लउरिन ढ़ेंढा देव। अवरत हऽ कि फेंकारिन।'' नीक से बोले के होई तऽ- ''मनबू ना होऽ। जे कुछ करत बानीं, सब तोहरे खातिर नूँ करत बानीं। काहे रीसिआइल बाड़ू ? साफ-साफ कहऽ, तनी बिहँसत रहऽ।'' इजत करे के होई तऽ- 'सुनतानीजी! रावाँ बानी तऽ हमार परान बा। जिअत बानीं तऽ जहान बा।''

अब आईं लोक-गीत के ऊपर विचार कइल जाव। लोक गीत लोक कंठ से निकसल लोक भावना अवरु परंपरागत संस्कृति के रछेया करेवाला एगो उद्‌गार हऽ। एकरे में लोक जीवन के इतिहास छिपल रहेला। लोक गीत के उतपत्ति के दूगो परधान कारन बा- मन के उद्‌गार (भावातिरेक) अवरु काम

मेघा रे! बदरा रे!!

हो बदरा रेऽऽऽ! तनी आजा।
हो मेघा रेऽऽऽ! इची आजा।।
झम-झम-झम-झम, झिहिर-झिहिर झर,
आके रस बरसा जा।
कि बदरा रेऽऽऽ! तनी आजा।।
हो मेघा रेऽऽऽ! तनी आजा।

थिरक-थिरक धरती इतरइली,
कइली सोरह सिंगार।
छमक-छमक नाचे बुंदरिया,
भँवरा छेड़े सितार।
करिआ-भूअर, घप-घप ऊजर,
उमड़-घुमड़ के छा जा।
हो मेघा रेऽऽऽ! इची आजा।।

टरर-टरर टर्र बेंगवा बोले,
झन-झन करे झींगुरवा।
रात अन्हरिया कुकुर भूके,
करे सनन-सन, पुरवा।
हहर-हहर हर, गड़-गड़-गड़-गड़,
तड़-तड़ ढोल बजाजा।
कि बदरा रेऽऽऽ! तनी आजा।

तड़-तड़ धड़-धड़, धड़ाम करिके
चमकऽ बिजुली रानी!
टप-टप-टप-टप, छम-छम-छम-छम,
करिदऽ पानी पानी।
अन-धन से भरिदऽ धरती,
भारत सरग बना जा।
कि बदरा रेऽऽऽ! इची आजा।

समेकित शब्द भंडार

पु. = पुलिंग, क्रि. वि. = क्रिया विशेषण, स. = सर्वनाम, क्रि. = क्रिया

अ

अंगुरी	(सं. स्त्री.)	– अंगुली
अँजोर	(सं पु.)	– उजाला, उजियारी, उज्जर
अंजोरिया	(सं. स्त्री.)	– चांदनी, शुक्ल पक्ष
अंतर्राष्ट्रीय	(वि. पु.)	– समूचे संसार से संबंधित
अंसोहाती	(वि. पु.)	– बिना मतलब के
अकड़	(सं. स्त्री.)	– धमंड, करापन
अगिनी	(सं. पु.)	– आग
अग्निवाण	(सं. पु.)	– आग लगावे वाला तीर
अचरज	(वि. पु.)	– आश्चर्य
अछूत	(वि. पु.)	– जेकरा छुअल ना जा, एगो जाति विशेष
अद्‌भूत	(वि. पु.)	– आश्चर्यजनक
अनपढ़	(वि. पु.)	– बिना पढ़ल–लिलल
अपराध	(सं. पु.)	– दोष, गलत काम

आ

आनन्दी धान	(सं. पु)	– धान अनाज के एगो प्रजाति
आपबीती	(क्रि. वि.)	– जवन अपना पर बीतल

इ, ई

इन्द्र धनुष

ई – एगो सर्वनाम इहे

उ, ऊ

उठान (सं. पु.) – खूब तरक्की, उन्नति, उभार

उन्नत (वि. पु.) – जेकर तरक्की भइल हो

उपन्यास (सं. पु.) – गद्य के एगो विधा

उर (सं. पु.) – हृदय

क

कजरी (सं. स्त्री) – लोक गीत के एगो प्रकार

कदम (सं. पु.) – डेग

कनिअउती (सं. पु.) – कनिया खातिर सामान, थारू जाति के बियाह के एगो रेवाज

कब्र (सं. पु.) – जहाँ लाश दफनावल जाला

कमाई (क्रि. स्त्री) – कमाये पर मिले वाला मजदूरी

क्लेश (क्रि. पु.) – दुख

का

कायर (वि. पु.) – डरपोक

कालजयी (सं. पु.) – काल के जीते वाला

कि, की

किरपिन (वि.) – कंजूस

कु, कू

कुल्हि – सब, कुल

कुलछनी – जेकर नीमन लक्षण ना होखे

कुँवारी (वि. स्त्री.) – जेकर बियाह ना भइल होखे

को, कौ

क्रोधग्नि (स्त्री.) – क्रोध के आग

ख

खंडहर (सं. पु.) – टूटल मकान के हिस्सा भा अवशेष

खूंटी (सं. स्त्री.) – छोट खूँटा, कपड़ा टाँगे ला देवाल में गड़ल लकड़ी भा लोहा के कील।

खदोना (सं पु.) – पत्ता के दोना

खरकट्टल (क्रि.) – सूख के बर्तन में सटल

खस्सी (सं. पु.) – बकरा

ग

गॅवे-गॅवे (क्रि. वि.) – धीरे-धीरे

गछउँघी (वि. पु.) – गाछ के नीचे के जीमन जवना में कुछ ना उपजे

गहागड (वि. पु.) – खुशी से झूमल, फूलल

गुदरी के लाल (सं. पु.) – छोट स्थान भा असाधारण घर के उत्तम वस्तु

गुलमोहर (सं. पु.) – एक प्रकार के फूल

गोहार (सं. स्त्री.) – लड़े-झगड़े खातिर जमा भइल लोगन्ह के समूह

ग्राम सेविका (सं. स्त्री.) – एगो सरकारी कर्मचारी जे गाँव के विकास ला काम करे ली।

घ

घन (सं. पु.) – बदरी, मेघ, लोहार के एक प्रकार के बड़ हथौरा, गझिन

घुमक्कर (वि.) – बहुत घूमे वाला, एक प्रकार के जाति जेकरा एक जगह घर ना होखे

घुसखोरी (क्रि.) – घूस लेवे के काम

घृणित	(वि.)	– घृणा करे लायक

च

चऊकावे	(क्रि.)	– चौकन्ना करे
चंवर	(सं. पु.)	– गहिर खेत जहाँ धान आदि के फसल होला
चउका	(सं. पु.)	– रसोईघर
चउरठ	(सं. पु.)	– पानी में फुलावल पीसल चाउर
चरखा	(सं. पु.)	– सूत काटे वाला एगो यंत्र
चहके	(क्रि.)	– प्रसन्न भइल, खुश भइल
चिंतन	(सं.पु.)	– विचार कइल, सोंचल
चेतना	(स्त्री.)	– बुद्धि, होश
चौताल	(सं. पु.)	– एक तरह के ताल

छ

छिपा	(सं. पु.)	– थाली
छछनल	(क्रि. पु.)	– तरसल

ज

जाँगर	(सं. पु.)	– देह के अंग, हाथ–पैर आदि
जग	(सं. पु.)	– संसार, दुनिया, पानी चलावे वाला वर्तन
जगत	(सं. पु.)	– संसार, इनार के ऊपर भाग
जवार	(सं. पु.)	– इलाका
जागरण	(सं. पु.)	– रात भर जागल, चेतना
जागृत	(वि.)	– जागल
जीच	(अ. पु.)	– कवनो बात पर अड़ल, झंझट भइल
जुरावल	(क्रि. वि.)	– तृप्त कइल

झ

झंपोली (सं. स्त्री.) – बांस के बनल छोट टोकरी

झकोर (सं. स्त्री.) – हवा के झोंका

झपकी (सं. स्त्री.) – पलक मारल, अउँघाइल आ झुकल

झपना (सं. पु.) – ढकना

त

तगड़ा (वि.) – मजगूत

तरखा–खरना (क्रि.) – थारू लोगन के पर्व के एगो विधि

तराई (सं. स्त्री.) – पहाड़ के नीचे के मैदान

तहलका (सं. पु.) – हलचल, खलबली

ताखा (सं. पु.) – दीवार में बनावल आला

तुरंते (क्रि. वि.) – चटपट, झपपट, जल्दी से

थ

थकइनी (सं. स्त्री.) – थकावट

थथमाह (सं.) – चकित भइल आदमी

थरूहट (सं.) – थारू जन जाति के इलाका

थसका (क्रि.) – कमजोरी के कारण बइठे के प्रवृत्ति

थाती (सं. स्त्री.) – समय पर काम आवे ला बचा के राखल

थिरकल (क्रि.) – नाचे का समय वेर–वेर पैर उठावल आ पटकल

थेथर (वि.) – वेहया, निर्लज्ज

थुथुर (वि.) – जेकरा कवनो डॉट फटकार के परवाह नइखे, वेलज्ज

द

दरिया/दरियाव (सं. पु.) – नदी

दलान (सं. पु.) – घर के बाहर बइठकी ला बड़ कमरा
दानव (सं. पु.) – राक्षस, कश्यपजी के पत्नी दनु से जनमल पुत्र
देवास (सं. पु.) – जहवाँ झार-फूंक करे वाला ओझा पूजा करेला
दुअरा/दुआर (सं. पु.) – घर के सामने के स्थान
दुलार (सं. पु.) – लाड़-प्यार

घ

घकधकात (क्रि.वि.) – तेजी से
धधकत (वि.) – जरत, लहरत
धप-धप (वि.) – खूब उज्जर
धधाइल (वि.) – इतराइल, जरूरत से ज्यादा खुश भइल
घौंस (सं. स्त्री.) – धमकी, घुड़की

न

नईहर (सं. पु.) – कवनो सभी के बाप-माई के घर
नकेल (सं. स्त्री.) – माल-मवेशी के नाम में दिहल रस्सी
निकाह (सं. पु.) – बियाह
निखालिस (वि.) – खांटी, शुद्ध
निधड़क (क्रि.वि.) – बिना रोक-टोक के
निमन (वि.) – अच्छा
निरइठ (वि.) – जे झूठ ना होखे
निलहा (वि.) – नील के खेती करे वाला
निहाल (वि.) – संतुष्ट आ खुश भइल
नेंव (सं. स्त्री.) – मकान में जमीन के नीचे के भाग, मकान के आधार
नेम (सं. पु.) – नियम, दस्तूर

नेवता	(सं. पु.)	– न्योता, बुलावा
नेह/नेह-छेह	(क्रि.)	– प्रेम, स्नेह

प

पंचमेवा	(सं. पु.)	– पाँच सूखल फल के मिश्रण
पखारना	(क्रि.)	– घोए के काम, साफ करे के काम
पतिव्रता	(सं.)	– जे पति में प्रेम आ श्रद्धा राखे, सतवंती
पनआिव	(सं. पु.)	– जलखई, जलपान
परती	(सं. स्त्री.)	– जवन जमीन के खाली छोड़ल रहेला
परवरिश	(सं. पु.)	– पाले पोसे के क्रिया
परिधि	(सं. स्त्री.)	– गोल चीज के घेरा
परेवा	(सं. पु.)	– कबूतर
पिछवाड़ा	(सं. पु.)	– घर के पीछे के हिस्सा
पिंडवारी	(सं. पु.)	– पितृपक्ष
पुरातात्विक	(सं. पु.)	– पुरान खोज आ अध्ययन से संबंधित
प्रीति	(स्त्री.)	– प्रेम, प्यार

फ

फफकल	(क्रि.)	– उबाल आइल, उफनल
फफेली	(सं.)	– नरेटी, शरीर के एगो भाग
फरकल	(क्रि.)	– रह-रह के ऊपर नीचे भइल (जइसे आँख भा ओठ के फरकल)
फरफरारात	(क्रि.)	– उड़त चिरई जइसन तेजी से चलल
फसिला	(सं. पु.)	– निबटारा
फेंटा	(सं. पु.)	– गमछी, घोती के डाँर में बांधल

ब

बतकही	(सं. स्त्री.)	– मन बहलावे ला बातचीत, कहा–सुनी
बदरा	(सं. पु.)	– बादल, मेघ
बरत	(क्रि.)	– जरत, पर्व में उपवास, संकल्प
बहतरा	(वि. पु.)	– बिना मतलब जेने–तेने घूमेवाला

भ

भोर	(पु.)	– सुबह

म

मधुर	(सं. स्त्री.)	– मीठ, देखे में नीमन
मउअत	(वि.)	– मौत, मरनी, मृत्यु
माह	(सं. पु.)	– महीना, मास
मेहरारू	(सं. स्त्री.)	– जोरू, पत्नी, औरत, मेहरी
मोंढ़ा	(सं. पु.)	– बांस भा बेंत के बनल एगो आसन
मोर	(सं. पु.)	– एक प्रकार के चिरईं
मोरी	(सं. स्त्री.)	– नाली
मोहर बंद	(सं.)	– जे मोहर देके बंद कइल होखे
मुस्मात	(वि.)	– विधवा, जवना औरत के मरद मर गइल होखे

य

यमपुरी	(सं. स्त्री.)	– यम के पुरी भा नगर

र

राष्ट्रीय	(वि.)	– देश संबंधी

ल

ललक	(सं. स्त्री.)	– चाह

लालसा	(सं. स्त्री.)	– अधिक चाह
लाश	(सं. स्त्री.)	– मुरदा
लेखा–जोखा	(सं. पु.)	– हिसाब–किताब

स

संकल्प	(सं. पु.)	– कवनो चीज के बीड़ा उठावल, प्रतिज्ञा कइल
संकोचल	(क्रि.)	– संकोच कइल
संग्राम	(सं. पु.)	– लड़ाई, युद्ध
संघतिया	(सं. पु.)	– दोस्त, इयार
संदेश	(सं. पु.)	– समाचार
संस्कृति	(सं. स्त्री.)	– संस्कार, आचार–व्यवहार
स्तूप	(सं. पु.)	– ऊँचा टीला
सकेत	(वि.)	– संकुचल, तंग
सद्भाव	(सं. पु.)	– मेलजोल
समधी	(सं. पु.)	– बेटी भा बेटा के ससुर
सराहल	(क्रि.)	– बड़ाई कइल
सोहर	(सं. पु.)	– लड़िका के जनम पर होए वाला गीत
सीनाजोरी	(क्रि.)	– बड़जोरी

श

शंखनाद	(प.)	– शंख के आवाज, कवनो चीज शुरु करे के आह्वान

ह

हटहकी	(सं. पु.)	– अनाज के एगो माप (थरूहट में)
हिया	(सं. पु.)	– दिल, हियरा, हृदय